

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सपाठक-पुरातत्त्वाचार्य चिनमिजय मुनि
[समान्य सचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर]

२ . . .

ग्रन्थाङ्क २७

[राजस्थानी-हिन्दी साहित्य-श्रेणी]

राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १

सीची गगेव नीवावतरो दा-पहरो, राजान राउतरो वात-वणाव आदि

. . .

प्रकाशक

राजस्थान राज्य मन्वापित

राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JAIPUR

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित कुछ विशिष्ट ग्रन्थ

संस्कृत साहित्य ग्रन्थ—

१. प्रमाणमञ्जरी—तार्किक-नृत्तामंग-मवंदेवानाथे प्रणीत ।	तीन व्याख्याओं के समनद्धृत ।	मूल्य	६ ००
२. यन्त्रराजरचना—जयपुरनरेश महाराज नयाई जयामह करिना ।	१.७५
३. महर्षिकुलवंभवम्—विद्यावाचस्पति स्व श्रीमधुनूदन योग्य विरचित ।	१०.७५
४. तर्कसंग्रह फकिफा—प० क्षमाकन्वागृत्त ।	३.००
५. कारकमन्वोधोद्योत—प० रभसनन्दिवृत्त ।	१.७५
६. वृत्तिदीपिका—प० मीनिकृष्णभट्टकृत ।	२.००
७. शब्दरत्नप्रदीप—नक्षिप्त मन्वृत शब्दकोष ।	२.००
८. वृष्णागीति—कविमोमनाथ-वृत्त गीतिकाव्य ।	१.७५
९. शृङ्गारहारावलि—हर्षकवि विरचित ।	२ ७५
१०. चक्रवाणिविजयमहाकाव्यम्—प० लक्ष्मीधरभट्ट-रचित ।	३ ५०
११. राजविनोद महाकाव्य—कवि उदयरजविरचित ।	२.२५
१२. नृत्तसंग्रह—नाट्यविषयक पठनीय ग्रन्थ ।	१.७५
१३. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)—महाराणा कुम्भकर्ण प्रणीत ।	३.७५
१४. उक्तिरत्नाकर—पण्डित नाथमुन्दनगणीकृत ।	४.७५
१५. दुर्गापुष्पाञ्जलि—महामहोपाध्याय प दुर्गाप्रसाद द्विवेदी रचित ।	४.२५
१६. कर्णकुनूहलं तथा कृष्णलीलामृत—महाकवि भोवानाथ विरचित ।	१ ५०

राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ—

१. कान्हडदे प्रबन्ध—कवि पद्मनाभ विरचित	मूल्य	१२ २५
२. क्यासरला रासा—मृस्निम-कवि जानकृत ।	..	४ ७५
३. लावारासा—चारणकविया गोपालदानकृत ।	..	३ ७५
४. बांकीदासरी ख्यात—चारणकवि बाकीदासरचित ।	..	५ ५०
५. राजस्थानी साहित्य-संग्रह भाग १. वार्ता संग्रह	..	०२५

राजस्थानी साहित्य-संग्रह

भाग १

खीची गगेव नीवावतरो दो-पहरो, राजान गउतरो वात-वणाव आदि



संपादन-कता

प० नरोत्तमदासजी स्वामी एम ए

अध्ययन

द्वितीया विभाग, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर

★

प्रकाशन कर्ता

सचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर

जयपुर (राजस्थान)

★

[प्रथमावृत्ति, प्रति म० ७५०]

प्रिथमा २०११ }
शाका १९७६ }

मूल्या २०१

{ प्रिस्ता १६५७

मुद्रक—मूल भाग—हनुमान प्रस, जयपुर । भूमिका बहुर आर्ति—जयपुर प्रिठम जण्पुर ।

प्रधान सम्पादकीय वक्तव्य

प्राचीन भारतीय साहित्य में पद्य के मात्र गद्य का भी यथोचित रूप में प्रयोग किया गया है। वेदों, जैनागमों, मम्भृत नाटकों और कथा-ग्रन्थों आदि में गद्य की छटा विशेष द्रष्टव्य है। मम्भृत-साहित्य में पद्यतन्त्र कथासरित्सागर, दशगुमारचरित्, शुकवह्वरि मिहामनवत्तीमी, वैनालपञ्चीमी आदि भी गद्य के अद्भुत उदाहरण हैं। राजस्थानी भाषा में भी गद्य-साहित्य का निर्माण विशेष रूप में हुआ है। हर्नागे की मम्भ्रा में ऐतिहासिक स्यारों, वार्ताएँ और वचनिकाएँ आदि लिखी गई हैं, जिनमें मुख्यतः राजस्थानी गद्य का व्यवहार किया गया है। साथ ही मम्भृत के गद्य-ग्रन्थों के अनुवाद भी प्रचुर मात्रा में राजस्थानी भाषा में किये गये हैं।

राजस्थानी वार्ताओं में राजस्थानी मम्भृति का बड़ा ही अद्भुत चित्रण किया गया है। इन वार्ताओं में राजस्थानी जनता की दिनचर्या, हाट, उपवन, घर-प्राङ्गण, उत्सव, युद्ध, क्रीडा आदि का विस्तृत और सजीव वर्णन मिलता है। राजस्थान और बाहर के ग्रन्थ-भण्डारों में राजस्थानी वार्ताओं के छोटे-बड़े कई संग्रह मिलते हैं। राजस्थान पुरानत्त्वान्वेषण मन्दिर (Rajasthan Oriental Research Institute) के मन्त्रहालय में भी ऐसी वार्ताओं के कई हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त हुए हैं जिनको यथासमय शोध ही मुम्भ्रादिन रूप में प्रकाशित किया जावेगा।

प्रस्तुत संग्रह में तीन वर्णनात्मक राजस्थानी वार्ताओं को प्रकाशित किया जा रहा है। इन वार्ताओं में आदर्श राजपूतों की दिनचर्या का विस्तृत वर्णन मिलता है जिससे राजस्थानी मम्भृति के कई अंगों पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। वार्ताओं का सम्पादन राजस्थान के प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरोत्तमदामजी स्वामी द्वारा हुआ है और प्रारम्भ में राजस्थान के प्रसिद्ध अन्वेषक श्री अग्रचन्दजी नाहटा के दो निवन्ध भी मम्भृति विषय पर प्रकाशित किये गये हैं जिनमें पुम्भक की उपयोगिता बढ़ गई है।

जयपुर,
ता० १० अगस्त, १९५६ ई०

}

शुनि जिनविजय
सामान्य सचालक,
राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर



निवेदन

प्रस्तुत ग्रंथ में प्राचीन राजस्थानी साहित्य की तीन महत्वपूर्ण रचनाओं का संग्रह किया गया है। इनमें प्रथम का अर्थ है 'तीर्थ गंगेय नीलाचलरो दोपहरो' और रामदास बरारवतरी कासडीरी का बहूत प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचनाओं रही है और राजस्थानी कहानी संग्रहों में स्थान स्थान पर उनकी प्रतिष्ठा मिलती है।

'तीर्थ गंगेय नीलाचलरो दोपहरो' एक सुन्दर गद्य-काव्य है जिसके काव्यमय श्लोकों की शृंखला निराली है और सहृदय को प्रभावित किया बिना नहीं रह सकता। इसमें तीर्थ-गंगेय नीलाचल व पुत्र गंगेय या गंगा की और उसके साथियों की एक दिन की दिनचर्या का वर्णन है। दोपहर का वर्णन प्रधान होने से इसका नाम दोपहरो या डेपहरो है। उत्तर मध्यकालीन राजपूत सामंत के जीवन और रत्न सदन पर इससे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

दूसरी रचना में मारवाड़ के राज रिटमल (रणमल) के पुत्र बरा के पुत्र रामदास राठीर का वर्णन है। रामदास ध्यान समय में नामो बोर हुआ। इस 'वात' में उसके १६ विद्या और ८४ आगहियों का उल्लेख किया गया है। अन्त में उसके पराक्रम की एक कथा भी दी गई है। 'कासडीरी' का अर्थ है 'न करने की मानता' (मनोनी) य अथवा शपथ या शौच से है। रामदास ने मन चौरागी यानों का न करने की मानता ले रखी थी। इन विषयों तथा आगहियों से राजपूतों के जीवन के आदर्श का चित्रण हो जाता है।

तीसरी रचना 'राजान गजतरो वात-बलाव' में विविध प्रकार के विविध अवतारोपयोगी कहानों का विस्तृत संग्रह है। कथाओं का कहना वाले (और लक्षण) कथा कहते समय स्थान स्थान पर एम श्लोकों का उपयोग करते आये हैं। जनों का प्राचीन आगम ग्रंथों में इस प्रकार के सुन्दर वर्णन आये हैं। मणिल विद्वान् ज्योतिरी-वर न पण्डित काताप्दी में वर्णन रत्नाकर नामक ग्रंथ की रचना का अन्त में कथा के विविध प्रयोग और अवतारों का वर्णन संगृहीत है। सस्कृत के कवि गिदा नामक ग्रंथ में भी काव्य का विविध प्रयोग और विषय का वर्णन में बिन बिन बातों का वर्णन करना चाहिए यह बताया गया है। राजस्थानी में काविलाम नामक ग्रंथक संग्रह अथवा कथाकाव्य संग्रह है जिसमें विविध प्रयोग और विविध अवतारों का वर्णन की संकलित किया गया। त्रि-मालिक मूरि का पृथ्वीशद चरित्र अथवा नाम काविलाम (सं. १४७० का संग्रह) इस प्रकार का सुन्दर कथा-काव्य है जिसका विविध वर्णन यहाँ ही मायपूर्ण है। 'वात-बलाव' उनी परंपरा की रचना है। रचना प्राचीन नहीं है, पर वर्णन प्राचीन है। आनु-वर्णन में महाकवि पुर्वीराज राठीर की त्रिमल अकमलोगी शक्ति का प्रभाव है जो शक्ति के शक्तों का वर्णनवाण भाषी जान पड़ता है। 'दोपहरो' का वर्णन के नाम भी उल्लेख पर्याप्त काव्य है।

इस 'वात बलाव' के वर्णन संग्रह में उक्त काव्य ग्रंथों का वर्णन-अपहर्ष में एक विवरण है। उन वर्णनों में अर्थ वर्णनों का वर्णन संग्रह-अपहर्ष है और वात बलाव में वर्णन एक वर्णन कथा के वर्णन में वर्णन का वर्णन है, जिसमें यह वर्णन वर्णनों का संग्रह न रह कर एक सुन्दर कथा काव्य बन गया है।

‘दोपहरो’ का संपादन बहुत वर्ष पूर्व बीकानेर के अनूप-संस्कृत पुस्तकालय के एक कहानी-संग्रह की प्रति के आधार पर किया गया था। बाद में दूसरी प्रतिया भी देखने में आई और उनमें यत्र-तत्र पाठभेद भी दिखाई पड़े पर उन पाठभेदों को मसूदा करने का अवसर नहीं आया। इसी प्रकार ‘वात-वणाव’ का संपादन अपने संग्रह की प्रति के आधार पर करना शरम दिया था पर यह कार्य दो-ही-चार पृष्ठों तक बट सका। मेरे प्रिय दिप्य बीनानाथ त्रयी एम० ए० ने जो उन दिनों अनूप संस्कृत पुस्तकालय में राजस्थानी-ग्रंथिस्टेंट का कार्य कर रहे थे, उनके बाकी अन्व की प्रतिनिधि तैयार कर डाली। जब मुनि श्रीजिनविजयजी महाराज बीकानेर पधारे तो उनमें इन रचनाओं को देखा और इनको राजस्थान पुरातत्व-मंदिर-अधिसाला में प्रकाशित करने के लिये मांग लिया। ‘वैरावत रामदासरी आखंडीरी वात’ की प्रतिनिधि श्रीअगरचंद नाहटा ने अपने संग्रहालय की एक हस्तलिखित प्रति से तैयार करवायी थी।

‘दोपहरो’ और ‘आखंडी’ की प्रतिया कई स्थानों पर मिलती हैं तथा ‘वात वणाव’ की एक अन्य प्रति भी राजस्थान-पुरातत्व-मंदिर के संग्रह में बाद में निबल आई। अच्छा होता कि इन रचनाओं को प्राप्य प्रतिओं के आधार पर संपादित करके पाठ भेदों के साथ प्रकाशित किया जाता। पर यह कार्य समय-मापेक्ष था और उधर पुरातत्व मंदिर का आर्थिक वर्ष समाप्त हो रहा था। इसलिये यही उचित समझा गया कि रचनाएँ जिन रूप में हैं उनी रूप में अभी छाप दी जायँ जिनसे राजस्थानी साहित्य के ये विविध रूप एक बार साहित्य-प्रेमियों के सामने आ जायँ।

राजस्थानी गद्यकाव्यों और वर्णन-संग्रहों की परंपरा का नक्षिण परिचय लगाने के लिये राजस्थान के सुप्रसिद्ध शोधकर्ता विद्वान श्रीअगरचंद नाहटा के दो निबंधों को उद्धृत किया जा रहा है। इनको उद्धृत करने की अनुमति देने के लिये मैं श्रीनाहटाजी का अत्यंत आभारी हूँ।

—नरोत्तमदास स्वामी

राजस्थानी गद्यकाव्य की परम्परा

भारतीय प्राचीन ग्रंथों में कवि की कृति को काव्य माना गया है और कवि को कान्तदर्शी, मेधावी और पंडित कहा गया है। पीछे से 'कवि' शब्द छन्दोबद्ध रचना करने वाले विद्वानों के लिए रूढ़ हो गया और छन्दोबद्ध रचना 'काव्य' के नाम से सम्बोधित की जाने लगी। प्राचीन विद्वानों ने 'काव्य' शब्द की व्याख्या भिन्न भिन्न प्रकार से की है। भामह और रघुट ने 'गद्यापी संहिता काव्यम्', "गद्यापी काव्यम्" अर्थात् शब्द और अर्थ मिल कर काव्य होता है, ऐसा कहा है। किसी विद्वान ने अलङ्कारयुक्त शब्द और अर्थ को ही काव्य माना है। विश्वनाथ कविराज ने "वाक्य रसात्मक काव्यम्" काव्य का लक्षण बताया है अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है। मुझे यह व्याख्या बहुत ही उपयुक्त और सुंदर लगती है। काव्य के दृश्य और श्रवण, दो प्रधान भेद हैं। नाटका का दृश्य काव्य कहा जाता है और श्रवण काव्य के गद्य, पद्य और मिश्र ये तीन भेद किये गये हैं। पद्यकाव्य छन्दोबद्ध होता है और उसके महाकाव्य, खण्डकाव्य और कोपकाव्य ये तीन भेद माने गये हैं। महाकाव्य और खण्डकाव्य तो प्रसिद्ध ही हैं। काव्यकाव्य में स्तोत्र और सुभाषित संग्रह को माना गया है। गद्यकाव्य में छन्द का बंधन नहीं रहता, अर्थ सब काव्यगुण पाये जाते हैं। रामन ने गद्य तीन प्रकार का बताया है—वृत्तगद्य, उत्कलिकाप्राय और चूणक। साहित्य अकादमी ने मुक्तक नामक चौथा भेद भी माना है। जिस गद्य में किसी छन्द के पाद व पाठ्य मिलते हैं उसे वृत्तगद्य, लम्बे लम्बे समास वाल गद्य को उत्कलिकाप्राय, छोटे-छोटे समस्तपदयुक्त गद्य को चूणक और समस्त पदां के अभाव वाल गद्य को मुक्तक के नाम से सम्बोधित किया गया है।

गद्य काव्य के कथा और आख्यायिका, दो भेद भी हैं। बादम्बरी को कथा व हृषिकेश की आख्यायिका के नाम से सम्बोधित किया गया है। मिश्र काव्य में गद्य और पद्य का मिश्रण होता है। इनके चम्पू, विरुद और वरम्भव ये तीन भेद हैं। वृत्तनात्मक मिश्रकाव्य का चम्पू गद्य और पद्य में की गयी राजस्तुति को विष्णु एवं अनक भाग्य युक्त मिश्र काव्य को वरम्भव की संज्ञा दी गयी है। गद्य की अपेक्षा पद्य सरलता से कठिन ही बनता है और अधिक समय तक स्मरण रह सकता है, अतः इसकी उपयोगिता व स्वाभाविक अधिक है। इस सुविधा को ध्यान में रखते हुए भारतीय विद्वानों ने शास्त्रीय, वचक ज्योतिष आदि विषयों के उपयोगी अथ पद्यबद्ध ही अधिक बनाये हैं। पद्य में कल्पना की उड़ान लयसरगता मनोहरता व श्रवणमुग्धता होने से अंधकारों का ध्यान उस ओर अधिक जाना स्वाभाविक था। इन कारणों से अनेक रूप भारतीय साहित्य पद्य रूप में अधिक मिलता है। मूद्रण-युग के प्रसार के साथ-साथ गद्य-साहित्य निरंतर अभिवर्द्धित की प्राप्त हुआ है। पूर्व सोच-भाषाओं में पद्य रचनाएँ बहुत ही पाई मिलती हैं। हिन्दी भाषा में तो प्राचीन गद्य राजस्थानी और गुजराती भाषा की अपेक्षा भी उत्तम है।

जैसा कि ऊपर बताया गया है रमात्मक काव्यगुणोपेत विगिष्ट शब्दसचयम्प, पर छन्दों के बन्धन से रहित रचना गद्यकाव्य के नाम से अभिहित है। नाधारण गद्य को इगमे सम्मिलित नहीं किया जा सकता। गद्य होते हुए भी जिसके पढ़ने और सुनने में पद्य का-सा आनन्द या रग मिले वही गद्यकाव्य है।

भारतीय साहित्य में गद्यकाव्य का विकास पद्यकाव्य के साथ-साथ ही हुआ प्रतीत होता है, अतः उसकी प्राचीनता पद्य की अपेक्षा कम नहीं है। वेदों में कहीं-कहीं वाच्य वचने ही सुन्दर और पद्य का-सा आनन्द देने वाले मिलते हैं। जैनागमों और महाभारत के समय में तो गद्य को व्यवस्थित रूप मिल चुका विदित होता है। भास और कालिदास आदि के नाटकों में गद्यकाव्य की सुन्दर झलक पायी जाती है। प्राकृत भाषा के कई प्राचीन जैनग्रन्थों में कहीं-कहीं गद्य-लेखन में शब्द-योजना की सुन्दर छटा देखते वन्दते हैं। ईस्वी पूर्व दूसरी से छठी शताब्दी तक के गिना-लेखों के गद्य में भी काव्य का-सा आनन्द मिलता है, जिसे गद्यकाव्य का पूर्वरूप कहा जा सकता है।

गद्यकाव्य की नज़ा दी जा सके ऐसे ग्रन्थों में दण्डी कवि का दशकुमारचरित सर्वप्रथम है, जिसका समय ईसा की छठी शताब्दी के लगभग का है। इस चरित की भाषा सरल एवं ललित है। इसके पीछे मुच्यु की वासवदत्ता की कथा आती है। कवि के कथनानुसार उसके प्रति अक्षर में श्लेष है। तत्परवर्ती गद्यकाव्य वाणभट्ट की कादम्बरी और हर्ष चरित है। कादम्बरी विश्व-साहित्य में उल्लेखनीय गद्यकाव्य है। इसकी कथा छोटी-सी है, पर वर्णन के विस्तार से वह बहुत विस्तृत हो गयी है अर्थात् उसमें कथा गौण और वर्णन प्रधान है। ऐसा ही अन्य गद्यकाव्य, जिसे इसी के टक्कर का कह सकते हैं, जैन कवि धनपाल की तिलकमजरी की कथा है। धनपाल महाराजा भोज के सभा-पंडित थे। पुरातत्त्वाचार्य मुनि जिनविजयजी ने इन तिलकमजरी के सम्बन्ध में लिखा है—“समस्त संस्कृत साहित्य के अनन्त ग्रन्थ-संग्रह में वाण की कादम्बरी के सिवाय इस कथा की तुलना में खडा हो सके, ऐसा कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। वाण पुरोगामी है, उसकी कादम्बरी की प्रेरणा से ही तिलकमजरी रची गयी है पर यह नि सन्देह कहा जा सकता है कि धनपाल की प्रतिभा वाण से चढती हुई न हो तो उतरती हुई भी नहीं है, अतः पुरोगामी ज्येष्ठ बन्धु होने पर भी गुण-वर्म की अपेक्षा दोनों गद्य महाकवि समान आसन पर बैठाने के योग्य है। धनपाल का जीवन भी वाण के जैसा ही गौरवशाली रहा है। इन कथन में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है।” तिलकमजरी के बाद गद्यकाव्य के रूप में दिग्म्बर जैन कवि वादीभर्मिह का गद्यचिन्ता-मणि ग्रन्थ उल्लेखनीय है। इसके बाद के लगभग चार सौ वर्षों में कोई उल्लेखनीय गद्यकाव्य नहीं है। वैसे फुटकर वर्णन गद्यकाव्य की झलक अवश्य दिखा जाते हैं। पन्द्रहवीं शती में वामन भट्ट ने ‘वेम भूपाल चरित’ नामक गद्यकाव्य बनाया। इसका पद-विन्यास, माधुर्य, सरनालकार-योजना, विप्रलभ शृंगार वाण के मद्दग मानें गये हैं। भाषा सरल और मधुर है। कवि ने अपने लिए ‘गद्यकवि सार्वभौम’ विशेषण प्रयुक्त किया है।

भारतीय गद्यकाव्य की परम्परा का दिग्दर्शन कराने के लिए ऊपर कुछ संस्कृत गद्यकाव्यों का उल्लेख करना आवश्यक समझा गया। अब मूल विषय पर प्रकाश डाला जाता है।

हिन्दी भाषा में गद्यकाव्य की परम्परा प्राचीन नहीं दिखाई देती। वैसे हिन्दी की गद्य-रचना ही सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से पूर्व की नहीं मिलती। गोरखनाथ की कुछ रचनाएँ गद्य में लिखी बतायी जाती हैं। इन रचनाओं की भाषा को तेरहवीं से पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य की माना गया है, पर उसके लिए कोई सबल आधार नहीं प्रतीत होता, इन रचनाओं का गोरखनाथ की

कतिपय होना सम्भव नहीं जान पड़ता । किसी प्रसिद्ध साम्प्रदायिक नेता या मतप्रवर्तक के अनुयायी स्वयं ग्रंथ बना कर नेता के नाम से या मतप्रवर्तक के नाम से प्रसिद्ध करते रहते हैं । गोरखनाथ के इन ग्रंथों की हस्तलिखित प्रतियाँ अद्यावधि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व की प्राप्त नहीं हैं । उनके ग्रंथ पद्य-ग्रंथों की प्रतियाँ भी अभी तक सत्रहवीं शताब्दी से पहल की भेरे अवलोकन में नहीं आयीं । अतः जब तक उनकी हिन्दी गद्य रचनाओं की इससे पूर्ववर्ती प्राचीन हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त न हो जाएँ, वल्लभ सम्प्रदाय के प्राचीन ब्रजभाषा के गद्य-ग्रंथों को ही हिन्दी के प्राचीन गद्य ग्रंथ कहा जा सकता है । श्रीकानर राज्य की अनूप-संस्कृत लाइब्रेरी में कुतुबुद्दीनकी बात सवत् १६३३ में लिखित प्राप्त है जिसका गद्य विशय रूप से उल्लेखनीय है ।

हिन्दी की अपेक्षा राजस्थानी और गुजराती गद्य अधिका प्राचीन मिलता है । जैन भडार की साठपत्री प्रतियों में चौदहवीं शताब्दी का गद्य पाया जाता है । सवत् १३३६ के सप्रामसिंह-रचित 'बालगिष्ठा' ग्रंथ में तत्कालीन गद्य के उदाहरण पाये जाते हैं । यह संस्कृत व्याकरण का ग्रंथ है, जिसमें समझाने के लिए राजस्थानी का प्रयोग किया गया है । पंद्रहवीं शताब्दी में पद्मचन्द्र चरित' या वाग्विलास नामक विशिष्ट ग्रंथ मिलता है, जो राजस्थानी गद्यकाव्य का उत्कृष्ट उदाहरण है । इस गद्य से बखानात्मक गद्य शैली की यह परिपक्वता का पता चलता है । इसमें पूर्व भी कुछ ऐसे ग्रंथ बने होंगे, ऐसी सम्भावना होती है, पर अब वे प्राप्त नहीं हैं । इसके बाद तुकान्त गद्य वाले और बखानात्मक विशिष्ट गद्य ग्रंथ राजस्थान में निरन्तर बनते रहे हैं जिनका संक्षिप्त परिचय कराना ही प्रस्तुत लेख का उद्देश्य है । संस्कृत ग्रंथों में गद्यकाव्य के जो लक्षण दिये हुए हैं, उनमें समय समय पर रचयिताओं की रचि के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है । राजस्थानी में गद्यकाव्य विशेष कहा गया है और इनमें बितने प्रकार हैं, यह जान लेना परमावश्यक है ।

राजस्थानी के सुप्रसिद्ध छन्दग्रंथ 'रघुनाथ स्तव' में प्रसिद्ध छन्दो एवं गीता के लगभग एवं उदाहरण देने के पश्चात् गद्य के दो भेद दिये हैं—दवावत और वचनिका । इन दोनों के भा दो दो भाग किये गये हैं—दवावत के शुद्धवच्य और गद्दवच्य, और वचनिका के पदवच्य और गदवच्य । यथा—

तब मछ कवि हूँ तिके, दवावत विष दोय ।

एक शुद्धवच्य होत है एक गद्दवच्य होय ॥

इसकी व्याख्या करते हुए आधुनिक टीकाकार श्रीमहतावचन्द्र खारड लिखते हैं—“दवावत कोई छन्द नहीं है जिसमें मात्राओं अथवा गणों का विचार हो । यह अर्थानुप्रास रूप गद्य ज्ञान है । अर्थानुप्रास, मध्यानुप्रास और किसी प्रकार का सानुप्रास या समक लिया हुआ गद्य का प्रकार है । यह संस्कृत, प्राकृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी भाषा में भी अनेक कवियों और ग्रंथकारों द्वारा प्रयोग में लाया हुआ मालूम होता है । आधुनिक लल्लूजीनाल के 'प्रेमसागर' आदि ग्रंथों में तथा उर्दू के 'बहारखैबिजा', 'नोबतन' आदि ग्रंथों में तथा फारसी के ग्रंथों में देखा जाता है । यह दवावत दो प्रकार की होती है—एक शुद्धवच्य अर्थात् पदवच्य, जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरी गद्दवच्य जिसमें अनुप्रास नहीं मिलता है ।

पदवच्य का उदाहरण—

“प्रथम ही अयोध्या नगर गिराया बगाव,
बार जोवन तो चौड़े, सोल जोवनकी धाव,

चोमरफके फेलाव चौमठ जोजनके फिराय,
तिसके तने रगिता सरिचूके घाट,
अत उतावलमं वहे, चोमर वामोके पाट ।”

गह्वन्ध का उदाहरण—

हाथियों के हलके सभू गणाते गोलें, अरापत के माथी भद्रजानी के टोने । अर देह के दिग्गज
विन्व्याचल के मुजाव, रंग-रग चित्रे सु उ उठके वणाव । भून की जन्म वीर पंटे के ठणके, बादलों
की जगमपा मेरे मेरे भोरो की भकी भणके । वन रुदमूके नगर भारी वनक की हुंग, जवाहर के
जेहर दीपमाला की रन ।

वचनिका के दो प्रकार

“दोय भेद वचनकारा एक पदवध दूजी गदवध, मू पदवध दोय भेद एक तो वारता दूजी
वारता में मोहरा रावणा । दोय गदवध वचनका है एर तो आठ मात्रागे पद हुवं, दूजी गदवध
में बीसमात्रागे पद हुवं—”

टीकाकार ने उसके विशेष विवरण में लिखा है कि ये वचनिकाएँ द्वावत के ही भेद मालूम
होती हैं । इनना-ना भेद मालूम होता है कि वचनिका कुछ लकी और विन्तृत होती है और
‘गदवध’ में तो कई छन्दों के जोटे अर्थात् युग्म वचनिका रूप में जुड़ने लगे जाते हैं ।

इनके बाद पद्वन्ध का जो उदाहरण दिया गया है, उपयत्न नहीं मानूम देता । हमारे
उदाहरण का ही कुछ अंश यहाँ दिया जाता है—

“निण सभा में श्रीमुखवाणी, तिनमणजी तारीफ आणी ।
आतो साराही जाए पाई, उण वल रावणमू जीनां ने सीता आई ॥”

गह्वन्ध वचनिका —

“चक्री विचाल, रघुवर विमान, जंपे जन्वर, मुण भरव मूर,
हरामत एह, इण गुण अछेह, सेवा गुमेव किनी वपेस ।
वे कहुँ वरण, मुण विगत सैण, पचवटी प्रीत रहतां नुरीत,
उण ठाम आय अवसाण पाय, आनुर अभीत तिण हरी नीत ।”

गह्वद्ध वचनिका के हमारे भेद को सितोको की मजा दी है—

“बोले सीतापत इसडी जी वाणी, मुग्गर नागां ने लगे मुहाणी ।
सैसाजल हरामत जिम ही मरसाई, वीरां अवचारी कीधी बटाई ॥”

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि संस्कृत गद्यकाव्यों की अपेक्षा राजस्थानी गद्यकाव्य की
व्याख्या में अन्तर है । राजस्थानी गद्यकाव्य में तुक मिलाने का ध्यान रखा गया है । हिन्दी में
भी कविवर बनारसीदासजी आदि की वचनिका-मगत रचनाएँ मिलती हैं, पर उनमें तुक नहीं
मिलती । साधारण गद्य और विवेचनात्मक टीका ही हिन्दी में वचनिका मानी गयी है । राजस्थानी
में वह तुकान्त-प्रधान है । १

१ रघुनाथरूपक में वचनिका और द्वावत के जो भेद बताये गये हैं उनके नामों में थोडा
उलट-फेर हो गया है, गद्यवद्ध को पद्यवद्ध और पद्यवद्ध को गद्यवद्ध कह दिया गया है । टीकाकार
ने जो टिप्पणियाँ दी हैं वे भी भ्रातिपूर्ण हैं । शुद्ध विवेचन इस प्रकार है—

वचनिका के दो भेद हैं—(क) पद्यवद्ध (या पदवद्ध), जिसमें मात्राओं का नियम होता
है । इसके दो भेद होते हैं—(१) जिसमें आठ-आठ मात्राओं के तुक-युक्त गद्य-खंड हो, और

दवावत और वचनिका सनक रचनाएँ तो राजस्थानी भाषा में भी अधिक नहीं मिलती, अभी तक जिनलामसूरि और नरसिंहदास गोडरी 'दवावत' ये दो दवावतें और 'अचलदास खीची की वचनिका' और 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' ये दो ग्रंथ ही मुझे ज्ञात हैं। इनमें से 'रतन महेसदासोतरी वचनिका' एल० पी० तेसीतरी ने सम्पादित कर के रायल एजिप्टिक सोसाइटी, बगाल से प्रकाशित की थी। यह सीने रचनाएँ अग्रप्रकाशित हैं। 'जिनलामसूरिकी दवावत' की भाषा हिन्दी है। सलोका-सज्ञक छोट-छोटे देवी-देवताओं की गुण वर्णनात्मक रचनाएँ पचासों की संख्या में उपलब्ध हैं। राजस्थानी गद्य को कहीं-कहीं वार्ता या वार्तिक सज्ञा भी दी हुई मिलती है। वार्तिक के रूप में 'मिस्त्रधशात्पति काव्य' नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित हो चुका है। 'कैहर प्रकाश' ग्रंथ में तुकान्त गद्य की सज्ञा वार्ता पाई जाती है।

जसा कि पूर्व में कहा जा चुका है सब प्रथम राजस्थानी गद्यकाव्य 'पृथ्वीचन्द चरित्र' है जिसका अक्षर नाम वाग्बिलास है। इसकी रचना सन् १५७८ में जनाबाय भाणवयसुर सूरि ने की है। इसमें पृथ्वीचन्द राजा की कथा तो बहुत छोटी सी है, पर वर्णन का विस्तार अधिक है। ग्रंथकार ने कोई भी प्रसंग बिना वर्णन या विवरण के राली नहीं छोड़ा। विवरणात्मक नामों के अतिरिक्त प्रायः सम्पूर्ण ग्रंथ तुकान्त गद्य में लिखा गया है, जिसे पढ़ते हुए काव्य का सा आनन्द मिलता है। उदाहरणार्थ दो एक वर्णन यहाँ दिये जा रहे हैं।

भरहट्टदेश वर्णन—

'जिण देसि ग्राम अत्यन्त अमिराम। भलाई नगर जिहाँ न मागीयई कर। दुग, जिस्वाँ हुई स्वयं। धाम, न नीपजइ सामाय। धागर, सोना रूपा तणा सागर। जइ देस माहि नदी बहइ, सोक सुपइ निवहइ। इसिउ देश पुण्य तणउ नियेग गरुअउ प्रदेश। तिणि देसि पहठणपुर पाठण वत्तइ, जिहाँ अथाय न वत्तई। जीणइ नगरि कउसीसे करी सणावार, पापलि पोढउ प्रावार उणार प्रतोली द्वार। पाताल भणो पाई, महाकाय पाई, समुद्र जेहेनु भाई। जे लिइ कलास पवत सिउ वाद, इस्या सवन देव तणा प्रासाद। करइ उल्लास, लक्षेश्वरी काटीध्वज तणा आवास। आनन्द भन, गरउ राजभवन। उपारी अपइ सुवणुमय दइ, ध्वजपट लहलहई प्रचइ।

हिथ हूउ प्रमात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अघकारआत, अट्टय नक्षत्र पटल गगन उज्ज्वल नि शब्द घूक कुल, निमल दिम्णडल, आधित पूर्वाचल, हूउ रविमडल, विहसइ कमल, विस्तरइ परिमल, वायु वाइ शीतल प्रसन्न महीतल, जिस्वाँ रातां पारेवा तणा चरण, तिस्वाँ विस्तरइ सून तणा किरण।

(२) जिसमें २०-२० मात्राओं के तुक युक्त गद्यखंड हों।-(ख) गद्यबद्ध—जिसमें मात्राओं का नियम नहीं होता। इसके भी दो भेद होते हैं—(३) धारताञ्ज या माधारण गद्य (४) तुक-युक्त गद्य।

दवावत के भी इसी प्रकार दो भेद होते हैं—(१) पद्यबद्ध (या पद्यबद्ध)—इसमें २४-२४ मात्राओं के तुक युक्त गद्य खंड होते हैं। (२) गद्यबद्ध—इसमें तुक युक्त गद्य खंड होते हैं, मात्राओं का नियम नहीं होता।

दवावत और वचनिका में क्या अंतर है? यह अभी तक समझ में नहीं आ पाया है। वचनिका के अक्षरों में और दवावत के द्वितीय भेद में कोई अंतर नहीं देख पड़ता। उपलब्ध दवावतों की भाषा राजस्थानी से प्रभावित सड़ी बोली हिंदी है जब कि वचनिकाओं की राजस्थानी। कहीं कहीं तुकान्त गद्य के लिये भी वार्ता, वार्ता या वार्तिक नाम का प्रयोग देखा जाता है।

सहोत्सव वर्णन—

“अलकरिउ प्राकार, शृगारिया प्रतोली द्वार । मन्त्र अति मन्त्र तणी रचना हुई, स्वर्ग पुरी तणी गोभा लई । ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल बहुकई । नाचड पात्र, राज भवनि आवड अक्षत पात्र । सोमाई भगता आवई छात्र, लोक अलकरइं आमरणि गात्र, उत्सव करिवा एहड ज वात । तीरिा वेला नऊइ कोरण, वाधीयईं तोरण, वाधीयईं वंदरवाल, उत्सव त्रिगाल । गुल घीउ लाहीयईं, मन ऊमाहीयईं । ईण युक्ति जन्म महोत्सव हुआ ।”

इस ग्रन्थ के चार वर्ष बाद ही जिनवर्द्धनगरि ने “तपो गच्छ गुर्वावली” लिखी उसमें भी पद्यानुकारि गद्य विशेष रूप से मिलता है । यहाँ उससे थोड़ा-सा उद्धरण दिया जाता है—

“जिम देव माहि इन्द्र, जिम ज्योतिश्चक्र माहि चन्द्र,
जिम वृक्ष माहि कल्पद्रुम, जिम रक्त वस्तु माहि विद्रुम,
जिम नरेन्द्र माहे राम, जिम रूपवंत माहे काम,
जिम स्त्री माहे रम्भा, जिम वादित्र माहे भभा,
जिम सती माहि सीता, जिम स्त्री माहि गीता,
जिम साहसीक माहि विक्रमादित्य, जिम ब्रह्मगण माहि आदित्य,
जिम रत्न माहि चित्तामणि, जिम आभरण माहि चूडामणि,
जिम पर्वत माहि मेरु भूधर, जिम गजेन्द्र माहि ऐरावण सिन्धु,
जिम रस माहि घृत, जिम मधुर वस्तु माहि अमृत,
तिम साप्रति कालि, सकल गच्छन्तरालि,
ज्ञानि विज्ञानि तपि जपि शमि दमि सयमि करी अतुच्छ,
ए श्री तपोगच्छ, आचन्द्रार्क जयवतउ वर्तइ ।”

इस ग्रन्थ के तीन वर्ष बाद स० १४८५ में हीरानन्द सूरि द्वारा रचित ‘वस्तुपाल त्रेजपाल रास’ में निम्नोक्त प्रकार का गद्य आया है—

इसउ एक श्री शत्रुञ्जय तरणउ विचारु महिमा नउ भण्डारु मन्त्रीव्वर मन माहि जाणी उत्तरग आणी । यात्रा उपरि उद्यम कीधउ, पुण्य प्रसादन नउ मनोरथ सिधउ ॥ ६ ॥

शिवदाम-रचित ‘अचलदास खीचीकी वचनिका’ का रचना-काल १५वीं शताब्दी माना जाता है । उसमें पद्य के साथ-साथ वात रूप गद्य पाया जाता है । यद्यपि यह सर्वत्र तुकान्त नहीं है, फिर भी वचनिका-संज्ञक सबसे प्राचीन रचना यही है । उदाहरण—

“पगि पगि पउलि पउलि हस्तीकी गज-घटा, स्त्री ऊपरि सात-सात सइ धनक-धर सांवाठ । सात-सात ओलि पाडककी बइठी, सात-सात ओलि पाडककी उठी । खेडा उडण मुद फरफरी चुहेंचकी ठाँइ ठाँइ ठररी डमी एक त्यापट उडि चत्र दिसी पडी, तिण वाजि तकड निनादि घर आकास चडहडी । वाप वाप हो ! धारा आरम्भ पारम्भ लागि गठ लेयण हार, किना वाप वाप हो ! धारा सन तेज अहेंकार, राइ दुग राखण हार ।”

१६वीं शताब्दी में लिखित एक विविष्ट वर्णनात्मक जैन ग्रन्थे जैसलमेर के ‘जैन-भण्डार’ से अपूर्ण प्राप्त हुआ है । उसका नाम हारिये में ‘मुक्कलानुप्रास’ लिखा हुआ है । उसके कुछ उद्धरण में अपने वर्णनात्मक ‘राजस्थानी गद्य ग्रन्थ’ शीर्षक लेख में दिये हैं । यहाँ उससे उदाहरणार्थ श्लोक का वर्णन दिया जा रहा है—

“महा विभूत उभालत, भाव्यो उन्हालत ।
 लूय वाजइ, वान पापडि दामइ ।
 भाभ्रुमां वलइ, हमाचलना शिखर गलइ,
 निवाणो खुटइ नीर, पहिरइ भाय्या चौर ।
 एवढऊ ताप गाढउ भावइ करवउ टाढउ ।
 वाइ वाजइ प्रमल उढइ धूलिना पटल ।
 सीयालइ हुति माटी रात्र, ते नाही थई रात्रि
 मूय आपण पइ तापइ, जगत्र सतापइ,
 जे जीय थल चरइ, तहि जलासय भ्रुसुरइ”

यह ग्रन्थ बर्णनों का सुन्दर संग्रह—ग्रंथ है । सम्भवत इसकी रचना १५वीं सदी के अन्त या १६वीं सदी के प्रारम्भ में हुई है । पूरे प्रति मिनन पर इसका महत्व और भी बढ़ जायगा ।

१६वीं शताब्दी की अन्य दो रचनाएँ ‘राजस्थानी’ भाग २ में प्रकाशित की गई हैं । इनका भी थोड़ा सा उद्धरण नीचे दिया जाता है—

“रायां महि बडउ राउ श्री सातल जिणइ मालविया सुरताण तणउ दल, भांजी कीधउ तल्ल ।
 खुदाई—खुदाई तोव तोव करतउ उठउ जातउ गणउ धाठउ मालहाना हिरण सणी परित्राठउ ।
 धणी गालइ घाली यदि छाडावी रेल रहावी, खाइइ जइम भगावी नव कोटो माफ्याडि भली
 मालवी । मोटउ साहम कीधउ, बडउ पवाडउ सीधउ ।

“श्रीकरणराय रिणमत्तानी, तइ कपाया सेन सुरतानी । तई हस—नद परि निवेडया दध
 मइ पाणी, मुकांवी गृह करि कहाणी ।

‘जिगइ टाकुरि प्रवसक महोत्सव कराव्या सणिया तोरण बघाया, बदरवालि ठाम—ठाम
 सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणिए परि वादिवा भाव्या कुएणी जो तस्या बहिमइ कल्होण, कुण ही
 पल्लाण्या भासण होडा, केइ करहि घडी दइ दह गिसि द्रोडा, केइ मुनि माणइ तयोम
 लवग डोडा ।

‘तिमरी भाविद्या, पदसारा मोटइ भंडाण कराविद्या, जागी डोल भातरि सणि यादिण
 वजाविद्या । विहु पास पटकूल तणा नेजा सहजाविद्या पणि—पणि खेला नचाविद्या सणिया तारण
 बंधाविद्या । गात गान कीधा, पून कलस सूहव तिरि दीधा, भला मागतिक कीया । धरि—परि गूडो
 उछली, श्री सघतणी पूमी रली ।’

१७वीं शताब्दी के अन्ततमक गद्य के दो संग्रहों की प्रतियाँ मिलती हैं जिनके कुछ उद्धरण
 अपने ग्रन्थ लय में दे चुका हूँ । बर्णन बड़े सुन्दर हैं । सत विस्तारों के भय से यहाँ हम शताब्दी
 की अन्य दो रचनाओं के उद्धरण दे करके ही सतोष करना पड़ता है । पहली रचना ‘कुनवरीन
 सहसादकी बात’ है । उसकी १७वीं शताब्दी की विविध प्रति अन्तःसम्बन्धित पुस्तकालय में उपलब्ध
 है । हिन्दी गद्य के प्राचीन रूप की जानकारी के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

कुनवरीन साहिजादरी वारता—

‘पाणि—अथ कुनवरीन साहिजादरी वारता तिम्यत ।

बडा एक पानिस्थाह । जिसका नाम मदन स्याह । एक मांस्य धांला । जिसका साहिजाद
 दाना । मोज दरियाव सीर । जिगव सहरमें बस दान गमद प्रकीर । जिगवी भोरतना नाम

मीजूम खातू । सदा वरतका नेम चलातू । जो ही फकीर भावै । तिसकुं खाँणा खुलावै । एक रोज़ इक दीवान फकीर आया । दावल दान घराँ न पाया ।

अन्त—बेटे बाप विसराया, भाई बीसा रेह ।

सूर्राँ पुर्राँ गल्लडी, माँगण चीता रेह ॥१०७॥

ऐसा कुतवदीन साहजादा दिल्ली बीच पिरोसाह पातस्याहका साहजादा भया । दावलदान फकीरकी लडकी साहिवाँसे आसिक रह्या । बहुत दिना प्रीत लागी । दुख पीड आपदा सहू भागी । पीरोसाहिका तखत पाया साहजादा साह कहाया । यह सिफन कुतवदीन साहजादेको पढै, बहुत ही वजन सुखसे बढै । यह बात गाहजुगमे रहि । डढणीने जोड कर कही ।”

दूसरी रचना राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि समयसुन्दर रचित ‘भोजन विच्छित्ति’ नामक है । ‘कल्प-सूत्र’ की टीका मे, महावीर के जन्म के पश्चात् कुटुम्बी जनों को जो भोजन कराया गया, उसका वर्णन बडी छटापूर्ण भाषा में किया गया है । खाद्य पदार्थों का इतना सुन्दर वर्णन पढ़ कर पाठको को भी भोजन करने की इच्छा जग उठेगी । परोसने वाली स्त्री का वर्णन करके खाद्य पदार्थों का वर्णन किया गया है—

“माडयउ उत्तग तोरण माडवउ, तुरत नवउ । बेसवानउ प्रांगणउ, तेतउ नील रतन तणउ । सखरा माडया आसण, बेसता किसी विभासण प्रीसणहारी पड्ठी । ते केहवी ?—सोल शृगार सज्या, बीजा काम त्यज्या । हायनी रुडी, विहुँ बाँहे खलकइ चूडी । लघ लाघवी कला, मन कीधा मोकला । चितनी उदार, अति घणी दातार । दजलती हाथ, परमेसर देजे तेहनो साथ । घसमसती श्रावी, सगलारइ मन भावी ।

“हिव पकवान आणइ, केहवा वखाणइ—सत्तपुडा खाजा, तुरतना ताजा, सदला नइ साजा, मोटा जाणे प्रासादना छाजा । पछे प्रीस्या लाडू, जाणे नान्हा गाडू । कुण कुण ते नाम, जीमता मन रहे ठाम । मोतीया लाडू, दालिआ लाडू, सेविया लाडू, कीटीरा लाडू, नांदउलिया लाडू, तिलना लाडू, मगरिया लाडू, भूगरिया लाडू, सिंह केसरिया लाडू ।”

१८ वी शताब्दी के समा-शृगार, कुतुहलम् आदि कई वर्णनात्मक ग्रन्थ मिले हैं, जिनके उद्धरण अपने अन्य लेख में दे चुका हूँ । इस शताब्दी की दो सुन्दर रचनाएँ चारण कवियों की भी प्राप्त है, जिनमें से ‘खीची गगेव नीवावतरो दो-पहरी’ और ‘राजान राउतरो वात-वणाव’ बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं । इनका एक एक उद्धरण नीचे दिया जा रहा है । पहली रचना के प्रारम्भ में वर्षा का वर्णन तो बहुत ही सुन्दर है जिसको मैंने राजस्थानी साहित्य मे वर्षावर्णन-लेख में दे दिया है । उसे यहां भी दिया जा रहा है—

“वरखा रितु लागी, विरहणी जागी ।
आभा भर हरै, बीजा आवास करै ।
नदी ठेबा खावै, समुद्रे न समावै ।
पाहाडा पाखर पड़ी, घटा ऊपडी ।
मीर सोर मडै, इन्द्र धार न खडै ।
आभो गाजै, सारंग वाजै ।
द्वादश मेघनै दुवो हुवी, सु दुखियारी आख हुवी ।
भडू लागी, प्रथीरो दलद्र भागी ।
दादुरा डहिडहै, सावण आणवैरी सिघ कहै ।

इसो समझी वण रही छ, बरखा मड न रही छ ।
 बिजली झिलोमिल कर न रही छ वादल भू लावो छ ।
 सेहरा-सेहरां वोज चमक न रही छ ।
 जाए कुलटा नायक घरसू नीसर अग दिलाय दूसर घर प्रवेस कर छ ।
 भोर कुहक छ, डडरा डहक छ ।
 भाखरारा नाला बोल न रह्या छ ।
 पाणी नाडा भर न रह्या छ चोटडियाल डहव न रही छ ।
 बनसपतीसूं वेलां लपट न रही छ ।
 परभातरी पा र छ । गाज आवाज हुय न रही छ ।
 जाए घटा घण हरसू जमीसूं मिलण आयी छ ।
 इस बखत समझयम गगेव नीबावत बोल छ, मनरी उमग खोल छ ।
 सलां सिकारारो दुवो हुवो छ ।

“तथा उपरति करि न रानान सिलागति हम प्राग वसत रितरा वणाव वनालीज छ
 दक्षिण दिसा मलयाचल पहाडरो पवनें वाजिमी छ । सीत मद सुगव गति पवनें मतवाला मगल
 ज्यु परिमल भाला खावती यह छ । अडार भार बनसपती मकरद फूलादिरा रस मीणती थवो
 यह छ । अवर मोरोज छ बूंपला फूटीज छ । यणराइ मजरी छ । वासावली फूटि रही छ ।
 केसू फूलि रहिमा छ । रितिराज प्रगटिधो छ । वसत आयो छ । भमर मधुकर भवार करी रहिया छ ।
 मधुरी वाणीरा धुर करि काविला बोन रही छ । वाग बगीचां दरखत गुलवारी भिलि पून
 रही छ ।”

स० १७८८ के लगभग रतनू वीरभाण्डव राजरूपक' ग्रंथ राजस्थानी भाषा का एक
 बहद एतिहासिक काव्य है, जिम पण्डित रामकरणजी भासोपा न नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा
 प्रकाशित कराया है । इस ग्रंथ में कई जगह घाता का भी प्रयोग हुआ है । यहा उमका एक
 उदाहरण दिया जा रहा है । इसमें श्रीरगजव का वणन है—

“श्रीरगसा पातसा आसुर भवतार सपस्याके तेज पुज एक से विवतार ।
 मापका बिहाई सा प्रतापका निदान भारतत प्रागे जिसी जोनमी जिहान ।
 जापका पगपर मापका दरिपाव, सापका सेस जवाल दापका कुरराव ।
 सक्मका जनवार अत्रसेका वाई, अरिदल समुद्र प्राण कुभाऊ भाई ।
 रहणीमें जोगद्वर बहणीमें जगदीस, ग्रन्थीमें सिषीत्र सहणीमें ग्रहीम ।
 जाके जप सप प्राग ईश्वर आधीन ताकू छल वाह बल कुण कर हीन ।

१८ वीं शताब्दी में ही ददावत-सत्रक दो रचनाएं प्राप्त हुई हैं, जिनमें से पहली रचना
 ‘नरसिंहदाग गोडरी ददावत भाट भासीदास रचित है । इसकी प्रति मनुष्य संस्कृत सान्धरी में
 १८ वीं शताब्दी पूर्वार्ध की लिखित प्राप्त हुई है । आदि भन्त के उदाहरण इस प्रकार है—

आदि— हींवाग छात हींवाण सुर अजमर जोधपुर मीज पुर अजवाल चण भ्रम गांव
 अराड डीलडी बीच महिपरयां माड ।”

भन्त— रग छहरत है । कण्ठे पहरत है । तासक सीत्यावता है । हजुरी पावता है । चदन
 उतरते पाव दे तसाम करावे है ।

अरथपत पाटसा है । अमर पन्ते है । गभा विराजती है ।

कीरत राजते है । घोडे फिरते है । पायक अडते है ।
 गुणी जण राग घटता है । वह वपत वणता है ।
 सोभा वणती है । श्री दिवाण पधारते है । दुसमण को जारते है ।
 देसी दूर डरने है । साहो काम सरते है ।
 कवीमुर बोलते है । भरणा पोलते है ।
 कामका सूरत । जेतला दिहाडा तेतला प्रवाडा ।
 जग जेठराज नरसिंह जेत, कवि मालीदास कहै दवावेत ।

दूसरी दवावेत जैनाचार्य जिनलाम सूरिजी की है जिसे याचक विनयभक्ति (वस्तपाल) ने १६ वी सदी के प्रारम्भ में बनायी है । इससे पूर्ववर्ती जैनाचार्य जिनसुखसूरिजी की दवावेत उपाध्याय रामविजय ने सवत् १७७२ में बनायी थी । इसका दूसरा नाम 'मजलस' भी है । दोनो दवावेतो के उद्धरण नीचे दिये जा रहे है—

“अहो आबो वे यार वैठो दरवार । एचादणी रात, कही मजलीसकी वात । कही कौण-कौण, मुलक कौण कौण राजा देपै, कौण कौण पातिस्या देपै, कौण कौण दईवान देपै, कौण कौण महिवान देपै । तो कहै—

दिल्ली दईवान फररुप्साह सुलतान देपै । चित्तौड सग्रामसिध दईवान देपे । जोधारा राठीड राजा अजीतसिंह देपे । वीकाणाराज सुजाणसिध देपे । आवेर कछवाह राजा जयसिध देपे । जैसाण जादव रावल बुधसघ देपे ।

ए कैसे है—वडे सु विहान है, वडे महिवान हे, वडे सिरदार है । वडे बूभदार है, वडे दातार है । जमी आसमान बीच सभू अवतार है ।”

आचार्य श्रीजिनसुखसूरि का वर्णन करते हुए लिखा गया है—

“दुस्मन् दूर है, सव दुनीमें हुकम मजूर है । मगरुाकी मगरुी दफै करते है, छत्र धारीकी सी रीस धरते है । वडे-वडे छत्रपति गढपती देसोत डडीत करते है, चिकारे मुकारे भुज मरते है । (श्रीर) भी कैसे है—गुनुके गाहक है, गुनुके जान है, गुनुके कोट है, गुनुके जिहाज है विजैजिनराज है पटदर्शनके महाराज है सव दुनिया बीच जस नगारेकी अवाज है ।”

जिनलामसूरि—दवावेत उपर्युक्त दवावेत से चौगुनी बडी है । इसमे कुछ पद्य व गीत भी सम्मलित है । यहा वचनिका-सज्ञक गद्य काव्य के भी कुछ उद्धरण दिये जाते है—

‘ फिरि जिनुका जसका प्रकास मनु हसका सा विलास,
 किधु हरजूका हास किधु सरद पुंन्युका सा उजास ।
 फिर जिनुका रूप अति ही अनूप मनु सव रूप वतुका रूप,
 जाकु देष्ये चाहै सुरनके भूप कामदेवका सा अवतार ।
 किधु देवका सा कुमार, तेज पुज की भलक मनु कोटिन सूरन की जलक ।’

उपर्युक्त दोनो दवावेतो में फारसी शब्दो का प्राचुर्य है, क्योंकि इन दोनो की रचना सिन्ध प्रात मे हुई है । पजाव और सिन्ध की भाषा मे उस समय फारसी शब्दो का बाहुल्य था ।

२० वी शताब्दी की रचनाओ में ‘शिखर वशोत्पत्ति’ नामक ऐतिहासिक काव्ये सवत् १६२६ में कविया गोपाल ने बनाया, जिसे पुरोहित हरिनारायणजी ने सम्पादित कर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित किया है । इसका अपर नाम ‘पीढी वार्तिक’ भी है । इसका प्रधान

चिह्न धारणा नामक है, जिसे श्लोक की तरह मात्रामा आदि के प्रतिबन्ध रहित गद्य ही समझिए । उदाहरण इस प्रकार है—

“स्याम ताज वफनी बमडलम नीर ।
 टाटी सुपेत सप सुवरण धरीर ॥१४॥
 मोवल राव आतो देपि मापाको नवायो ।
 साई स्या भुरानी सेप नामी पव पायो ॥ १५ ॥
 जगलमें चर छा सा अध्याइ भोगी घाई ।
 सावलका वनासू सेप चीपीमें दुहाई ॥ १६ ॥
 बोन्दो दूध पीव सेप नीकी भाति रणा ।
 तेरे पुत्र होमा राव सेपा नाव कणा ॥ १७ ॥

इसी कवि का अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थ ‘लावा रासा’ है, जो राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर जयपुर से प्रकाशित हुआ है । उसमें भी दवावेत गद्य छन्द प्रयुक्त है । इसकी परवर्ती रचना कविराय वस्तावर के स० १६३६ में रचित ‘केहर प्रवाण’ है । यह भी एक ऐतिहासिक काव्य है । बीच-बीच में वार्ता एवं वचनिका विराय रूप से पाई जाती है । यहाँ उन दोनों का एक उदाहरण दिया जा रहा है ।

जवाहर वेश्या की पुत्री कवलप्रमण के रूप का वरण वार्ता में इस प्रकार किया गया है—

“पुत्री जिएरे कवलप्रमण रूपरी निधान ।
 सुनेदियासू सवाई साथ रम्भार समान ॥
 साहित्या श्रु गार धाव्य जवानी पर वहे ।
 रमाताल परिजत संगीतमें रहे ॥
 बीणाधर सहजाई गावे किए भात ।
 तराज पर नह आव नारद बीणारी तात ॥
 जिएने सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग आवे ।
 कुरग धी भमग वन पातालसू आवे ॥”

उसके रूप को देख कर अन्य नारियों ने उस बाग बगीचों में जाने का निषेध करते हुए क्या ही सुन्दर कहा है !

“सुघड जठ बोली या नवेली सहल सारे ही सिधावज्यो ।

एण बाग वन सरोवर वदे भी मत जावज्यो ।
 जावेला बाग ता पिक दूक धली उठ जावसी
 न विम्बफल थोफल अनाड सवा जो सुखावमी,
 जावेला जो वन तो खञ्जन कपोत चोम चूरेला ।
 मणधर भृगराज गजराज विवर बूरेला ।
 जावला सरोवर राज हस चूड जावसी ।
 कवल काला पडेला सिवाल ध्रुवटावणे आवसी ।
 रातने या अटारी मावे कदेई जो जावेला ।
 तो अद्रभारे भरोसे राहसू स्वता ही ज रावला ।
 राह वदाक न भायो तो चकोर तो आवसी ।

जावमी न आग माये चहराने जूँय जावनी ।
सावण आया घरे यारे हीदा जिनी पावेला ।
हीदिया छे तो परिया ओके परिया जान जावेला ।

दचनका

कवल उरवमी आत आतमे कहान ।
परस्थानी परियो भी सहेण्यो ले माय ।
जग्यम पट जेवर भनामलके जोत ।
हेरी जात चारो घोर जानगी सी होत ॥
छद्रचण्टा विछियोका छुटे छग छगाव ।
ज्यो हमे वच्चोली वागीका वगाव ।
जा भक्का भणकार वहे जोरें पर जोर ।
सावणके मोमम ज्यो भिल्लयोका घोर ।
फवणीमे अनूरागमें अगणितके फेल ।
गुम्मजके महल आई मिजाजोके गेल ॥६३॥”

आधुनिक शैली के गद्यकाव्य की परम्परा भी राजस्थानी भाषा में चानू है । यहाँ कविवर
कन्हैयालालजी सेठिया के गद्यकाव्यों के दो उदाहरण देगिए—

“घासोजरो महीनू । नान्ही सीक एक वादनी ओसरगी । देवह चालेरो अलगाजो
गूज उठ्यो । रिमझिम-रिमझिम मेवलो वरम । अतेमें ही अचाण चूको पनरो एक लहरो आयो
अर वादली उडगी । करड़ी तावडी निकल आई । खेतमें निनाण करतो करतो बोल्यो आमोजारा
तप्या तावडा काचा लोहा पिए गलग्या—‘मिनखरी जवानमें कठेई पल कोनी’ ।

वादलवाईरो दिन । मधरो मधरो आयूगू वायरो चाले । खेजड़ी परा वंठी कमेडी
बोली—‘टमरक टू’ ।

नीचे छियामें सूतो मिनख मोच्यो किम्योक मोवणू पखेरू हूँ ? अतेमें ही कमेडी वीठ
बरी-सीधी आर मिनखरे ऊपरा पटी मिनख भु भुनार बोल्या—किम्योक बदजात जीव है ?”

हिन्दी भाषा में तो राजस्थान के कई विद्वानो ने अनेको गद्यकाव्य लिखे है, जिनमें ठाकुर
रामसिंहजी (वीकानेर), भवरमलजी सिधी (जयपुर), दिनेशनन्दिनी डालमिया (उदयपुर) आदि
प्रधान हैं । श्रीयुक्त कन्हैयालालजी सेठिया का मातृभाषा का प्रेम विगोप उल्लेख योग्य है । हिन्दी
के अच्छे कवि होने के साथ इन्होंने राजस्थानी भाषा में भी समय-समय पर बहुत सुन्दर रचनाएं
की । इनके राजस्थानी के गद्यकाव्यों का संग्रह ‘पाखंडलियाँ’ के नाम से शीघ्र ही प्रकाशित
होने वाला है ।

—श्रीअगरचन्द नाहट

कतिपय वर्णनात्मक राजस्थानी गद्य-ग्रंथ

यान-शक्ति मनुष्य को दी हुई प्रकृति की विषय दन ह । वसे तो नत्रघारी मभी प्राणी वस्तुमा और घटनाभी को निरतर दरते ही रहते ह, पर मनुष्य का दखता उनकी अपेक्षा बहुत महत्व रखता ह । दयन क पीछे अनुभव करने की विशेष शक्ति आवरयव ह और वह केवल मानव को ही प्राप्त ह । इनर प्राणी उहें दख भर लने ह पर जमा अनुभूतिपूण वणन मानव कर सवता ह अ य काइ भी प्राणी नहीं कर सवता । वस्तुमा का जान कर लना एक यान ह और अपन अनुभव को सुंदर एव सागार रूप में दूनरा के समथ वाणी द्वारा उपस्थित करना दूसरी बात ह । किसी भा वात का वणन करते समय श्रोता के सामने उसका चित्र सा उपस्थित हो जाय-यह वणन करन की विषय कता ह । वसे रमील व चमत्कारपूण वाच्य लिपिवद्ध हो जान पर व साहित्य की सजा पात ह ।

भारतीय प्राचीन साहित्य म वणन करने की विशेष छटा स्थान-स्थान पर देखने को मिलती ह । वही वही ता निरूपण शली इतनी मजीव होती ह कि पढ़ने और सुनन वाल बरवस आकर्षित हो कर मत्र-मुग्ध से हा जात ह । यह वणन-शली कइ प्रकार की होनी ह । किसी में वस्तु के वाह्य रूप को, किसी में भीतरी गुणों की और बिगी में भेद प्रभदा के विस्तृत विवरण की प्रधानता हाती ह । किसी त्रिमी रचना में भाषा का चमत्कार दखते ही बनता ह । गद्य का चयन उदा गुत्तर होता ह और वणन गद्य में लिखे जान पर भी (तुकांत होने से) पढ़न वाल को पद्य का मा आनंद मिलता ह । सश्टन में गद्य काय में तिस प्रकार लव लने समास प्रधान होते त उनी प्रकार लोक-भाषा के वणनात्मक गद्य-ग्रंथों में तुकांत शली बहुत विस्तृत पाई जाती ह । इममें एव व गद एक तुकांत गद एसे सुंदर एव महज ढग में सजाये जात ह कि मानो मातिथी को चुन चुन कर माला ही पिरो डाली हो । सहृदय पाठक व श्राता उस तुकांत गदावली और वणन शली का चमत्कार देख कर आनंद विभोर हो उठने ह और लेखक के प्रति बरज उनके म ह से बाह वाह, 'अप खूब शान फूट निकलत ह ।

प्राचीन जनागमा का अध्ययन करत समय आज से ढाई हजार वष पूव की वणन शली का अच्छा पता चलता ह । मत्र-प्रमथों का विवरण दन वाले स्थानाग समवायाग प्रदन-यावरण आदि आगम का जानवचन ह ही पर उबवाई सूत्र जैसे कई ग्रंथों में वणनो की अच्छी बहारें ह । उबवाई सूत्र में चम्पानगरी, पूणभद्र चत्य बनखड, धगोक वध, महाराजा शणिक के पुत्र अभसार (काणिक अज्ञान शत्रु), धारणी रागी भगवान महावीर का आगमन, समवसरण, महाराजा कोणिक का वदनाय गमन, श्रमणों की तप-माधना आदि का अच्छा वणन ह । इसी प्रकार अय जनागमों में भी प्रमगानुसूय अनेक प्रसभा व सुंदर वणन पाये जात ह । जस कल्पसूत्र में भगवान महावीर की माता चौह स्वधन देयता ह-उनका विस्तार सा वणन मिलता ह । इस सबध में स्वत न लख द्वारा प्रकाश डाना जायमा अत लख-विस्तार भय स यहाँ उदाहरण नहीं दिय जा रह ह ।

परवर्ती नश्टृत काव्य आदि ग्रंथों में प्राचीन वणनशली को और अधिक आगे बढाया गया ह । जस दग वणन, नगर वणन, हाट बाजार वणन, राजा और राज सभादिव का वणन,

के रागियो और अन्य नगर की रमणियो के रूप ता वर्णन, वनपट, आराम, उद्यान, महल प्रादि के वर्णनो के साथ साथ उ० कृत्यों, उन्मथो और क्रीडाओ आदि का वर्णन भी कविगण अपने काव्य मे अत्यन्त ही करते हैं। मुक्ति वर्णन-योग्य प्रयोगो को कभी खानी हाथ नहीं जाने देते, जिमसे काव्य में नजीवता व नरमता आ जाती है और श्रोता एव अध्येता विविध रमोका मन कर निमग्न हो जाते हैं। पद्य ग्रंथो की भाति गद्य काव्यो (नादम्बरी, निनामजरी आदि) में भी स्थान-स्थान पर वर्णनो की छटा देगने ही बननी है। कही कही तो वर्णन बहुत ही चमत्कारिक एव कलापूर्ण पाये जाते हैं।

कई ऐसे स्वतन्त्र ग्रन्थ भी भारतीय-साहित्य में पाये जाते हैं जिनका उद्देश्य केवल वर्णन करने का ही होता है। अनुसहार आदि ऐसे ही काव्य है। कनिष्य ऐसे नग्न-ग्रन्थ भी उपलब्ध है जिनमे भिन्न भिन्न वस्तुओ के वर्णन समूहीन मिलते हैं। उनके वर्णनो का उपयोग हमारे ग्रंथ-प्रणेतो अपनी रचि के अनुकूल घटा बढा कर स्वरचित्र ग्रन्थो में कर लेते हैं। कथा-चरित्र आदि ग्रन्थो में स्थान-स्थान पर ऐसे सजीव वर्णन जुड जाने से उनकी शोभा बहुत अधिक बढ जाती है।^१

संस्कृत-प्राकृत की भाति लोक-भाषाओ में भी ऐसे वर्णनात्मक ग्रन्थ समय समय पर रचे गये हैं। मैथिली भाषा का “वर्ण रत्नाकर” ग्रन्थ उन्ही प्रकार का है। यह डा० मुनीति कुमार चाट्टुर्व्या और बाबू मिश्र द्वारा संपादित हो कर एशियाटिक सोसाटी कलकत्ता द्वारा सन् १९४० में प्रकाशित हुआ था। यह १५वीं शती की रचना है और इसमें भेद-प्रभेद रूप वर्णन ही अधिक है। सजीव कथात्मक महत्वपूर्ण वर्णन ग्रन्थ न० १४७८ में माणिक्यमुन्दरनूरि रचित पृथ्वीचन्द्र चरित्र है। लोकभाषा में वर्णनो का ऐसा सुन्दर सदर्भ ग्रन्थ अन्य नहीं है। इसका सार्थक व अपर नाम “वाग्बिलास” रचयिता ने स्वयं रखा है। क्योंकि पृथ्वीचन्द्र के चरित्र की अपेक्षा उसमें वाग्बिलास रूप चमत्कारिक वर्णनो की ही प्रधानता है। पाठकों को इसकी शैली का रसाम्बाद कराने के लिये दो चार उदाहरण नीचे दिये जाते हैं—

वर्षाकाल वर्णन—

“विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पथी तणउ काल, नाठल दुकाल ।
जिरिणइ वर्षाकालि मधुर ध्वनि मेह गाजइ, दुमिष तणा भय भाजइ,
जाणे मुमिष भूपति आवता जय डवका वाजइ ।
चिहु दिशि वीज भलहलइ, पथी घर भरी पुलइ । विपरीत आकाश, चन्द्र सूर्य परियास ।
राति अघारी, लवइ तिमिरि । उत्तर नऊ उनयण, छायउ गयण । दिमि घोर, नाचई मोर ।
सधर वरसइ धाराधर । पाणी तणा प्रवाह खलहलइ, वाडी ऊपर बेला बलइ ।
चीखलि चालता सकट स्खलइ, लोक तणा मन धर्म ऊपरि बलइ ।
नदी महा पूरि आवइ, पृथ्वी पीठ प्लावइ । नवा किसलय गहगहइ, बल्ली वितान लहलहइ ।
कुटुम्बी लोक माचइ, महात्मा बैठा पुस्तक वाचइ ।
पवन तउ नीभरण विछूटइ, भरिया सरोवर फूटइ ।
इसिइ वर्षाकालि ।

१ कविवर मूरचन्द्र के ‘पदैक विगति’ कथा-संग्रह ग्रन्थ की अपूर्ण प्रति हाल ही में मुनि श्रीजिन-विजयजी से अवलोकन को मिली है। मूल ग्रन्थ संस्कृत में है, पर स्थान-स्थान पर सुन्दर वर्णन राजस्थानी-भाषा में दिये हैं। वे कवि के स्वयं रचित भी हो सकते हैं पर कई वर्णन अन्य प्राप्त प्रतियो वाले भी हैं।

वसन्त ऋतु वर्णन-

तिसिंह आविउ वसत हूउ गीत तएउ अत ।
दक्षिण दिशि तणउ गीतल वाउ वाइ विहसइ वएराइ ।

दोहा

सवे भला मासटा, एण वइसाह न तुल्ल ।
जे दवि दाधा ऋसटा, तीह मायइ फल्ल ॥

मउरिया सहवार चपक उदार ।

वेउल धकुल, भ्रमर कुल सकुल, पलरव करइ भोविल तएा कुल ।

प्रवर प्रियगु पाडल, निमल जल, विकसित कमल ।

राता पलास, सबत्री वास । कुद मुचकुद महमहद, नाग पुनाग गहगहइ ।

सारस तणी भ्रणि, दिमि वामीइ कुमुम रेणि । लोक तए हावि त्रीणा यस्त्राडवर भीणा ।

धवन श्रङ्गार सार, मुक्ताफन तणा हार । सवाग मुत्तर, वन माहि रमद भूष पुरदर ।

एकि गीत गवारइ, दान दिवारइ । विचित्र वाजिउ वाजइ, रमलि तएा रम छाजइ ।

एकि चाण्डि फून चूटइ वक्ष तणा पल्लव खूटइ । हिडोलइ हीवइ, भालता बादिइ जनिइ सीवइ ।

केलिहरा वउतिग जोमइ, प्रीतमत हांमइ ।

वनपालकि भ्रवसर लही, वसत भ्रवतरिया तणो वार्ता कही ॥^१

उपमा व तुलना आदि प्रधान विभिन्न शैली के वर्णन-

१ तुम्हें कहवउ धम पणि नधी जाणता मम । सामनउ-वन ते वएचीइ ज वक्षवत,
नदी ते ज नीरवत, कटक ते जे धीरवत सरोवर त ज कमलवत मेघ ते ज रामावत,
गहास्या ते जे क्षमावत प्रसाद ते ज धजावत, धर्मो ते ज दयावत, आदि ।

२ माहरी लक्ष्मी इह सरीखी हूइ । तउ कहीइ-

भाम तणी छाह, कृपुग्नि तणी बाह । दासीनु स्नह, गरद कालनु मेह
पोडा मेह नउ नह बहिनु आवइ छह ।

३ जटनु अतर राणी अनइ दासी, जननु अतर दही नइ छासि,

जेटलु अतर मघूर ध्वनि नइ घासि । जटलु अतर समइ नइ बूया

जटलु अतर सोनइया नइ रूपा जटलु अतर बाप नइ पूपा ।

जटलु अतर लण नइ तपूर जटलइ अतर खजूइमा नइ मूर ।

जटलइ अतर हाविली नइ तूर जटलइ अतर खाल नइ गगा पूर ।

जटलइ अतर साधु नइ तार, जटलइ अतर हार नइ दार ।

४ हूय पापइ त्रिवम तही पुण्य पाखइ सोध्य नही

पुत्र पाखइ कुल नही, मुय उपेण पापइ विद्या नही,

हृदय त्रिपाखइ धम तही, मोहन पाखइ त्रिपति तही ।

साहस पापइ सिद्धि नही कुलस्त्री पाखइ पर नही ।

१ इस यादिकनाम ग्रन्थ व कई वखान प्रस्तुत सत में दिये गये ग्रन्थ वएनारमक ५ प्रतिषो में भी ज्यों के रमा मिलने हू व कई वखानों में गणो का बहुत अधिक साम्य पाया जाता ह । भेद प्रभेद रूप वएनों से इस सत में उद्भूत नहा किया गया, जैसे कि जानिमे वा प्रसंग पाया तो वहाँ ६४ जातिषो के नाम ह । आदि आदि ।

५. जिमि विलव विणमइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज ।
कुमगति विणमउ सतान, स्वर पागउ विणमउ गान ।

चर्यानात्मक ग्रंथों के प्रति मेरा आकर्षण—

ध्वेताम्बर जैन समाज में कर्मसूत्र का वाचन प्रतिवर्ष पर्युषणी में होता है। वचन में ही मैं उने सुनता रहा हूँ। वीकानेर में उसकी स्वतन्त्रराष्ट्रीय लक्ष्मीवर्तनी टीका ही विशेष रूप से वाची जाती है। इस टीका में व उससे पूर्ववर्ती उत्पलना टीका में भगवान महावीर के जन्माभिषेक के प्रसंग में भोजन विच्छिन्ति आदि का लोकभाषा में मरस वर्णन आता है। जो मनोविनोद के लिये अच्छा है। उनमें विस्तार में जानने के लिए “वाग्बिलाम”^१ ग्रन्थ का निर्देश होने से उक्त ग्रन्थ के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ा। जब उस ग्रन्थ के दो चार वर्णन जो इस मस्कृत टीका में दिये हुए हैं वे इतने सुन्दर हैं तो वाग्बिलाम ग्रन्थ में तो न मालूम ऐसे कितने सुन्दर वर्णन भगृहित होंगे। यही उस आकर्षण का कारण था। कुछ बड़े होने पर (साहित्यान्वेषण एवं अध्ययन की वृद्धि के समय) उपर्युक्त माणिस्यसुन्दरमूरि का ‘पृथ्वीचन्द्र चरित्र’ देखने में आया जो बडोदा ओरियटल मिरीज में प्रकाशित “प्राचीन गुर्जर वाक्य संग्रह” और मुनि जिनविजयजी नपादित “प्राचीन गुजराती गद्य मदन” में प्रकाशित हुआ है। इस चरित्र का अपरनाम ‘वाग्बिलाम’ भी है। यह जानने पर वाग्बिलाम ग्रन्थ का स्वरूप तो स्पष्ट हो गया पर लक्ष्मीवल्लभी टीका में उल्लिखित भोजन विच्छिन्ति आदि का वर्णन इस ग्रन्थ में नहीं मिलने में वह वाग्बिलाम नामक ऐसा ही कोई अन्य ग्रन्थ होना चाहिये—यह अनुमान किया गया। पर कई वर्षों तक ऐसा कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ। फिर द्रमस ५ ग्रन्थ उपलब्ध हुए जिनका परिचय प्रस्तुत लेख में दिया जा रहा है।

१ कुतूहलम्—

वीकानेर के जैन जान-भटार में एक “कुतूहलम्” सजक प्रति सर्व प्रथम मिली जिसमें गज नाम, नभा नाम, बस्वनाम आदि नाम और वर्षाकाल आदि का कुछ वर्णन था। इसके अन्त में ‘इति कुतूहलम्’ बढ लिखे थे जिमने चमत्कारपूर्ण वर्णन वाली रचना को कुतूहलोत्पादक होने से ‘कुतूहल’ नाम दिया गया प्रतीत हुआ। इस ग्रन्थ के चार वर्णन पाठकों की जानकारी के लिये यहाँ दिये जाते हैं।

१. वर्षाकाल वर्णन—

ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पटई छटा, भाजइ भटा, भीजइ लटा ।

मेह गाजइ, जाणै नाल गोला बाजइ, दुकाल लाजइ, नुवाव बाजइ, डद्र राजइ, ताप पराजइ ।

बीज भवके, मेह टवके, हीया दवके, पाणी भभके, नदी उवके, वनचर लवके, आमी अदके ।

बोलइ मोर, डेड करे सोर, अंवार घोर, पँइमइ चोर, भीजइ डोर ।

खलके खाल, वहै परनाल, चूये साल, माप गया पयाल ।

भइ लागी, लोक दसा जागी, घर पटे, लोक ऊचा चडे । आभा राता, मेह माता ।

२. एता किसी काम का नहीं—

ऊनालानी मेह, दानीनी नेह, रोगीनी देह, म्त्री विण नेह ।

पर घरनी छानि, कठ विहूणी रासि, अवमर विना भाम, कुकुलनी दाम ।

फूमनी आग, जमाइनो भाग, काचो ताग, पाणीनी साग ।

दोदानी तेज, दुरजननी हेज । उवारानी वैपार, राइनो मिणगार । पावइयानो प्यार ।

१. अथ पुन वाग्बिलास ग्रन्थाइ भोजन मुक्ति कथ्यते (पंचम व्याख्यान)

३ विशेषताएँ—

प्रथम पिंड पाणीरो, रूपी तो जावररो, दरसण तो परमेगररो, ताल मानसरोवररो, हस्ती तो कजली बनरो, पदमणी तो सिंहुल द्वीपरी, चतुराई गुजरातररी, वासो ता हिंदुस्तानरो, स्वाद ता जीमरो, मतो तोपचारी, खेती तो बाटरी, धीणो तो भुसरो देणो तो माथारो, गाल तो मातारी, चूडा गतररो, आदि २ ।

४ ये वस्तुएँ भली—

अमन धारा भला, खान्य धारा भला, हेट मारा भला, धात पारा भला हाथ वहना भला, माल खरचता भला, दान मानसू भला, बाधा पानसू भला । साहित जससू भला, खत नीचा भला । घर ऊचा भला । राणी, पाणी पासला भला । अमल जोरका भला । निसाण थोरका भला । इत्यादि ।

२—सभा शृङ्गार

इस प्रति की प्राप्ति के पश्चात् 'सभा शृङ्गार' नामक ग्रंथ की एक प्रति स० १७६२ में महिमा विजय लिखित ७५६ श्लोक परिमाण की मिली जिसमें पूव प्रति से वणन बहुत अधिक व सुन्दर प्राप्त हुए । यहा उसम से दो चार वणन दे कर 'हमें सतोप करना पडता ह । वसे इस ग्रंथमें बहुत से वणन पाठका का मनोरजन कर सकत ह । वर्षा का वणन इसमें दो बार आता ह । जिसमें पहला वणन उपयुक्त प्रति जसा ह पर अधिक विस्तार स ह । दूसरो वणन इस प्रकार ह—

- १ वर्षाकाल हूउ, बहिली रहिउ कुयउ, वावि पाणी भरता रया । बादल उनया । मेघ तणा पाणी बह, पथी गामइ जाता रह । पूव ना वाजइ वाय लोभ सहू हृपित थाय । आकाश पडहइ खाल लडहइ । पथी तडपडइ, बडा माणस लडपडइ, काठ सडइ, हाली हून खडइ । आपणा घरि बादम फेडइ बीजा काज मेडइ । पार पार न लीड, साध विहार न करीइ । अनेक जीव नीपज, विविध धाय ऊपज । लोभनी आस पूज, गाय भस डूज । इत्यादि ।

२ धनी और निर्धनी का अन्तर—

निधनी वर्णन

ऊचो तो एरड, साटरो तोहि नाग, पणो भोली लाफु, बहू बाले नो लबोल । पणू जीमे तो भूखो, थोडो जीमे तो अमोगियो । भना बस्न पहिरे तो इतर, सामाय पहिर तो दरिद्री । गीरो तो पाटू रोगियो, बाला तो बबाडी । व्यापारी तो भडङ्ग, धीख तो सबधन बाध, विपयहीन तो नपु तक ।

धनी वर्णन

ऊचो तो अजून बाहु, वामनो तो वामुण्व, गीरो तो बदप, बाला तो कृष्ण, पणो जीम तो पहारी, थोडा जीमे तो पुणवत ऊचा बस्न पहिरे तो राजस्वर, सामाय पहिरे तो मूमा, दाता तो बर्णावनार, जो न देँ तो दाना पुण्य करइ, पणो बोल तो भोनी, न बाले ता मितभायी, जा सग ता भोगी, जो नपुमक तो परनारी सहादर ।

३. प्रभात व संध्या वर्णन-

प्रभात

हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीदथी डोल्या ।
 नीदईं भुकोल्या, मूची सभोगनी लोल्या, स्त्री भर्तार डमडोल्या ।
 आवइ नारि, वारि उघारि, राति अघारि । दही सभात्यू, विलोवणो घाल्यू ।
 रातिज दीसै छै, घटी पीसइ छै । इतरइ सख वाग्या, भुवकीने जाग्या ।
 तितरईं भालर वागी, स्त्रियो पण जागी, उठवाने लागी ।
 मुहडे बोली-उठो भाई ! जागो भाई ! राति विहाई ! प्रह पीली थई ।
 राति परी गई ! चडकलडी चहचई ! मालण वाडी गई ।
 नोवत गडगडे छै, पारसी भणो छै, खुदा खुदा करे छै ।

संध्या

सूरजना किरण पच्छिम डल्या, पथी सगा नड मिल्या ।
 विरहीना हीया वल्या, गोवाल घरे वल्या ।
 चौपू लाव्या, आप आपना घरे आव्या ।
 पंखी टलवल्या, माले जावा ने खलभल्या, चोर सलसल्या, आवइ हलफल्या ।
 आकास राता, मेह करि माता । क्या किरण नीला, क्या किरण पीला ।
 नाना प्रकारना रग, भला सुरग । वावै अनग, जगी करै जग, भोगी पीये भग,
 रत्री वळै सग । आदि ।

४. शीतकाल वर्णन-

भोगी भमरने प्यारो, जोगीश्वराने न्यारो ।
 महा टाढो, वाजइ गाढो, जावानो नही मिले किहा साढो ।
 दाहे रुख वाल्या, सज्जन ही साल्या । स्त्रीसूँ धरणी गोठ, खाना लाडू सोठ ।
 वासइ सगडी धखइ, अबल चीज भखइ, ठारे करि ठर्या, हाथ सोडमें धर्या ।
 हाथे न लेवइ वस्त्र, आवा ओढे वस्त्र । लोक सीसिआट करइ, चौपू उछरइ, ताढइ न चरइ ।
 वूजे वालगोपाल, विरहीमा पडइ हवाल, सहू वैठा चौसाल,
 साचव्या देहरा नइ पोसाल, एहवो शीतकाल ॥

५. उनालो-

गयो सियालो, आयो ऊनालो । लू वाजइ छै, सीत लाजइ छै, पग दाभइ छै ।
 तावडो तपीजइ छै । पथी पसीजइ छै, चन्दण घसीजइ छै ।
 रुंख पात भइइ छै, परिहार पाणी माटइ लडइ छै ।
 वाव कूवा सूके छै । पथी मारग मूकै छै, कंठ सूकै छै । आदि २ ।

६. अधारी रातरो वर्णन-

साभ परी गई, गुदडी परी थइ, दीवड जोति भई ।
 चोहटइ भीड मिटी, व्यापारीनी महिमा घटी, हाटइ ताला जडइ ।
 आप आपरै घर आया, कूची लाया । स्त्री सोनह सिंगार सजै, गणिका जारने भजै ।
 हाथे हाथ न सूभइ, कोई कोने न वूभइ, विचार माणस मूभइ ।
 चोर ते घसइ छै, कूतरा ते भुसइ छै ।

७ वस्तु स्वभाव-

चंद्रमाने कुण घोलन करइ अग्नि कुण दाह करइ ।
 दूधने, कुण घोले छ, समुदने कुण हिलोले छ ।
 मयूरपखन कुण चितर । लम्बीने कुण नोतरे, गयोदक कुण पवित्र करे ।
 हसने गति कुण सिखावे, वृहस्पतिन कुण वचाव । कृपण कुण सचाव ।
 तिम सज्जनन स्वभावे जाएव ।

८ शोभा-

कुल वहु ते सीले शोभ, रजनी चंद्रमा शोभ, धाकाग सूर्य करि शोभ,
 बदन चदन शोभ, कुल सुपुत्रे शोभ । बटवइ राजा शोभ, इत्यादि ।

९ न शोभे-

जिम लवण रहित रसवती, वचन रहित सरस्वती, कण्ठ रहित गायन, नृत्य रहित वादन,
 फल रहित वृक्ष, तप रहित भिक्षुक । वग रहित धोडो, बेस रहित मोटो,
 बस्त्र रहित सिंगार, स्वण रहित अनकार । इत्यादि ।

१० पण्डितारी-

यदरानी भीड, हुई पीड, सुटई चीड ।
 एक उतावलि दोडइ छ, एक मायइ वेहइ चउडइ छ, लूगइ ते माये मोई छ,
 वहइ ते फोडइ छ । एक एक नइ अडइ छ घडापड पडइ छ-मांहो माह लडइ छ
 हुवइ नानी लाडो, चीखलथी पडइ घाडो, बीजानी भोजइ साडो, ते माट करइ राडो,
 सोक सोकनी करइ चाडो डील जाडो, खीजइ भाडो, सामूइ पाछी ताडो ।
 एक पण्डितारी भमरइ छ, याता ते करइ छ, निजर ते घरइ-परइ फिरे छ,
 एक एक नइ हस छ, पाणी मांह घस छ । आदि ।

३-मुफ्लानुप्रास

उपपुत्र प्रति प्राप्ति के पश्चात् दो वष हुए जसलमेर के जन मान भडारोंका पुनरावलोकन करने के लिये जाने पर वर यतिवर लक्ष्मीचंद्रजी के सग्रह की संपूर्ण प्रतियों में १६ वीं दाताष्ठी के लिख हुए ८ पत्र प्राप्त हुए, जिनमें १०८ वरुण लिख हुए ह । इनमें से कुछ वरुण सखन भाषा में ह पर अधिकांश राजस्थानी में ही ह । यहा इम प्रति से भी कुछ वरुण उद्धृत किये जा रहे ह । प्राप्त वरुणनामक प्रतियों में यह सबसे प्राचीन ह ।

१ रसवती वर्णन-

उपसइ मालि, प्रसन्नइ बालि । भला मठप निपाया, पोयणी न पाने छाया ।
 केसर कुबमगा छडा दीया । मोतीना चौक पूर्वा ।
 ऊपरि पच वर्णा चंद्रवा बाध्या अनेक रूप घाछी परियछीना रग साध्या ।
 फूलाना पगर भरपा, अगरना पच सचरपा ।
 पान गादी चानुरि चाकसा, बइसण हारा बइटा पातला ।
 साठवा पाट, मेलाध्या धागलि पाट । ऊंची घाटणी भनकथी फुटली ।
 ऊपरि मनाध्या गुवितास पाल, घाटा वाटनी मुवणमई कचोली ।
 रूपानी सोप वृषी, इसी भांति मूषी । आदि २ ।

फिर विविध रसवतियों के नाम हैं । इसमें प्राचीन खान-पदार्थों के नामों की विस्तृत विगत मिल जाती है ।

२. विरहिनी-

किसी एक विरहणी हुई विरहावस्था, आहार ऊपरि करउ अनास्था ।
सर्वं सिंगार, मानि अगार । तिरुड अवला (अतर्गत) फूना कीधा वेगला ।
चद तपड पान, थया विलवान । विरहानल प्रज्वनइ अगु, मगिजनसूँ विरगू ।
एहवऊ काई थ्यू विग्र चित्तू, न वुलगई गीत्तू । न कुण हीगूं हंनड, मदा नीससइ,
वोनावि खीजइ, दिहाउड दिहाडड देह सीजइ । आदि २ ।

३. चर्पा-

आसाड समाहु मेघ आव्या, कुणइए नउ मनि उच्छरणि न भाव्या ।
कालविणी वली, जगनइ नइ मनि रली । उत्तर वाय वाज्या, आकाय मेघ गाज्या ।
कूडा वहवया, केवडा महवया । कुद उलम्या, करसणि हूरम्या ।
आव महमह्या, भयूर गहगह्या । वप्पिहा रामड, विरहणी उमामइ ।
बूठा मेह, उलम्या म्नेह । नदी महा पूरि वहिवा लागी, देस विदेमनी वाट भागी ।
जल भरिया निवाण, पृथ्वी प्रवती मेहनी आण । आदि ।

४. हेमंत ऋतु-

अति वसतु, आवियो रितु हेमंतु । जिहां सीयना भर, सेवठ निवांत घर ।
तुलाइए पुढीइ, भंली तुलाइ उडीइ । अति ही मोटी, प्रलेव दोटी ।
ओढि वेसई, सीयाल हुई हसइ ।

शरद ऋतु-

उन्हाला नउ भाई, अनिलेइ वेश्वानर नइ अगू काई न जाणीइ ।
किहाई हूतउ, विसि सप्रकास शरद ऋतु पहुतउ । फून्या कास, अगस्ति ऊगउ । आदि ।

५. वसंत ऋतु-

विरहणी हसतु, पहुतउ वसतु । फूलइ वणाराइ, नगर मोहि न फिराइ ।
मेलहड वेराग, खेलइ फाग । अति सुविसाल आवानी डाल ।
तिहा वाधेहि हिडोला, रमइ नर भोला । आदि ।

६. ग्रीष्म ऋतु-

महा पित्रु नउ आलउ, आव्यो उन्हालउ । लूय वाजइ, कान पापडि दाभइ ।
भाभूआ वलइ, हेमाचलना गिखर गलइ । निवाणे खूटड नीर, पहिरइ आछा चीर ।
एवडऊ ताप गाढउ, भावइ करवउ टाढउ । वाड वाजइ प्रवल, उडइ धूलिना पटल ।
सीयालइ हुन्ति मोटी रात्र, ते नान्ही थई रात्रि । सूयें आपण पइ तापड, जगत्र सतापइ ।
जे जीव थल चरइ, तेहि जलासय अर्नुसरइ ।

७. कलिकाल वर्णन-

इणइ अवसर पिणी कालि, समइ समइ अनंत गुरि हारि ।
रस निरस्वाद, लोकूस्तोक मरयाद । अविबेकु वासु, धर्मवत नासु ।
अतुच्छ मच्छर, करकस स्वर, तुच्छ धर्म रगु, गुरुजन प्रससा भगु ।

मुकुत कण्ठे प्रमादु, बहु मृपावाडु । साप्रति वतइ इसठ कलिकालु जिहां का नहीं वृपालु ।
 दरमग उच्छेदुलु । आयजन स्वल्प, घणा मुविवल्प ।
 यहु भाराकांत देग मडन, पृथ्वी मद पन । साधुलोक भाकुन, राजा तुच्छ बल । आदि २ ।

यह प्रति प्रपूर्ण प्रतीत होती है । किनारे में प्राय का नाम 'मुक्ताग्रास' लिखा है
 जो ऐसी रचना का सायब व प्राचीन नाम प्रतीत होता है ।

४-वर्णनात्मक कृती प्रति

जसलमेर से आते समय बड़ोटा युनिवर्सिटी के गुजराती भाषा के प्राध्यापक डा०
 भोगीवास साहसरा मर साय बीकानेर प्राय । साहित्य गोष्ठी के प्रसंग में जब ऐसी रचनाओं
 की चर्चा कही तो आपने भी ऐसी एक प्रति मिली बतलाई । मन उस उनमें मगवा कर
 प्रतिलिपि करवा ली । उपलब्ध प्रतिमा में यह सबसे बड़ी है । इसके ४० पत्र हैं । फिर
 भा प्रपूर्ण है । सस विस्तार भय से इस प्राय का विशेष उद्धरण न कर कुछ बगन ही दिवें
 जा रहे हैं—

१ प्राय भाद्रपद मास, पूरइ विश्वनी प्राग । लोक नइ मनि पाइ उल्लाम ।
 जिउ नइ प्रागमि वरमइ मह न सानइ पाणीनी छह । पुनभव पाइ देह ।
 भला हइ दही, परीणां कोई नरे मनि सही । पृथ्वी रही महगही ।
 साचइ कादम माचइ, करसणि नागइ । नीपजइ सातइ धानि, देसनां प्रपान ।
 नाचइ दुकाल भावै वडइ गुमान । आदि ।

२ मगा पागइ जन नही, यधु पालइ जन नहीं ।
 मित्र पालइ हज नहीं, रधि पागइ तेज नहीं ।

पुत्री जन्म-

३ जठ पहिणउ बेटी जा- माइ बाप काल मुहा पा- ।
 जतु पर बी धावी, पूनि सावि बि-ता धावी ।
 बनी पर मम्पहो पाठ पातइ, नहि काटि निमाइ- ।
 जा हई यावि ताउ हइ यावि पावि ।
 हई बहरी, यद धनरा बेरी । घवाटइ भातती वहु मरावइ हानती ।
 कृम कसक अगाइ अकृती कनि मागुहि सागाइ ।
 धारणु पर गाव- पिरणु पर पोस- । धारणु कुस ईग- विरायु भूमइ ।
 पणइ न गुणइ, घोडस- अपमान कस- । न जाइ बेटी, धनरथ सांगि भनी ।

५-महत्त्वपूर्ण अपूर्ण प्रति

उपरोक्त प्रति का बाद ओजपुर के वैचारिकानाथ के महार का अक्षमादन करने समय एक
 अपूर्ण प्रति प्राप्त हुई जो १७ की संख्या की किसी हुई है । इसके १५७ अक्षर पुरे और
 १५० की अपूर्ण रह गया है । कई बगन बड़े ही धन्य हैं । इस अक्षर-पूर्ण अक्षरों के देने का
 भोम अक्षरणी नहीं दिया जा सकता—

१. कलिकाल-

सम्प्रति वर्तड कलिकाल, महा कूड कपट काल ।
 चाड चवाड़ साक्षात् हलाहलि, सासु बहु परस्पर कलि ।
 गुरु शिष्य जाइ खाव वलि, अन्याय कुरीति देग मडलि ।
 राज कुल रूधा खलि, राय राणा वर्तड छलि ।
 क्षत्रिय नासइ दीठइ दलि, भला माणस हुड तातलि ।
 पृथ्वी मद फल, मत्र सर्वे नि फल, जडी मूली रस विकल ।
 कुल स्त्री निरंगल, न्यायी राय तुच्छ दल । चरड बहुल, वाट पाडा तरणा कलकल ।
 धर्मगुरु चपल । पापोपदेस कुसल ।
 मिथ्यात्व निश्चल, लोक माया बहुल, अल्प मंगल ।
 इणि कुकालि, अदसपिणी कालि । अल्प क्षीर गाइ, निस्नेह माड ।
 भक्ष भोज निरास्वाद, स्त्री तरणी जाति अमर्याद ।
 रहस भेद, रसच्छेद । क्रूर सचना, गुरु वचना ।
 आउखा स्तोक, निवारिणजा लोक । देव वातली, भक्ति पातली ।
 अल्प मृत्यु, पणि पणि अकृत्यु ।
 वाप वेटी तरणा गरय सातड, आपणा छोरू कुखेत्रि धानड ।
 पाप जड, धर्मी खड । माचड अवगणियइ, भूठड वलाणियड ।
 गुरु शिष्य तरणड खमड, वाप वेटा नमड ।
 सासू पाटलड, बहु खाटचइ । ए कलि तरणा भाव ।

२. विरहणी-

हारोडती, वलय मोडती । आभरण भाजती, वस्त्र गाजती ।
 किंकरी कलाप छोडती, मस्तक फोडती । वक्षस्यल ताडती, कचुड फाडती ।
 केग कलाप रोलावती, पृथ्वी तलि लोटती ।
 आसू करी कचुक सीचती, डोडली दृष्टि मोचती । दीन वचन दोलती, सखीजन अपमानती ।
 थोडइ पाणी माछली जिम तालोचलि जाती, शोक विकल थाती ।
 क्षणि जोयड, क्षणि रोयड । क्षणि हसड, क्षणि रूसड ।
 क्षणि आक्रदड, क्षणि निदइ । क्षणि मूझड, क्षणि बूझड ।
 तेह तनु, सतापइ चदणू । कमलनाल, पुण मेलड जाल ।
 चद्रकानि ज्वलड, पुष्य शय्या वलड । हार भावइ अगार, कदली हर, मानइ जमहर,
 जे जन सीकर, ते उद्वेग कर । जड शीतलोपचार, ते करड विकार ।
 इणि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, विरहानल नीपजड ।

३. युद्ध-वर्णन-

विहु पखा वृहत् पुष्प सांचरिया, क्षेम मूडाविड ।
 विहु गमा मनद्व-वद्ध नीपना, सुभटे जरहि जीणसाल लीवी ।
 मयगल गुंडिया, मूंडादडि सुहवडि घातिया ।
 पच वल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरंगम पलाणिया ।
 बीर पुरुष महासुभट प्रगुण नीपना, चक्रव्यूह, गरुडव्यूह तरणी रचना नीपना ।

धारणागी शीतविद्या तर्प, श्रेणी, पादुकागी तारक तर्पि ।
 नतो इतरी यत् शीतदार वरतो, पागारिदापी धरती ह्यावय माहुरी ।
 पंच लला तला विधीन अमला उचलत्त, रग मुगो वासत ।
 निगाण धाम वासत । विदु मुम भात गदत ।
 विदु नमे मुमट प्राजा विपना दृषा सात्त, निधन, भात, तोर ठावर, नाराय प्रहरण पदुषा भागा
 विदु पना हादि हादि, शिनि शिनि, मादि-मादि ।
 नाठठ-नाठठ, भागठ भागठ । रनि परि मुमट लला गीतवापद ।
 नला धारणात्त । मुने विरग मय्या ।
 तेमम ममद-मूत्तया मया वरान मडम, भात्रवा सागा धनुमदम ।
 प्राणवा सागा निरसंद, पदुषा सापी शीत, तपी भा ।
 भात्रवा सापी मुमटनी काट कटि साधेवा सागा धर-वडम ।
 वात्रिवा सागा वचत्र विध प्रहार वचत्र मुजर पद ।
 गुनागागी मुमम तदवदद, भाव भरकीण मुमम धरदद ।
 वीरीया वरुता रात्रन इविपय ह्यत्, पात्त मुनिमा मुमम इत्त ।
 परिण पादक ग मगगीपद । द्विष हापिपी धारवागीपद ।
 मारत धाम उदवद । रीवण पदवद ।
 नदिदा पनामली पदि हाव, गीत रनि मया मुद धरवापद ।
 रद वच साः ती विरोदि वरहदद ।
 धागवचन अमलापी वरद, धारणात्त वात्र वद ॥ ११५ ॥

४ प्रभाग पत्तन—

प्रभाव ममद इत्त धारदार पीत्त ।
 व व लला सागा मुत्त, सागागी विरग ह्यत्, धारणा विरग विर ।
 वचदी सापी वृषि लला देव सागा धार प्रवदिदा, सागाविध मुने वरिणी ।
 धात्र वचदि रीताविध पदद विध सा ह्यत्त धारवा मुमम, नदिद म दि मदा ।
 सागागी लला वदि देव धारि विरगती धारिद म व र्नि वरणा वर ह्यत्त ॥ ११६ ॥

५ इलाती—

सागा भाव वदुवद र्निम हाव मय सापी उव का विरि लु वार्द ।
 विरिद व वर मय सागा शीतय धरिद ह्यत्त विरिद व र्निम सागा ।
 विरिदी धात्र मली वत्त वि वि वरिवा धारणा ।
 सागाध सागा वरवद व र्णी प्रवत्त, धरि वीर साव मममम विरिद व वरसागी धारणात्त ।
 मरणा धरिद लला वीदद मुम म सागा व वर व वत्त, वावद र्निम वरीदद ।
 वरुदिम धरणा विरद मुत्त धरिदी व व व वत्त ।
 ममम धरिद सागा धारणात्त वाव वीवत्त । व व व वत्त धरिदी वत्त ।
 मुद हागी वरि रीवद ॥ ११७ ॥ (विरि वरुत्त उवाच हे) ।

११७-११८-११९-१२०-१२१-१२२-१२३-१२४-१२५-१२६-१२७-१२८-१२९-१३०-१३१-१३२-१३३-१३४-१३५-१३६-१३७-१३८-१३९-१४०-१४१-१४२-१४३-१४४-१४५-१४६-१४७-१४८-१४९-१५०-१५१-१५२-१५३-१५४-१५५-१५६-१५७-१५८-१५९-१६०-१६१-१६२-१६३-१६४-१६५-१६६-१६७-१६८-१६९-१७०-१७१-१७२-१७३-१७४-१७५-१७६-१७७-१७८-१७९-१८०-१८१-१८२-१८३-१८४-१८५-१८६-१८७-१८८-१८९-१९०-१९१-१९२-१९३-१९४-१९५-१९६-१९७-१९८-१९९-२००-२०१-२०२-२०३-२०४-२०५-२०६-२०७-२०८-२०९-२१०-२११-२१२-२१३-२१४-२१५-२१६-२१७-२१८-२१९-२२०-२२१-२२२-२२३-२२४-२२५-२२६-२२७-२२८-२२९-२३०-२३१-२३२-२३३-२३४-२३५-२३६-२३७-२३८-२३९-२४०-२४१-२४२-२४३-२४४-२४५-२४६-२४७-२४८-२४९-२५०-२५१-२५२-२५३-२५४-२५५-२५६-२५७-२५८-२५९-२६०-२६१-२६२-२६३-२६४-२६५-२६६-२६७-२६८-२६९-२७०-२७१-२७२-२७३-२७४-२७५-२७६-२७७-२७८-२७९-२८०-२८१-२८२-२८३-२८४-२८५-२८६-२८७-२८८-२८९-२९०-२९१-२९२-२९३-२९४-२९५-२९६-२९७-२९८-२९९-३००-३०१-३०२-३०३-३०४-३०५-३०६-३०७-३०८-३०९-३१०-३११-३१२-३१३-३१४-३१५-३१६-३१७-३१८-३१९-३२०-३२१-३२२-३२३-३२४-३२५-३२६-३२७-३२८-३२९-३३०-३३१-३३२-३३३-३३४-३३५-३३६-३३७-३३८-३३९-३४०-३४१-३४२-३४३-३४४-३४५-३४६-३४७-३४८-३४९-३५०-३५१-३५२-३५३-३५४-३५५-३५६-३५७-३५८-३५९-३६०-३६१-३६२-३६३-३६४-३६५-३६६-३६७-३६८-३६९-३७०-३७१-३७२-३७३-३७४-३७५-३७६-३७७-३७८-३७९-३८०-३८१-३८२-३८३-३८४-३८५-३८६-३८७-३८८-३८९-३९०-३९१-३९२-३९३-३९४-३९५-३९६-३९७-३९८-३९९-४००-४०१-४०२-४०३-४०४-४०५-४०६-४०७-४०८-४०९-४१०-४११-४१२-४१३-४१४-४१५-४१६-४१७-४१८-४१९-४२०-४२१-४२२-४२३-४२४-४२५-४२६-४२७-४२८-४२९-४३०-४३१-४३२-४३३-४३४-४३५-४३६-४३७-४३८-४३९-४४०-४४१-४४२-४४३-४४४-४४५-४४६-४४७-४४८-४४९-४५०-४५१-४५२-४५३-४५४-४५५-४५६-४५७-४५८-४५९-४६०-४६१-४६२-४६३-४६४-४६५-४६६-४६७-४६८-४६९-४७०-४७१-४७२-४७३-४७४-४७५-४७६-४७७-४७८-४७९-४८०-४८१-४८२-४८३-४८४-४८५-४८६-४८७-४८८-४८९-४९०-४९१-४९२-४९३-४९४-४९५-४९६-४९७-४९८-४९९-५००-५०१-५०२-५०३-५०४-५०५-५०६-५०७-५०८-५०९-५१०-५११-५१२-५१३-५१४-५१५-५१६-५१७-५१८-५१९-५२०-५२१-५२२-५२३-५२४-५२५-५२६-५२७-५२८-५२९-५३०-५३१-५३२-५३३-५३४-५३५-५३६-५३७-५३८-५३९-५४०-५४१-५४२-५४३-५४४-५४५-५४६-५४७-५४८-५४९-५५०-५५१-५५२-५५३-५५४-५५५-५५६-५५७-५५८-५५९-५६०-५६१-५६२-५६३-५६४-५६५-५६६-५६७-५६८-५६९-५७०-५७१-५७२-५७३-५७४-५७५-५७६-५७७-५७८-५७९-५८०-५८१-५८२-५८३-५८४-५८५-५८६-५८७-५८८-५८९-५९०-५९१-५९२-५९३-५९४-५९५-५९६-५९७-५९८-५९९-६००-६०१-६०२-६०३-६०४-६०५-६०६-६०७-६०८-६०९-६१०-६११-६१२-६१३-६१४-६१५-६१६-६१७-६१८-६१९-६२०-६२१-६२२-६२३-६२४-६२५-६२६-६२७-६२८-६२९-६३०-६३१-६३२-६३३-६३४-६३५-६३६-६३७-६३८-६३९-६४०-६४१-६४२-६४३-६४४-६४५-६४६-६४७-६४८-६४९-६५०-६५१-६५२-६५३-६५४-६५५-६५६-६५७-६५८-६५९-६६०-६६१-६६२-६६३-६६४-६६५-६६६-६६७-६६८-६६९-६७०-६७१-६७२-६७३-६७४-६७५-६७६-६७७-६७८-६७९-६८०-६८१-६८२-६८३-६८४-६८५-६८६-६८७-६८८-६८९-६९०-६९१-६९२-६९३-६९४-६९५-६९६-६९७-६९८-६९९-७००-७०१-७०२-७०३-७०४-७०५-७०६-७०७-७०८-७०९-७१०-७११-७१२-७१३-७१४-७१५-७१६-७१७-७१८-७१९-७२०-७२१-७२२-७२३-७२४-७२५-७२६-७२७-७२८-७२९-७३०-७३१-७३२-७३३-७३४-७३५-७३६-७३७-७३८-७३९-७४०-७४१-७४२-७४३-७४४-७४५-७४६-७४७-७४८-७४९-७५०-७५१-७५२-७५३-७५४-७५५-७५६-७५७-७५८-७५९-७६०-७६१-७६२-७६३-७६४-७६५-७६६-७६७-७६८-७६९-७७०-७७१-७७२-७७३-७७४-७७५-७७६-७७७-७७८-७७९-७८०-७८१-७८२-७८३-७८४-७८५-७८६-७८७-७८८-७८९-७९०-७९१-७९२-७९३-७९४-७९५-७९६-७९७-७९८-७९९-८००-८०१-८०२-८०३-८०४-८०५-८०६-८०७-८०८-८०९-८१०-८११-८१२-८१३-८१४-८१५-८१६-८१७-८१८-८१९-८२०-८२१-८२२-८२३-८२४-८२५-८२६-८२७-८२८-८२९-८३०-८३१-८३२-८३३-८३४-८३५-८३६-८३७-८३८-८३९-८४०-८४१-८४२-८४३-८४४-८४५-८४६-८४७-८४८-८४९-८५०-८५१-८५२-८५३-८५४-८५५-८५६-८५७-८५८-८५९-८६०-८६१-८६२-८६३-८६४-८६५-८६६-८६७-८६८-८६९-८७०-८७१-८७२-८७३-८७४-८७५-८७६-८७७-८७८-८७९-८८०-८८१-८८२-८८३-८८४-८८५-८८६-८८७-८८८-८८९-८९०-८९१-८९२-८९३-८९४-८९५-८९६-८९७-८९८-८९९-९००-९०१-९०२-९०३-९०४-९०५-९०६-९०७-९०८-९०९-९१०-९११-९१२-९१३-९१४-९१५-९१६-९१७-९१८-९१९-९२०-९२१-९२२-९२३-९२४-९२५-९२६-९२७-९२८-९२९-९३०-९३१-९३२-९३३-९३४-९३५-९३६-९३७-९३८-९३९-९४०-९४१-९४२-९४३-९४४-९४५-९४६-९४७-९४८-९४९-९५०-९५१-९५२-९५३-९५४-९५५-९५६-९५७-९५८-९५९-९६०-९६१-९६२-९६३-९६४-९६५-९६६-९६७-९६८-९६९-९७०-९७१-९७२-९७३-९७४-९७५-९७६-९७७-९७८-९७९-९८०-९८१-९८२-९८३-९८४-९८५-९८६-९८७-९८८-९८९-९९०-९९१-९९२-९९३-९९४-९९५-९९६-९९७-९९८-९९९-१०००

चुकी है और जिनसमूद्रसूरि और शातिसागरसूरि संबन्धित १६ वीं शताब्दी के वर्णन 'राजस्थानी' भाग २ में प्रकाशित हो चुके हैं ।

ऐसी ही कतिपय वर्णनात्मक रचनाएं चारण कवियों की प्राप्त होनी हैं जिनमें से खिटिया जगा की 'रतन महेशदासोतरी वचनिका' एगियाटिक सोसायटी बलकत्ता से प्रकाशित है और 'खीची गंगेव नीन्द्रावतरो दोपहरो' और 'राजान राउतरो वात वणाव' राजस्थान पुरातत्व मंदिर से प्रकाशित हो रहे हैं । ये दोनों भी महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं ।

राजस्थान में लोकवातांगों को कहने का ढंग भी बहुत छटादार, वर्णनात्मक, तुकान्त और निराला है । उसमें वर्णनीय प्रसंग साकार हो उठता है । वात कहने वाला जहा जहा भी प्रसंग मिलता है उसका वर्णन बड़े ही विस्तार से प्रसंग के अनुकूल करके श्रोताओं को अपनी ओर ऐसा आकर्षित कर लेता है कि वे अन्य सारी बातें भूल कर वात सुनने के रस में निमग्न हो जाते हैं । श्रोता रातभर उसी रस में सरावोर रहता हुआ समय का अन्दाजा भूल जाता है और कहानी-कार छोटी सी बात को इतनी लम्बी और छटादार बनाये जाता है कि जिससे कई दिनों तक वह बात चलती ही रहती है । शहरी वातावरण अब इसके अनुकूल नहीं रहने से राजस्थान में वातों के कहने की जो विशेष शैली थी, अब लुप्त होती जा रही है । रसिक व्यक्ति गावों में आज भी इसका रसास्वाद कर सकते हैं । प्रस्तुत लेख द्वारा विस्मृति के गर्भ में विलीन हो जाने वाली इन वातांग शैली और वातों को चिरस्थाई बनाने के लिये ध्यान आकर्षित किया जाता है । गुजरात में लोक-साहित्य और वातांग के संग्रह का जैसा अच्छा प्रयत्न हुआ है, राजस्थान के साहित्य-प्रेमियों के लिए भी अनुकरणीय है ।

प्रस्तुत लेख में जैसी वर्णनात्मक रचनाओं का परिचय दिया गया है—खोज करने पर और भी कई रचनाएं मिल जाने की पूर्ण संभावना है । जैसा कि पहले कहा गया है उपलब्ध प्रतियों में तीन महत्वपूर्ण प्रतियाँ अभी अपूर्ण रूप में उपलब्ध हुई हैं । उनकी पूर्ण प्रतियाँ भी अन्वेषणीय हैं ।

ऐसी वर्णनात्मक रचनाओं के विविध नाम प्राप्त हुए हैं । वाग्विलाम, सभाशृङ्गार, मुत्कलानुप्रास, वचनिका—ये पुराने नाम तो मिलते ही हैं । स्व० देसाई ने तुकान्त की विशेषता को लक्ष्य करते हुए इनकी सजा 'पद्यानुकारी गद्य' शैली बतलाया है । यद्यपि १५ वीं शताब्दी से पहले की कोई ऐसी रचना लोक-भाषा में अभी तक प्राप्त नहीं है, पर पृथ्वीचन्द्र चरित्र में इस ग्रन्थ से पहले भी यह शैली प्रचलित रही होगी ऐसा प्रतीत होता है । १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक राजस्थान और गुजरात की भाषा एक जैसी ही थी अतः इन रचनाओं में से सभाशृङ्गार में गुजराती भाषा का पुट अधिक देखा जाता है । प्रथम शुद्ध राजस्थानी में है और अवशेष तीन अपूर्ण रचनाओं की भाषा दोनों प्रान्तों के लिये समान सी होने से इनका रचना काल १६वीं शताब्दी ही होना विशेष संभव है ।

—श्रीअगरचन्द नाहटा

खीची गगेव नीवावतरो दो-पहरौ

गगेव खीची काग भडा खिनाड,
 बैरिया जडा उपाड
 निगाणी मेल रू घणाय,
 सुलिया मन प्रमन वाय
 वरगा रितु लागी,
 बिरहणी जागी
 आभा भरहरै,
 बीना आषाम करै
 गी ठेवा गायै,
 मगुठे न समावै
 पहाडा पागर पड़ी,
 घन उपडी
 मोर मोर मई,
 इड धार न खई
 आभा गानै,
 मारग धानै
 शान्त मेर नै दुयो ह्यौ,
 सु दुगियारीरी आग ह्यौ
 १५ लागी,
 शरीर रूड भागी
 गदुरा हरिहरै,
 गगन वागरीती निभ करै

इसौ समझ्यौ वण रती छै
 वरगा मडनै रही छै
 खिचडी मिलोमिल करनै रही छै,
 गण्डा भड लायौ छै
 सेहरा-सेहरा बीन चमकनै रही छै
 जाणै कुळटा नायका घरसू नीसर
 अग गियाय दूमरै घर प्रवेम करै छै
 मोर कुटनै छै,
 देहरा बह्यै छै
 भागरारा नाळा बोलनै रहा छै
 पाणी नाडा भरनै रहा छै
 चोटडियाळ हटपनै रही छै
 घनमपनीमू बला लपनै रही छै
 परभातरी पाँर छै
 गाज-आवाग ह्यनै रही छै
 जाणै घटा घणै हरममू नमीम
 मिलन आयी छै
 इम वरन मगडयौ
 गगेव नीवावत खी छै,
 मनरी गग लायै ?
 मैला गिभागरी दुयो ह्यौ छै,
 भाड गगव माहगियाँ ह्यम

हुवो छै

तयारी कीजै छै.

मन - जाणिया हथियार - पोसाख
लीजै छै.

घोड़ा दही कटोळसूं संपड़ाइजै छै,
फेर उजळै पाणी नहाइजे छै.

हजार घोड़ा तयार कीजै छै,
चौकडा - लगाम दीजै छै.

सू घोड़ा कुण जातरा छै, कुण रंग
भातरा छै ? — औराकी आरवी तुरकी
खंधारी ताजी सिकारपुरी धारी काडी
माळवी हवसानी पूरवी टांघण पहाड़ी
बिन्हाई — और ही अनेक जातरा घोडा
तयार कीजै छै.

कुमेत नीला समंदा मकड़ा सेली
समंद, भूवर वोर सोनेरी कागड़ा गंगाजळ
नुकरा केला महुवा धूमरा हरिया लीला
गुलदार पंचकल्याण पवण गुरइ संजाव
संदली सीहा चकवा अवलख सिराजी.

फेर ही अनेक रंगरा घोड़ा तयार
कीजै छै.

साखत जीण काडीजै छै.

तिके जीण किए भांतरा छै —
गुजराती कसमीरी कमूरी मारवाड़ी दखणी
मिरजाई भटनेरी लाहोरी हजारमेखी घणी
रंग-रंगरी वनात मुखमल कलावूती सोनै
रूपैरा वाणिया जीण हाजर कीजै छै.

जीण माडजै छै.

केसवाळी रंग - रगरी गुंयजै छै.

अगाड़ी - पछाड़ी खोलजै छै.

रेसमरी वागडोरासूं आण हाजर
कीजै छै. किसा हेक घोड़ा छै ?

वे पख भला, ऊचा अलला,
कटोरा नग्वा, आरसी सारीखा.
तिअंगल गाळा, मुठिया वील फळा.
निमंसी नळा, गोडा नाळेर फळा.
उर दाल अँसा, कूकड़ कंध तँसा.
आंख पाणी मोती तवा,
लिल्लाइका वेठा नवां.

जळ अंजळ पीवै,
कनोती लोय दीवै.

मगर लादक अछी,
छोटी पड़छी.

पूठ वाथां न मावै,
पूछी चवर दावै.

फीचां धनव जैमी,
काछ नारगी तैसी.

अँसा घोड़े राव चाकरां हाथांमें
कादणा.

सू मोर ज्यू तंडव करै छै,
निकुली ज्यू अंग भांजै छै,
मग ज्यू उल्हसै छै.

भागा काला मांकड़ां ज्यू भांफां
भरै छै.

निरत कारण ज्यू नाचै छै,
नट ज्यू उळटां खावै छै.

डोरमे थका ओकी - बेकी करै छै.
आंखका गोसा सिन्वके जैसा.

मनका गगाजळ,
सुकलीणी ज्यू छटां ऊजळ.
अँसा हजार घोड़े राव आण हाजर
हुवा छै.

तटा उपरायंत गंगेव नीवावतका
भाई - भतीजा उमराव हजुरी पोमाखां

करै छै कमूल नेमरिया हरी सपन
सपतालू सोसनिया नारगिया मपेत

जाणै निचाराकी राधी फूली छै
उपर उणहीन उणता हथियार
धाधनै छै

तरवार कटारी ढाल छुरी तरगम
बदूष परछी गिलोल गोफण चूरुमार
और ही भात भातरा आवध सभिया
थमा वीरु पगारै छै

मू त्रिण भातरा छै —

फाल्हीरो कळम,
मनीरो नाळेर,
तोरणरा आग्या,
कुमारी पडारा वीर,
गाण्डरा गाहा,
पौनारा लाटा,
पाता कुम ज्यू काया जाणै,
परायो छठी जाणै,
रिहलो तज, भूमियो लोण लिया रणै,
काड पाव निरुळक

तडा प्परायत गंगेव नीजावत बाहर
पगारै छै मू त्रिण भातरा छै ?

उगतो मूरज,
पायामररा राम,
कुयरापत कुयर,
जळहर तबाध भोगी भयर;
कमगारयो घिप,
सापियो मिप,
भीरु गमय,
दुरबाधन घामेय,
अनुज न्यू माध,
दुग्यामा पाव

ग्यानरो गोरख,
महदेव ज्यू मारी वात मभरथ,
अरजुन ज्यू बाण,
ररण ज्यू दान पाण,
वत्तीस आणडीरो निजाणहार,
रैरिया त्रिभाडणहार,
पर भाम पचायण,
घण त्रियण, जम लियण,
रुळायरो मोर,
सुधै भीरु गात,

केसरिया पौसाध त्रिया, पाव
हथियारा बाधा आण घोडै अमवार
हुनै छै

नगारै इक टफो रागो छै,
मीर मिकारानै हुम हुयो छै
यान, जुररा, कुनी, बहरी, मिफरा
लगड, चिफर, तुरमती माध लीनै छै
चीतेराणानै हुम हुयो छै
चीता माध लीनै छै,
घोडारी पूठ तग्या उपर घैठा छै
आग्या आटी कूट्टै छै
मरुजायतरा पटा, रुपैरो भवर
कड़ी, वेमगरी देर

तिठे चीता कटारा छै ? मरोन्रा,
आधोरा, दरावररा, राफरा, धनेर
पहाडारा, ईदररा, दुाराग, आनारग
पहाडारा, पावररा धजारा, पारवररा
विहटारा उगा चीता माध भीरु छै

तरानै हुम हुयो छै कुनारा
राण कूट्टै छै लाहोरा नात्री मर पाण
गिलवा पहाडी निगारो मूठध मोण
गळ, पाव भर नय, वहरै पाव त्रिमा

करवानका ऊपर जुपरा छूटै छै तिलारा
ऊपर वासा छूटै छै लवा ऊपर मिकरा
छूटै छै बटेरा ऊपर तुरमती छूटै छै
घोबड़ा ऊपर चिपक छूटै छै बुरजा ऊपर
लगड छूटै छै कुलगा ऊपर कुही छूटै छै
इण भात देसौत राजेसर सिक्कार येले छै

घोडा दौड रखा छै होमारा दगामो
हुय रहो छै जितरै बीच थोहर भाडारा
मिडा माहा सरगोस उठिया छै सू किय
भातरा छै ? मोटा घेदा छै तोनडिया छै
घणै लीलै जड़ी-बूटीरा चरणहार, पाहरै
पाणीरा पीरणहार तिका ऊपर कुतारी
डोर छुटी छै बाठ वोभा कूदै छै पुचली
साय रखा छै ठुलीरी, गोफणरी, तीरारी
चोटा हुय रही छै के घोडा आरपडै छै
घोडारा पगासू काफरा-पथर उखळै छै

इतरै बीच हिरणारा डार आय
नीसरै छै तिके किय भातरा हिरण छै ?
काळा घडा वेगड़ छै, मुहडारै डारमे मेघ
हुय रखा छै माहे राग छै जिके कूड-उखळै
छै, रीगटा हिरण छै, सुन्न आइ हिरणीनै
घेवता फिरै छै सगळो हिरण निमळिनै
घेचे छै इय डार करोला मुहडै आगै आण
काडियो छै तिन ऊपर चीता छूटै छै
शुलका दूर कीनै छै तमासो वण रहो छै

इसै समइयैम भालुवा आण अरज
कीरो छै भातरा खुडा वेहडा माहा
सूपर नीचा उतरिया छै राजाना दमोता
सूपरा सामी वाग लीरो छै फड़कडा
फस्यदाया जायै छै इसैमे सूपर नचरा

पडै छै सू सूपर किय भातरा छै ? भूरा,
कवळा कोई अवतर छै डार ओके पासै
छै ओकल ओक तरफ छै सू ओकल किय
भातरा छै जैरो वारह आगळ गग
लीडीस्ट छै, काधो-पूठ ओरु मारयो छै
गुळवाड गोहू जय चिणारो, जुनारो
चरणहार छै मयमत छै सू चर चर
फरणिया आया छै माहुपारा सताया
थोहरनै भाडरा मिडा सुपमे छै घूड वाहै
छै सू जडा समेत उरपड नायै छै इसा
मुनारा मोरा ऊपरा राजाना घोडा
लगाया छै बरडियारा धमोडा लाग रखा
छै चूकमारारी खाटखड लाग रही छै
कैई घोडा मुनारा तूडासू उखळ परै पडै
छै तरवारा वहि रही छै कटारी वहि
रही छै कैई सेल्ह तूटै छै कैई आधो
सलै छै सुवर मारजै छै उटा ऊपर
घातजै छै.

इसै समइयैमे धूप तपै छै रातरा
अमलारी मुमारिया देसौता राजानानै
तिल लागै छै तद् नाडी साम्ही वाग
वाळी छै मिजार मरय ओक ठोकर
रहकला उठा ऊपर घातनै छै होम माणण
तळाव आया छै

तिरो तळाव मिय भातरा छै राती
बरडीरो पाडरो नीर पवनरो मारियो
पीण आछटतौ थकौ भोला हाय रहो छै
लहरा लियै छै अयग डोर छै कडिया
सुयै पाणीमै पैठा पगारा नग भाग्यै छै
दूधरै भौळाथै मिलाव वामीनै छै ऊपर
कुजा, मारसा गहकनै रही छै डेडरा

घडियोडा, रुपैरा मानेरा नरुस छै
फोफलिया रुपैरा लागा छै फळा उपर
वनातरा मुयमलरा चकारा लगायजै छै

तठा उपरायत तरगसारा कुलावा
डूटै छै सू तरगस कुण भातरा छै ?
लाहोर कसूररी बणी ठानी, घणी वनातमे
लपेटी थकी, घणै कलावूतसू गूनी थकी,
रुपैरी कुहरी कुनडी जीभी लागी थकी,
तिके ठानी साठ साठ तीरासू भरी थकी
तिके किए भातरा तीर छै ? गुजरातरी
नीपनी साठी, गाडे गाही, सात गार
सचै मारी, लाल स्याह रग, गजवेल
नाणैरा पैगाम छै, उपर सोहैरी नरुस छै,
सुरसाणरा उतारिया, माठीरा तिलारिया,
उपर रुपैरा माना छै, पीतळ तावैरा झला
छै, नातरी चौम्डी छै, तिलौररा परारा
छै, नातरा सुफाळा छै, सोहैरी हळ
लिराी छै, नचमूठरा तीर छै इसा
तीरासू ठाठा भरिया एका सू उणहीज
उडा पीपळारा दरपतामू नागळजै छै

तठा उपरायत कमाण कुरमाण
माहे मेलजै छै तिके कमाण किए
भातरा छै ? नारै वरम दरियाग माहि
जहाना हेठै उधी थाइ चिलेवाइ हकारा
करती गुण-भार वकी अठार टके
अमली जानी पठाणरी बेटी ज्यू तुही तुही
गरती थकी, थलोचणी ज्यू लचकार करती
थकी, इण भातरी कमाण उणहीज
दरगतरा सात्रामू नागळजै छै

तठा उपरायत ढालारा अलीउध
सुले छै सू ढाला किए भातरी छै

सिलहटी छै सुघ गँडारी आरणारी छै
घणारी मारी वधै छै चाहै महीना सचै मे
रहै छै मोहर तोलैरो रोगान रग लागी
ठै तरवार मटारी बरझीरा गव ही
न लागै छै सुवररी नातरी लागै तो पण
रडक न उतरै गोळी लागै तो उळळ
पाथी पडै मोनै रुपैरा चाद फूल,
मुयमलरी गादी, सावरा हथौसा,
वोयदाररी डाना कसा इण भातरी ढाला
सू उणहीज दरगतरा मायासू नागळीजै छै

तठा उपरायत तरवारियारा
कमसारिया खुलै छै सू तरवारया किए
भातरी छै ? सीरोहीरी नीपनी, वे आ
अगला बाढ केरिया थका जनैर मगरेन
पुडतमाळ सेफ मिलायती गुनरी निराणपुरी
हवमानी फिरगी सू म्यान माहा बाढ
घाममे नागजै तो पाणीरै भौळारै
जनायर टग बाहे उगतरेमं वाही नोय
टुक करै चौरगमे वाही थकी मीरसिरो
चलणिया सार गाढै लोहमे वाधा थका
नालछो ही न पडै सू घणै मुयमल
वनातरा म्याना माहे लपटी थकी, घणी
मोनै रुपैमे जडी थकी, घणी बुलगाररै
साजम लपेटी थकी, उणहीन ढालारा
गडगणमे मेलजै छै

तठा उपरायत कगरयारा कमर
वॉधा उठै छै सू कटारी किए भातरी छै ?
निराणपुररी, रामपुररी, नूनीरी, राजासाही,
आडागी, अडाई, भोगहीरी, कोतामानी,
पाढानीभी, घणै सोनैम नकोळी थकी,
नन नगा राधास भरी थकी, उणहीज

सेल्हां वाफ्तांरा कमरबंधांमें लपेटी थकी,
उणहीज ढालांरी आंचांमें मेलजै छै.

तठा उपरायंत पेटीरा कसा छूटै
छै. सू पेटी कुण भांतरी छै? असल
दाणांदार वोयदाररी छै. तैरी खसवोयरा
लिया भंवरा गुंजार करै छै. वीस-वीस
पांवडां खसवोयरा डोरा छूटै छै. जाणै
गांधी हाट पसारी छै.

तठा उपरायंत वागांरा चिहरबंद
छूटै छै. सू क्ण भांतरा वागा छै?
सिरीसाप भैरव चौतार कसवी महमूदी
फूलगार अध-रस सेला वाफ्ता डोरिया
मोमनी तनजेव सासाहिवी तरै-तरैरै
कपडैरा वागा छै. सू उतार-उतार उणहीज
दरखतांरी साखा ऊपर उरळा कीजै छै.

तठा उपरायंत चरणांरा गिरदाना
मोकळा कर जाजमां गिलमां ऊपर वैसजै
छै. पावां लपेटा उतार ढालांरा गडगदांमे
राखजै छै. वाफ्तांरा सैलांरा रुमाल
केसरिया छै सू माथां ऊपर राखजै छै.
वीभ्रणांसू वाचेरा लीजै छै. सू क्ण
भांतरा वीभ्रणा छै? लाहोररा कियाड़ा छै.
रूपैरी डांडी जरीसू मढी, टुकडीरी भालरी.
सू वणी थकी खवास-पासेवाणारै हाथ
छै, फरास वडां फरासी पंखांसू वाचेरो घात
रह्या छै. मातै हाथी ज्यू हीड रह्या छै.
तीन भांतरो पवन वाज रह्यो छै - सीतळ
मंद सुगंध. गरमी मिठायजै छै.

तठा उपरायंत राजानां मलूक
कुंवरांर साथ सारु कलालीरो हुकम हुवौ

छै. तिजारो मंगायजै छै. निको तिजारो
क्ण भांतरो छै? तासणीरी वाडीरो
नीपनो उकनीम ताडीरो, नाळेरमो मोटो,
खोपरा वडरो, गरीरै दळरो, हाथसू इट
पडै तां काचरी मीसी ज्यू किरचा-किरचा
हुय जावै. पाणीमें घानियां थकां टहि
जाय. इण भांतरो तिजारो सू गोरो
भूवरियां पुंहचांमू दुजण साखां कटोरांमें
भजा जुवान मन्कावै छै. वेवडी गळणीमू
ांखची चाढ धाणजै छै. ऊजळा रुपोटांमे
घात मुनहारां हुयनै रही छै.

तठा उपरायंत अमल मंगायजै छै.
सू अमल क्ण भांतरो छै? थेट आगरा
ही काळू केकीनरो नीपनो. भूरो थटाई
अरोडी नहलिया भोजपुरावटी. सू
आगराही अमलरी चकी वंक्र्यां छुरयांसू
मिरीवढ कीजै छै. केसरिया पोतां
रुमालांमें घातजै छै. अरोडी गाळजै छै.
भोजपुरीरा पला कीजै छै. मुनहारां
हुयनै रही छै. अमलांरा जमाव कीजै छै.
अमलांरा तंडल रोपजै छै. अमलांरी
नीवां दीजै छै.

इसैमें भांगेसुर मंगायजै छै. सू क्ण
भांत छै? केसररी क्यारी दोलळी,
वासग-माथारी. थोहररा विडारी,
भाखररा खुडारी, भूरै मोररी, काळ
पानरी, आवूरा विहडारी, भमरमार
मिरघमाळ लारियाळ चिडियाळ
चोटडियाळ. अक पान अडगरियां पान
अक पान अहमदावाद. पान-पानरो रस
लीजै छै तिण भांग सारु मसाला

मगायजै छै जायफळ लाग इळायची
मिरच विरहाळी अजू नागव्हेसर भमरटटी
तज तमालपत्र तत्रोल प्रत सवी श्रीर ही
मसाला मगायनै छै मिश्री कालपी
गगापाररी मगाय कोरा घडाम
भिजोयजै छै

तठा उपरायत इलरारी कूडी
तेजवळरो घोढो धोय तयार कीजै छै
भागण धीण मोकळा पाणीसू धोयजै छै
फेर कोरी हाडीमें राधजै छै तठा पळै
घोटजै छै भला मोटियार होमनाफ
जुवान प्रणवै छै त्रेडडा गळणासू
मचराय काढजै छै इसी जाडी काढजै
छै मायै टीमो काढजै तो नीसतै,
पनरी भारी मोक ठाहरै इण भातरी
भाग काढ तयार कीजै छै कसूयानू
होसाकार पन करै छै मू रूपोटामें लिया
रगस पासेवाण हाजर करै छै मुनहारा
हुचै छै देसौत आरोगै छै अमला चान
हयनै छै

तठा उपरायत जागडियानै दुरुम
हुवौ छै मू भजन टयाल गावै छै माता
हाथी गजराज पटामर ज्य भोला रावै
छै सहनायची सहनाया माहे सारग
वणायो छै

तठा उपरायत सिरदार देसौला
तळावमे भूलागरी हास करै छै लाल
लागोरी पोता पहरजै छै घडनावा
वणायजै छै सू लै तळावमे घडजै छै
हामो तनासो कर रखा छै, माथरा जूडा
वेंसारा छुटा छै सू कित्ता नजर आवै

जाणै काळा त्रासग तिरै छै जळ डोहि
रखा छै जाणै रेवा नदीनै हाथ डोहळ
रखा छै इमो समश्यौ प्रणै रहो छै
चिसैमे पाणीमे तिरता मुरगानी ननर
आवै छै निमणै सिकारै पगा वदूका
गिलोला मगायजै छै मू वदूका किए
भातरी छै ? गगा-पाररी, सीहन-
समियाणैरी लाहोरी कनाटकरी
किरगरी थनरी घणै सोनै रूपमे
गरकान कीनी थकी नकसतार जाणै
गोडियै नागण लायी कीवी छै दूसरो
वीनरो मळाव सीसू पीळियै दुधैरी
लकडीरा कुदा छै रूपैरी ताराका कोकडी
सीरम सपतैरा वध छै वीयतारी डावा
छै कमूल सूतरी लपेटी जामकी छै
रूपैरी प्रनातरी मुग्गमलरी कुदार पीनी
वण रही छै मुडया साकळी रूपैरा
चमकनै रखा छै मात सात विलदारी
लागी रोळी मेण रुपडरीसू वाहर
काढजै छै जाणै वाणळ माह वीज
नीसरी आकासरी, कना तीजरै तमासै
मारु पातळी कामणी पोसाय कर
नीमरी, इण भातरी वदूका मोटयार
तिरता तिरता लेय उण घडनावा
अग्या छै

गिलोला किए भातरी छै ? घणै
सोग लकडीरी जोडी, घणी पय मरेमरी
पचायी, कमाणरै घाटरी, ततरा मोगरा
लागा थना घणी सोनैरी हळरी लिपी
जगाळी रगरी, नवे चढावरी तात,
देसमैरो मेणन गृथिया वका, राजाना

देमोतां ह्याथां दीजें छे. कुंभारी
कमायोड़ी, हथाळीरा मारिया, धुईरा
पचाया, नीचुवै वाटरा. इण भांतरा
गिलोला हाथ दीजें छे.

उणहीज वट्टकां गिलोनांम्
मुरगाव्यांनं चोटं कीजें छे. तमाभो
हुयनै रहो छे. निकार मुरगावो थ्रेकठी
कर तब्बावसू वाहर पधारजें छे. लीली
पोता दूर कीजें छे. चरणा पहरजें छे.
सू किए भांतरा चरणा छे ? इलायचैरा
मिसरूरा गुलवदनरा मालनेरीरा
वाफ्तांरा, चाळीस चाळीस हाथांरा छे.
गिरिया डोवरे समा नाडा छे. मू चरणा
पहर जोड़ी पगां वातजें छे. मू जोड़ी
किए भांतरी छे ? लाहौररी पिमोरी
वणै वनान मुखमलरी लपेटी थकी, वणै
कलावूतसूं गृथी थकी, पैहरजें छे.

तठा उपरायंत पाङ्गलै पोहररी
ढळती ह्यायारी विसायत कीजें छे.
देसौत सिरदार जाजलमां पधारै छे.
केस सुंवारै छे. मोगरैरी वेल केवडैरे
तेलसू केस सुथरो कीजें छे. दांतरा
छलांरा चंदणरा चखड़ीरा कांगसियांम्
केस सुंवारजें छे. केसांरा जूडा वाधजें
छे. ऊपरा मखहूलरा डोरा वाधजें छे.

तठा उपरायत गोठ साहू वाकरा
मगायजें छे. रवारियानै हुकम हुवै छे.
परगना मांहां वाकरा दही ले आवो.
सू रवारी ऊंठां आवै छे. किए भांतरा
रवारी छे ?

ठीघा लांचा जुवान दीमता राजान,
वांकी म्छां, राता नैण,
आमी डाटी, मांटा घैण,
जाडा पुंछ्या लांचा हाथ,
भृखं मियनै घानै वाथ,

इण भांतरा रवारी ऊंठांनै फानै छे.
मू ऊंठ किए भांतरा छे ? थापवीतलीरा,
सुपवीतलीरा, नाळेरा गोहारा, वीलफळ
इरकीरा, हथाळिये ईडररा, ममा सेरी
वगलांरा, घाट वाजोटग, वाधमे कांवेरा,
कसनूरिया पटारा, कौरवै वानरा,
दामकर्म माथेरा, लोकवे नाकरा, तजिये
होठरा, कवाडियां वाता उधरै पीडरा,
परघळां आसगांरा, कांगरै थूचरा,
मांटे पृटेरा, छाटे पीडांरा, फामरै
पूंछरा, भुवरिये तरा, चोळमै रंगरा,
लांचिये मीह ज्यू लकां चढिया थका,
भागा गाडा ज्यू वटठाठ करता थका,
वेत्या ज्यू भाला करता थका, मातै हाथी
ज्यू हुंकारा करता थका. इमा ऊंठ
मेकजें छे. हाथ फेरज छे. पीतळरा
गोरवाण रुपरा कड़ा छे. ता माहे
मोहरा बोलचै मोहरा वातजें छे. लूवां
कवडाळा वळेवडा वातजें छे. लाल
सिलेहटीरा पड्ड्यां गाथां वातजें छे.
ऊपरां पलाण मेलजें छे. मू किए भांतरा
पलाण छे. सीसूरै काठरा, वणै लोह
पीतळसू जडिया थका, रुपैरी फूलड़ी
लागी छे. दांतरै कामम् वणिया थका.
वनातरा मडिया औ कुपीतळरा वाजणा
पागड़ा, कड़ी कुहटै गाळो ओकडा

सातरा, पदाडारा चोलुवा वणाय्या थका,
कागा कसणा कीया थका, चढ
राडिया छै

गाव-गाव माहा दहीरा कळस
मेल्हजै छै श्रेणडा माहा वाकरा
उठायजै छै सू किए भातरा गान्ना छै,
रातडियै रिणारा, उनळा थळारा, घणी
गागुणण हीगणणारा चरणहार, पणै
वाचर तूणैरा चरणहार, गुवार
चिडी-मोठरा खानणहार, भाहरै माग्ना,
कडकती नळीरा, कनाडिया दातारा,
फमरसूना उचा, चिलकना मोरारा,
माट्टरै खेतारा, मादळिया पेटारा,
गालगामी मोण्डा सोडै गील्हेरीरा
चरिया फुरणियारो प्रैसणहार, फभट्टे
कनेडैरा सुरडणहार, आयणैरा चरणहार
सो- उहा उठा उपर मसकारी पर
नेय दोय ग्राघजै छै चलाया आया छै
राचानाम् आय मुजरो कियो छै

गाकरानू प्रको फरणै पगा
अलघळिया मोण्णारानू हुक्म कीजै छै
सू असीना सीरोहिया लेनै उठिया छै
मलकती वीरा भरै छै जाणै पागामररो
दस मोती चुगण चालियो छै नेय-नेय
गाकरारी सिन्हाडनै ठरना हुणै छै
तरवारारा छणमार हुयनै रखा छै
चौंगारी त्वाण्णड हुयनै रही छै क-रोरा
माहे फल लीनै छै गान्ना होमनाम
यम् कानै छै नमौत खा घोय हाथ
उजळा कर विसायना उपर गिरानमान
रवा छै

तठा उपरायत हुमारी होंस कीजै
छै चाकरानै हुक्म हुवौ छै हुका तयार
कीजै छै किए भातरा हुका छै ? मोनैरा,
रूपैरा, विन्नी, राखोळ ठाढा पाणीसू
भरजै छै नीचै सुयरा विद्यायजै छै
ऊपर हुका मेल्हजै छै नमचा सरद
कीनै छै

सू नमचा किए भातरा छै ?
वोटीया, चौगानिया, घणै घनातरा
लपेटिया, साल्ता लपेटिया, वीयणारा
मडिया, चैतरा, कलावूतरै कामरा, मोनै-
रूपैरै वळारा, रूपैरा कुलाग लाग थका,
सोनैरी टूटी, रूपैरी चिलम, चिलम-
पोस छै

तमाङ्क वणायनै छै सू किए
भातरा तमाङ्क छै ? सूरत नीपनो, तावैरै
रगरो, जाडै पानरो, करडी ढावळीरो, सू
इण भातरा तमाङ्क सू चिलमा भरजै छै
उपरा थोहरा आकरा कोयलारा
चिलमिया मेल्हजै छै जाणै सहिजाणैरा
ताइन, नभूत लगायोडा जोगीसा छै
निणारी होंस माणनै छै मधरो-मधरो
राचजै छै घरराटा हुयनै रखा छै जाणै
आभो मधरो गाज छै धुवैरो टोरो ला
रहो छै सू जाणै आसागरी गाली श्रोमा
वहै छै

तठा उपरायत वसणोय मगायनै
छै, सू अतर किए भातरा छै ? गुलापरो
चनणरो फिनरो बुररो वसरो फरणैरा,
सू मीमी खुली छै सीरा भर भर
गान्जै छै, लगायनै छै, मुनदारा कीनै छै

तथा उपरायंत पुराणै अगारो चिकायो संधो मंगायजै छै. सीसी खुलै छै. मोतीपुडैरी सीपरा प्यालांमें घात हाजर कीजै छै. संधो वगलां लगायजै छै.

तथा उपरायंत केसर मगायजै छै. सू केसर किए भांतरी छै ? ओराकरी किसटवाडरी, कासमीरी, जाडी पांखड़ीरी वटवीं डांडीरी. सू केसर चदणरा सूकड़ासूं जेसळमेररा ओरीसांमें होसनाक जुवान घसै छै, ऊजळ रूपोटांमे उत्तारजै छै. देसौतारै मुंहडै आगै राखजै छै. तिणरा तिलक कीजै छै. आडा काढजै छै.

तथा उपरायंत वाकरा उणहीज दरखतांसूं टांगणा कीजै छै. वाकरा खुल्लै छै. जाएँ रुईरी वरकी वौपारी खोली छै. मांस उत्तार उत्तार पासे राखजै छै. तरवाररा पटदळां माहिसूं कंटारचां मोहासूं छुरी काढजै छै. मांस छुन-छुन पांसै कीजै छै. मोरां पसवाड़ां पींढारो मांस देगचांमे घातजै छै. हडोईरा मांस पासे चरुवांमें घानजै छै. सीरा होसनाक सुधारै छै दुयजै छै. गरम पाणीसूं धोयजै छै. चीर-चीर देगचांमे घातजै छै. ओभरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियो मांस घात द्रगर कीजै छै. फूल आंतां अवल धोयजै छै. ऊपरा दूसरी आंतांरी साढा गूथजै छै. मसाला चरायजै छै. रजवो दहीरो दीजै छै.

तथा उपरायंत सुवर खोलजै छै. साटां उत्तारजै छै. सू कुण भांतरा दीसै

छै ? जाएँ रंगरेजरी हाट खुली छै. जुवो देगचांमें वणायजै छै.

तथा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जाएँ धोवीरै वर कपड़ा मोकळा क्रिया छै. मांस उत्तार-उत्तार टुकाइयांमे घातजै छै. मिरच धाणा सूठ लूण हळदी वेसवार दीजै छै. दहीरो रजवो दीजै छै. लकड़री कठौतीमे सुदक राखजै छै.

तथा उपरायंत खरगोस होमनाक वणावै छै. मछळांद मिटायजै छै. नान्हो छन देगचांमे घातजै छै. मांहे वेसवार हळद धाणा सूठ मिरच जाइकळ तज लांग घातजै छै. सीवो लूण दही साय दीजै छै. तिजोर तोतर करचानक मुरगावी होसनाक वणावै छै. पोटा चीरजै छै. पेटाळजो चीरजै छै. मुहडैमें हींग भरजै छै. पेटमे जीरो भरजै छै. पांखां समेत देगचांमे वाफजै छै.

तथा उपरायंत तीतररो मांस सिला ऊपर वांट पलीधो कीजै छै. दूसरो मांस न्यारो-न्यारो वणायजै छै. घणा मसाला दीजै छै. लवांगो मांस होसनाक सुधारै छै. वकरारा फोकर गरम पाणीसूं धोयजै छै. ललाई मिटायजै छै. पासे देगचांमें रांधजै छै. घणो घी वेसवारां मसालांसूं वणायजै छै. सीकां पासै वणै छै. आडा डोरा घीरा दीजै छै. मांस रभतैरी खसवोय फूटनै रही छै. त्यांरी खसवोय लेवणनूं तेतीस कोड़ देवतागण गंधव होसा खाय रह्या छै. भांत-भांतरो मांस वणायजै छै. मेदैरा मांडा

करजै छै तैमे घणो नान्हो खुनियो
मास मदी आच कडाईमे तळजै छै
वेसवार मसाला घात उहा माड़ामे
घातनै छै तठा पछै माटा गूथ समोसा
वणाय तळजै छै

तठा उपरायत सीरो - पूडी वणै छै
मोहितै सारू देवजीभि जोयजै छै
निरजै सारू चोला मगायजै छै पुलाव
सारू कमोन् नीणजै छै काठा गोहुवारो
आनो मगायजै छै सू नाळेर-गरा
गोळजा रोटा वणायजै छै मूगारी पातळी
दाळ घणा मसालासू नीजै छै तुगररी
नाळ छूटा चावळारै पगा देगचामे
कीजै छै छूटा चावळ राधणै पगा
वासमती मगायजै छै पातळा रोटा
जुदा ही वण रखा छै ठाम-ठाम
देगचा-चरू चरू रखा छै मूग जुगहीज
देगचैमे सीमै छै

सू मूग किण भातरा छै ? मगरैरा
नीपना, भरतरै खेतरा, हरियै रगरा,
चुपळा जेवडा, इण भातरा मूग
हाथासू रळकायजै छै चुण-वीण
काकरा वान्जै छै सू मूग होसनाक
वणारै छै

अनेत्र भातरा छतीस भोचन वणै
छै निनारैरै पाणीसू आटो गूदजै छै
तेरा रोग करजै छै रोटा भोर पीडी
फीनै छै तठा पछै कडाहीमे तळनै छै
पर भोर वूट्टा एण माहे वूरो घातनै छै
घात चूरमो छुतवी वणायनै छै

तठा पछै सितपरणै पगा दही
वाधो थो तैरी गळणी खुलै छै माहे
वूरो घात अघोतरैरै रुमालमू छाणजै छै
मसाला माहे लाग इळायची मिरच घातजै
छै इण भातरा मितरण कर माटकी
भरीजै छै

हडोई उपर चीलना कागला
भडाफड करनै रखा छै तिका कागलानू
मल्लूजाण कुवर गिलोलारी चोटा कर
रखा छै

इण भात तमासो करता पाछलो
चौघडियो आय रखो छै अमलारो
वसन हुगो छै तन् सिनमतगारानै हुकम
हुवा छै - मतानी स हर-सकरो तयार
कीजै सू हरसकरैरी तयारी कीजै छै
सू हरसकरो किण भातरा छै भागेसुर
घोटियारी पीडी वणै ममाला समेतरी
आणनै छै गळिया अमल में भाग
गाळजै छै फेर नरुसू ग्लदाय काडजै
छै रुमालसू तिवारा छाणजै छै
तयार कर पीतळरा कळम भरीजै छै
मिरदार आगै आण मेलनै छै उनळा
रूपोटामे घात मुनहारामू मारा साथनै
पायजै छै

सू मिमा-अत्र सरणार जुवान छै ?
पाका पाका धरियामानू, अनरायलानू,
मीधरानू, डाणहुला डामियानू,
करडतानू, लो घड़ा लाह पर
डाहलानू, लोली देता, कटारी गगराड
ग्याता, पचामा गोळामिया आचे आध
नाद उतरिया, जियारा पाच पाच हनार दाम

पाटा-बंधाईरा पाटैदार खाय चुका छै.
पांच-पांच सै हाथ कोरी पाटांनै लागी
छै. इण भांतरा रजपूतानै अमल
सिरदार आपरा हाथां करावै छै. घणै
चोजसूं मन लियां मनहारां कीजै छै,
दिल हाथ लीजै छै. अमलां गहतंत हुवा
छै. मातै हाथीज्य भोटा खाय रखा छै.
फुरणी वाज रही छै. कोसा लाल चिरमी
हुवा छै. आंख्यां छिटक रही छै.
मधरै-मधरै हुक्कांसूं तमाखू खायजै छै.
गल्हां कीजै छै.

तथा उपरायंत सूळंगरियां
होसनाकांनै हुकम हुवै छै-जाजमां
कनारै सूळ्यां तयार करो, सू हिरणांरा
मगर पसवाड़ा पोंडांसूं मांस उतारजै
छै. छुरथांसूं छुणजै छै. सू छुरी किए
भांतरी छै? पेसकवज चकचकी रूमी
विलायती म्यानां मांहां काढजै छै.
तिकांरा दस्ता किए भांतरा छै?
मोहरैरा गुरडोदगाररा संगरेसमरा
माहीदांतरा रूपैरा सीपरा जड़िया
तरै-तरैरां दसतांरी भांत-तिकां छुरथांसूं
मांस छुनजै छै. मसाला वेसवार लूण
चरायजै छै. दहीरो रजवो दीजै छै.
तरगसां मांहां सीकां काढजै छै.
वेवड़ां ठीहां चाढजै छै. बीच खीसरी
भरती दीजै छै. सू तसु चीढ सीकां ऊपर
चाढजै छै. आडै हाथ डोरा घीरा दीजै
छै. इण भांत सूळ्यां वणै छै. वडी देवगिरी
थाळीमे उतारजै छै.

तथा उपरायंत देसौत फेरांसार

फिर आया छै. हाथ पग मिटीसूं उजळा
कीजै छै. कुरळा कीजै छै. सिम्भ्या-
वांदणरो वखत हुवौ छै, वनाती आसण
विछै छै. पीतलरा भरतरा धूपिया आग
आण मेलजै छै. गूळ वतीसै मसालै
सहित खिंच छै. खसवोई महक रही छै.
देई-देवता खसवोय ले रखा छै. वनातरी
गऊ-मुखीमें हाथ घातियां आपरै इष्टरो
ध्यान-सुमिरण कर परवारिया छै. जाजमां
आय विराजै छै.

तथा उपरायंत मसालां हुई छै.
दुसाखा हुवा छै. मसालचियां आण
मुजरो कियो छै. नजर दौलत छड़ीदार
कर रखा छै. अमरावां सिरदारां
खिजमतगारां सारां ही आण जुहार-
मुजरो कियो छै. सारा ही मुंहडै आगै
विराजमान हुवा छै.

तथा उपरायंत दारूरा घड़ा मगायजै
छै. सू दारू किए भांतरो छै? औराकरो
वैराक संदलीरो कंदली फूलरो अतर वाती
वमै धुंवांधोर तिवारारो काढियो, वोदी
वाड़में नाखियां जग उठै. वापरो पियो
चेदो छिकै. असवाररो पियो प्यादो छिकै.
राजा पीवै परजा छिकै. इण भांतरो
पहलडो तोडेरो धातो, सू दारू केसरिया
गुलावियारा दाव दीजै छै. मुजरा कीजै
छै. मुनहारां हुवै छै. मतवाळा हुयजै छै.
उपरा उण भांतरां सूळ्यांरो थाल बीचमे
लाया छै. मोक्षण-ठुंगार हुय रह्यो छै.
चोळवोळां हुयजै छै.

तथा उपरायंत हवलदारां अरज

कीनी छै - मुजाई तयार हुयी छै आप
फुत्रमायो छै - पातोटा नासो, वानवट
थाळ मगावो पातोटा नासिया छै, आगै
वानवट मेलिया छै त्या उपरै रूपैरा
पीतळरा थाळ जळसू एखोळिया मेलिया
छै सिरनार पातोटा आय बैठा छै
रहडवा घातिया देगचा बरू आणजै छै
परीसारो हुम हुमो छै सारै साथने
सरव वसतरो परीसारो हुनै छै पाच-
पाच दस-दस इमलाळिया नइना भेळा
बैठा छै मुनहारा हुय रही छै घणी
फीनसताई चोज लिया आरोगजै छै
दाहरा गर बीच बीच लीजै छै
गोळियारी साटपड लागनै रही छै
मुसालारो चानखो पणनै रह्यो छै जाणै
सरदरी पुरणमासी खुली छै

फेर हुकम हुयै छै महतावारो
चादणो हुनै सू महितावा पचास सव
सायडी ही लागी छै जाणै जेठरो
दो-पहरो मुलियो छै। इण भातरै
चादणैम जीमणरी होंम माणजै छै
दाहसू मगळा मिरगर लाहरता
बोलै छै

इण भातसू आरोग परिवारिया छै
थाळ वारिया उठाया छै हाधारी चीकणाई
उतारणरै पगा मूगारा थाळ मगायजै छै
निण माहे हाथ मारजै छै मूगाम् मसळ
चीकणाई तारजै छै

तठा उपरायत पाला मगरा चळू
परणरै पगा मगायजै छै चडू कीनै छै

दुरला कीजै छै हाथा लोहणु ह्माल
हाजर हुवा छै हाथ पूंछजै छै

इतरैमे तगोळी वीडा आण हाजर
क्रिया छै तिके पान किए मातरा छै
मघी न्यणी तोडैरी वाडीरा नीपना
तिकारी वीडी वमै छै माहे कपूर चूनो
कायो सोपारी घात वीडी सिरनारानै
दीजै छै खुस घगत हुयै छै

कनीस्वर आसीस दिवै छै-अखै
अन-दाना। ध्रुव-मेर ज्यू अटळ,
चंद सूर पवन पाणी ज्यू जुगो-जुग राज
करता

जुनठळ - वाळा जाग ज्य,
अन घत दिलै अपार।
दिल धाई आसीस दे,
कचि जपै जै-वार॥

दस कृप समो वापी,
दस वापी समो सर।
दसा सर-वरा समी विन्या,
अन दान विसेरत॥

इण भातरी अनेक आमीस निये
छै श्रेमो गहरै साद कनिराव बोलै छै
जाणै नगारै डको हुनी फना मेर घान
हुयो इण भान कनराव आसीस
देवै छै

तठा उपरायत अरगनो मगायने
छै सू अरगजो किए मातरा छै ?
चौने चदणरा मुठिया गुलावरै पाणीसू
रगडीजै छै माहे कपूर कमतूरी घातने
छै वेमररो रग दीजै छै सूधे चमेलीरी

मेलवणी दीजै छै. इण भांतरो अरगजो रूपैरा रूपोटां मांहे घात आण हाजर कीजै छै. अरगजो लगायजै छै.

तठा उपरायंत माळा फूलांरी छावां आण हाजर कीजै छै. सू फूल कुण भांतरा छै ? हजारो नौरंग तुररो मेहंदी किलंगो सोनजुही इसकपेचो खेरी कोयल मालनी चांदणी मुखमल नरगस हवास गुल-अतार दाऊदी केवडो. और ही अनेक भांतरा फूलांरी माळा किलंगी छड़ी सेहरा नुंधिया छै. सू सारै साथनै वकसजै छै. फूलांरा चौसरा घातजै छै. छड़ी हाथांमें विराज रही छै.

तठा उपरायंत कवरावांनै नवाजस हुवै छै. घोड़ा ऊठ माळा कडा सिर-पांव थिरमा वकसीजै छै.

तठा उपरायंत ओळगुवां वाजदारांनै इनाम दीजै छै. माळीनै मोहताद दीजै छै. साराहीरी आम-उमेद वर आणजै छै.

इतरैमे सात घड़ी वाजी छे. आठवीरो अमल छै. सिरदारां-रजपूतां अरज कराथी छै - असवार हुयजै, साथ सारो अमलां गाढो सदोरो छै. तरां आप उठिया छै. मातै गजराज ज्यू हींडता थका खवास-पारसवाणारै हाथ ऊपर हाथ दिया घूमता थका वोडै पधारै छै. साहणी घोड़ो आण हाजर कियो छै. पागडै पग दियो छै. असवार हुवा छै. नगरै-भेर घाव हुवा छै. सादियाणा वाजै छै. जाणै आभो गाजै छै. तुरी

करनाळ रणमींगो वाज रह्या छै. सहनाय मांहे खंभायची हुय रही छै. साथ सारो अमलांसू लाल्हरतो थको वडै छै. वधाईदार आगे वधाइयां छै. सू वधाई आण दीवी छै.

तठा उपरायंत कामणी हरख मण उवटणो करै छै. पीठी मिनान करै छै. खमवो लगायजै छै. सीम गुथायजै छै. माळ माळ मोती सारजै छै.

दाम काम लोचनी आंभैरी बीज. भादुवैरी आकासरी परी. मोतियां सरी.

कत्यांरो भूंवल्लो. पून्यरै चंद्र सो मुख. थाको हंस असील वंस.

वे पख सुध अँमी मुख.

सू आभरण पहरै छै. जरकमी साडी, अतलसी चरणो, केसरी अंगिया, घणै विराणपुरैरी कोर पट्टे लागां थकां, सीस ऊपर हीरारो सीस-फूल वणायजै छै. मोतियांरी माग भरजै छै. ललाड ऊपर अरधचंद्र विराज रह्यो छै. केमर सी खोळां कीजै छै. हांगळूरी वंदी दीजै छै वांका लोचणामे अणियाळो ठास सजै छै. जड़ावरी लड़ी दांव गी भूंटणा भूंवरा अलोक वण रह्या छै. मोतियांरो हार चीढ पंच-लड़ी विराज रह्या छै. जड़ावरा वाजूवथ कांकण रतन-चोक आरसी वींटी विराज रही छै. वळै चूडो सोनैरी वंगड़ीदार विराजै छै. जाणै काळी घटामे बीज चमकै छै. कट-मेखळा जड़ावरी सोहै छै. सोनैरी पायल्ल पग-पान पोलरी

अणवट पगा विराजै छै आभूएण औसा
विराजमान हुवा छै जाणै मेर-गिर
नेळी नपत-माळ विराज रही छै

। हाम काम लोचणी उलाळी
आकास जावै

। चावळरो चौथो हंसो रावै
तगेल विना साधा आहारा
विहार थावै

माडी माडी कटारीरी पड़चळी
समावै

उतररो वाव वाजै एएणनै लुळै
चोवा रोवा जेतो धीचसू भाज जावै
इसी इसी रोहस ररसारी मुगधा
मध्या प्रोडा रूपरो निध्यान

जाका मलूक हाथ-पात्र
जघा कच्छीमे प्रभ
गह चपारी डाळ
सिंध सी कमर
कुच नारगी
नग लाल ममोला
प्रीता मोर सी घोली काकल मी
अधर प्रयाळी गत गडमी कुळी
नात्र सुगारी चाच

नाथरा मोती जाणै मुक त्रिहसपत
सारगा दीपै छै जाणै लाल कयळरी
सुमयोय लेवण सेत भयर आया छै
अथ सा नेत्र मीन जैसा चपळ
भूह जाणै इट-धनख छै
सुख पून्यूर चद ज्य मोळहै कळा
मपूरण छै

पेट पोपळरो पान छै

पासा भाखणरी लोथ छै
नितत्र कटोर सा छै
नाभी मडळ गुलारो फूल सो छै
साग्यातरी पदमणी
कना रभा सी सरगरी उरवमी

औसी कामणी पोसाग्य कर मोहला
माहे मैणवनीरी पील चोसा च्यार
खुणा जगाय पान चावै छै चाण्णीरा
विद्यावणा खुल रखा छै ऊपर वनातरी
मलावूती चादणी रूपैरी चोभासू
रडी की छै

मोनारो पिलग कसणा कसियो छै
मो कैसोहेक सोभायमान दीसै छै ?
जाणै गीर समुद्रा भाग छै औसीसा
गोहवा कैसा विराजै छै ? जाणै सीगीमल
काळजा ममुद्रमे वेळ करै छै इण भात
कामणी पोसाग्य विमायत किया
विराजै छै जिसैमें अस्वारी आण
उतरी छै सारो साथ मुजरो-जुहार कर
धरानै पधा छै घोडा पायगा लगायजै
छै गगेव नीवावत भीतर पधारे छै
गमा-रमा हुय रही छै आण दोलियै
विराजमान हुवा छै मुहडै आगे पातरा
पोसाग्य कर साज वाज लिया रखी छै
हुकम हुनो छै राग रग हुनै छै धह
राग, तीस रागणी भूततत रडा हुवा
छै मात सुर तीन प्रामरो भेद थणियो
छै भाप दिखावै छै फेर वाहरी मुनहार
राज-लोक करै छै

तथा परायत सारो राज लोत्र
भुनरो कर वोहडै छै निणरो वारो छै

सू हजूर रहै छै. सुख कीजै छै, रस
 लीजै छै. केसरिया दुपटा ओढ सुखसूं
 पौढजै छै. परभात हुवौ छै. अमलांरी
 वायडसूं आंख खुली छै. दरवार पधारै छै.
 साथ सारो मुजरै आवै छै. मुजरो लीजै
 छै. अमल कीजै छै. गोठ मजलस
 अमलांरा बखाण हुयने रह्या छै. फेर ही
 कोई राजवी माणगर हुवै मू इण भांत
 ऐस माणज्यो.

नर सुर नाग न घट्टियां,
 काळै केहरियांह ।
 जळ पूरिय पखाण ज्यू
 गल्हां ऊन्नरियांह ।
 भलियूं भलां नरांह
 लांबीयूं लांवां नरां ।
 मुळवा मुवां पछांह
 वातां रहिसीवोच उत ॥



रामदास बेरावतरी आखडीरी वात



अथ राव रामदास बेरावतरी
आखडीरी वात लिखते ।

गाव दुधोड हुवो राव श्रीरिडमल
जीरे पुत्र बेरोजी हुवा बेराजोरे पुत्र
रामदासजी हुवा गाव दुधोडरे खेडे
भापता कीनी व्हो एक आखादसिध
रजपुत हुवो विरदधारी रजपुत हुवो
रामदास बेरावतने उगणीस विरुद हुवा
तिके विरदारा नाव-

- १ प्रथम पाखरीया विना रहणो नहीं
- २ दुजो सबला उथापण
- ३ तीजो निबला थापण
- ४ चौथो जाचक जण तरवर
- ५ पाचमो परनारी सहोदर
- ६ छठो चरुसुगाल
- ७ सातमो सुग्नी
- ८ आठमो सरगाई सोहड
- ९ नवमो विरद अणभग
- १० दसमो पथरी बोर
- ११ श्यारमो बेरी वकारने मारे
- १२ बारमो पराड लुगाइ भाता समान
- १३ तेरमो अगलीया गजण
- १४ चवदमो छतीस आवध दावण
- १५ पनरमो आखादसिध

१६ सोलमो गजघटाभाजण

१७ सतरमो आसेसरमने

१८ अठारमो मनोहर

१९ उगणीसमो लाखा परछमा
पचायण

उगणीस विरद कया हिवे चोरासी
आखडी कहे छे-

- १ च्यार लुगाइ उपरत परणबारी
आखडी
- २ रुपासोनारा थाळ विना जीमणरी
आखडी
- ३ पीतलरामें जीमणरी आखडी
- ४ मलजुद कीया विना रहवारी
आखडी
- ५ तलवार पकडवारी आखडी
- ६ जेठीमधु विना दातण करवारी
आखडी
- ७ खाडो खुरसाणरो सेल सेर पनरेरो
बाधणो, नहीं तो बीजो बाधवारी
आखडी
- ८ छतीस आवध चालता सेर बीसरो
आहार करने चालणो, नहीं तो
आखडी

६. दिनमें पोहर सुवणो, उपरंत
आखडी.
१०. रातरे पोर एक सुवणो उपरंत
आखडी.
११. वाजरी भुजाडमें वापरवारी आखडी.
१२. गोव भुंजाड सगला साथने हुवा
विना जीमणरी आखडी.
१३. सकर विना भुंजाड करवारी आखडी.
१४. पाछली रात हल उद्धरतां भुजाड
कीयां विना रहवारी आखडी.
१५. होके कीयां विना रहवारी आखडी.
१६. सगला साथने अमल कसुंवा
कीना विना रहवारी आखडी.
१७. कटारी वांधवारी आखडी.
१८. साप सापणी भेला पकडवारी
आखडी.
१९. लुगाईरे नांचे वसा आभडवारी
आखडी.
२०. सरसै घोडे चडवारी आखडी.
२१. काझी घोडे चडवारी आखडी.
२२. पालखी चडवारी आखडी.
२३. कपुर विना पान चाववारी आखडी.
२४. लुगाइसुं रातमें एक वार भोग
करणो, उपरंत करवारी आखडी.
२५. किसतुरी विना रहवारी आखडी.
२६. फाटा कपडा सीवणरी आखडी.
२७. साथने वल हुवा विना जीमणरी
आखडी.
२८. वावडीरो पांणी पीवणरी आखडी.
२९. वेहती नदीरो पांणी पीवणरी
आखडी.
३०. भूखारो मुंहडो देखणरी आखडी.
३१. दूधको बोलणरी आखडी.
३२. मारग हालनां टलवारी आखडी.
३३. अऊतरो धन लेवारी आखडी.
३४. खटवनरो माल लेवारी आखडी.
३५. गांव फिलसो देवारी आखडी.
३६. सीव मांहमुं बलद गांवमें लावारी
आखडी.
३७. विखे विमांण गांव छंडवारी
आखडी.
३८. काम पडीयां वगतर टोप पेरवारी
आखडी.
३९. केसरीया वागा विना पेरवारी
आखडी.
४०. दांतरा चुडा विना बदारण राखणरी
आखडी.
४१. घुडवेल वेमवारी आखडी.
४२. गांयारी घासमारी लेवारी आखडी.
४३. चोर दीठां मेलणरी आखडी.
४४. कामरे माये रजपूत निकले
तिणरो मुटो देखणरी आखडी.
४५. रजपुनरो रोजगार राखणरी
आखडी.
४६. सरणे आयां काड देणरी आखडी.
४७. रजपुनरो मुकातो लेणरी आखडी.
४८. चोहटे घोडो नखुरी करावणरी
आखडी.
४९. पिणघट ऊभा रेहणरी आखडी.
५०. सोमवार विना खिजमत करावणरी
आखडी.
५१. वारे वरस तांड वेटी कवारी
राखणी उपरंत राखवारी आखडी.
५२. नुरकने वेटी देणरी आखडी.

- ५३ बेर चाढ विना धादीया रहवारी
आखडी
- ५४ कूड घोलणरी आखडी
- ५५ चड्या ऊभा जुत पिहरणरी आखडी
- ५६ सादीया दीठा मेलवारी आखडी
- ५७ ढोल धाजीया ऊभा रेणरी
आखडी
- ५८ मातसे वेरी माये रासीया विना
रहवारी आखडी
- ५९ वासे रेह दीठा जायगासु
रिसगारी आखडी
- ६० दोना दला विचे पग चानरवारी
आखडी
- ६१ रोलाभे निकलवारी आखडी
- ६२ भाजे तिण लारे जावारी आखडी
- ६३ आगलाने विना वकारीया लोह
करवारी आखडी
- ६४ लोहडा विना मारवारी आखडी
- ६५ एक घाय विना लोह करवारी
आखडी
- ६६ माल गाय जाय तिणने मारीया
विना रेहणेरी आखडी
- ६७ धोला केम नीठा जीवणरी आखडी
- ६८ पेतारो मुढो दीठा जीवणरी
आखडी
- ६९ धाडो आणीया वासी राखणरी
आखडी
- ७० मेनासीयारा गाव भारीया विना
रहवारी आखडी
- ७१ देसरा धणीने काम पडे तरे
ऊभा रेणरी आखडी

- ७२ मूरजरो मुढो दीठा विना जीमणरी
आखडी
- ७३ मुहडासु किरने गाल कानणरी
आखडी
- ७४ चारण भाटने विना काम विने-
रणरी आखडी
- ७५ लुगाइने विना सुन मारवारी
आखडी
- ७६ मोच देने पाडी लेणरी आखडी
- ७७ जीमता भाणे माहे कालो नीकले
तो अठो मेलणरी आखडी
- ७८ रुगीघारो व्याज लेणरी आखडी
- ७९ धन संचवारी आखडी
- ८० तमाखु पीवणरी आखडी
- ८१ जुना रमणरी आखडी
- ८२ विना चुप हमगारी आखडी
- ८३ निजलाने मारणरी आखडी
- ८४ आपसु चढतो हुवे तिणसु
लडवारी आखडी

इनरी आखडी रामदास बेरावत
आपाढ सिध रजपुत मुरवीर गतार
तिण इसडी आखडी पाली गाव दुधोदरा
दरवार आगे सिला ? उगणीस गज लाबी
छे, आठ गज चरडी छे, तिण ऊपर
रामदासजी बेसता तिकी सिला पडी छे
तिण ऊपरे रजपुत बेसे तिको इसडी
आखडी पाले, तिको इज बेसे नहीं तो
तलाक छे गावरो धणी पाटवीने छे
और लोक नचत बेठो व्यापारी नचिंत
बेसो देसोतने तलाक छे ।

हिवे मीयां बुढण जालोर राज करे,
पांच हजारीरो मनसोवो छे, साथ
सरांजाम बीजो घणो छे. अमल धरतीमें
निपट करणो छे. वडो वेढरो करणहार
छे. तिणरे सांढीयां हजार सात छे. तिको
गांव देवु रहे छे. एक समे मीयां बुढण
महेचारे परणीयो छे. तिको उणरो नांम
वाइ लाडु छे. उणसुं मीयां बुढण
चोपड रमे छे. सो वाइ लाडुरे डांण
पड़े नहीं, तरे वाइ पासो वावती कयो
पासा तोने रामदास वेरावतरी आण छे.
पोवारा पढीया तरे लाडुवाइरी जीत हुई ।

तरे मीयां बुढण पुझीयो - रामदास
वेरावत कुण छे ? कठे रहे छे ?
तरे महेची कयो - रामदास वेरावत
माहरे भाइ छे, वडो रजपुत छे, तिणने
चोरासी आखडी छे, उगणीस विरद छे,
वडो सतधारी रजपुत छे, माहा सूरवीर छे,
वडो आखाड सिध रजपुत छे.

तरे मीयां बुढण कयो - औसा
तुमारा भाइ हे तो हमारी सांढीयां
लेवेगा ? तरे महेची कयो - हमारा भाइ
ऐसा ही हे सो तुमारी सांढीयां लेवेगा.
मीयां कयो - खुव हम भी देखेगे ।
हमारी सांढीयां लेवेगा तो वडो रजपुत
विरद धारी जांशेंगे. तिण ऊपर महेची
कयो - तुमारी सांढीयां लेजाय तो तुम
रजपुत जाणजो.

तरे मीयां बुढण कयो - हमारी
सांढीयां लेवेगा तरे हम तुमसे मुंह

बोलेंगे. तरे महेची कयो - मीयांजी हमारा
भाइ सांढीयां लेवेगा.

चोपड रमतां इसा समाचार
मीयांरे ने महेचीरे हुवा. तरे महेची चारण
घररो बुलायने रामदासजीरे कने मेलीयो
ने कयो, इसी तरे - विरदायने कहेजो
वाइ लाडुरे ने मीयां बुढणरे चोपड
रमतां इसी वतलावण हुइ छे, मो जाणसुं.
राज मोने मोहरे कांचली दीनी अमर-
कांचली दीवी. ए करसुं मारो बोल ऊपर
आंणजो. इसी तरे कागद लिख मेलियो,
चारण माथे. मो कागद वांचने रामदासजी
तिणहीज वीरीयां हेरु मेलिया, अने कयो
अनतो साढीयां लीयां वमां. चारणने
घोडो सिरपाव दे ने सीख 'दीनी पधारो
वाइने जुहार कहेजो.

अचे पाछासुं दुधोडपु तीनसे
अमवारांसुं रामदासजी चढीया. असवारां
पुरी सिले करने चढीया. ए कांम प्यालारो
पीवणहार छे, कालीरो कलम छे, जाता
पवनसुं लडे, जीव ऊपर रुठा फिरे,
तिणमे पग चांतरे नहीं, पुंठ फेरे नहीं. इण
भांतरा असवार चढीया तिके जायने
गांव देवुसुं सांढीयां लीवी. पछे रवारीने
कयो - सात हजार सांढीयां तिण घणी
ताती सांड हुवे तिण ऊपरे चढने मीयां
बुढणने जायने कहजो रामदास वेरावत
साढीयां लीवी. गांव दुधोडरो धणी
लाडुवाइरो भाइ तिण सांढीयां लीवी.
रवारी आयने कयो मीयांने वेगा चडो.
तरे मीयांने समाचार हुवा तरे मीयां

फोजरो घमसाण करेने रामदासजी उपर चनीया रामदासजीने आवडी छे, खेह वीठा सिसणो नही साढ पिण एक व्याड मो साढ उमी छोटने जाणरी आणडी तरे तोडीयाने परालने साढ उपरे घाल लियो ने आगी खडीया इतरे खेह डेडती गीठी तरे रामदासजी ऊभा रया इतरे मीया राईवा वाहदर दोय आण पोहचा तरे इका बोलीया अचे खडे रहो, कहा जावोगे तरे रामदासजी सोले असपारासु ऊभा रया गीजा सारा साथने सीप दीनी कयो साडीया ले जावो आप रामदासजी ऊभा रया इतरे इका आण पोहचा तरे रामदासजी पकारीया मीया भला आया, रयागाम थाने अचे वाहो तरे इका बहादरा कयो रामदास तुम वाहो तरे रामदासजी बोनिया सिरपारा इण इकाने मा पेहली लोह करो मती तरे रामदासजी कयो तिको कबुल कीयो इतरे इको घोडो हजार पाचसु चदीयो आयो हाथमे माग मण पन्नी लीया थका आण पोहतो सो पन्ना कानी हजार पाच फोज, पन्ना कानी एक इको इसो प्राकमी पोरस छे सावतरूपी छे इसा इका प्रोहता तरे रामदासजी बोलीया इना वाह करो थाहरो धन लीयो छे, सो पेहली तु वाह तरे इको मण गेयरी मग वाही सो साग रामदासजी ढालसु ओभाटसु ढाल दीधी पछे रामदासजी घरडी फेरने बुडीरी गीधी इकारे छातीमे सो साम जातो रयो तरे गीजा इकारे ने रामदासजीरे घतलानए

हुइ सो इको सिले ठोय करने आयो छे सो रामदासजी आवतारे बरछी वाही सो इको घोडो फुटने पन्नी जाती थकी धरतीमे रुपी दोड इका मारने रामदासजी आघा खडीया पात्रासु मीयारी असपारी आइ फोज हजार पाच सात लारे छे सो मीया इका देखने इका कने आया आगे देखे तो इकारे लोह कोइ नही ने भीत समान ऊभा छे बरछीसु पोया छे इसी तरे मीया बुढण लारासु देखने फोजने कयो इण रजपुनसु फोड हाथ जोडने लडेगा तन साथरी तो सारारी इका देखने निरासा हुइ रामदासजीने किए ही आसग्या नही तरे मीया पाडा गलीया रामदासजी माडीया ले ने दुधोड आया इणने तो आगडी छे, वाडो गामी राखणो नही साडीया रजपुताने वच गीनी, चारणभाट रसवचनाने वच दीनी देता देता सुरज आवमाण लागो रावलामे रसोडे तयार हुणे इतरे चाकरा आणने कयो रसोडे पधारो रामदासजी पुत्रीयो माडीया लारे कितरीन छे, तरे रजपुता प्रधाना कयो माडीया हजार गेय रही छे तरे रामदासजी ओढाने बुलायने कयो साडीया ल्यो अने तलाव खोने तरे माडीया ओढाने दीनी पछे सारा माथसु रसोडे पधारीया साडीयारा भावरो हुहा

सवत पनरेसे चोपने, आली मोक पक।
तलाव खणायो बेरा तणे, जाणे लोक खनक॥

बात - सियां बुढण पाछो जालोर
 आयो. वीवी महेचीसुं मिलियो, महेची
 समाचार पुछीयो, मीयांजी हमारा भाइरा
 हाथ दीठा. मीयांजी बोळिया अब तुमारा
 भाइ कनासुं सांढीयां मंगाय दो. तव
 महेची बोली मीयांजी कछु भोला हो ?

उणने आखडी छे, धाडो आंणीयो वासी
 राखणो नहीं, सांढीयां तुरत वेच दीनी,
 उण हीज वेला. इसो सुणने मीयां
 सांढीयांरी आसा छोडी. पछे रामदासजी
 वरस २५(?) में हुवा तरे पातसाहरी फोजसुं
 लडने काम आया ।

॥ इति उगणीस विरुद्धारी रामदास बेरावतरी चोरासी आखडी तिके संपूर्ण ॥



राजान राउतरो वात - वणाव

परमेसर प्रणमू प्रथम देवा मिरहूर देव ।
सारदा गुणपति समरि सत-गुरची करि सेव ॥ १ ॥
दिश्रो सेत वरदान तू परमेसरि प्रसताव ।
राजानारी रस-कथा विधि व्हि वात वणाव ॥ २ ॥

अथ वात

ॐकार महादेव परमात्मा परम सिव परम सकति अचळेसर अचळ आसण
त्रियौ तिण धाकरी ठोड़ ननीगिर हेमाचळरौ वेटी दूसरौ मेर गिर अढार गिररौ
राजा आनू गिरद कहीजे तिणरै बैसणै उपरि ईसवररा अवतार महाराजा राजेसर राज करै
तिण राजेसर राजारै महाराणी महामाया पटराणी तिणरा पेटरी नोपनौ कुअर गुर
पाटपति कुअर श्री राजान कुअर-पनै भोगरै कामदेवरी मूरति नव कोटी मुरधररा
पति नरेस अनेक प्रिरद विराजमान ।

अथ काव्य

भाले भाग्य कला मुखे ससिकला लक्ष्मी-कला नेत्रयो ।
गने देव कला भुजे जय-कला जुद्धे प्रतिष्ठा-कला ॥
भोगे कोक-कला वले गुण-कला चिंतामणौ सा कला ।
काव्ये कीर्ति कला तत्र प्रतिष्ठा चोणीपते राजते ॥

वात

खट ग्रीस वस राजकुळी मिरामणि सूरज वमी राजान मारवाडिरा नत्र कोटरी
ठकुराई जळानोळ राज पद्दयी भोगरै रात्र पाट सिंघासण छत्र डड माथै सेत चामर
हुळ्यावीनै छै सेत वाना सेत नीसाण सेत भक्ता विराजमान हुआ छै तिण राजान
राजाउतरा वात वणाव वसाणीजै छै ।

तथा उपराति ऋरि नै राजान सिलामति तिण राजानरी राजपट च्यार ठिकाणै

विराजमान दीसै छै. पांच कोट पटै क्रिया छै. राजधान नंदीगिर सिवपुरी मंडोर अजमेर जालिधर मारीखा पाइतवत वणीजै छै. गंदाल महर गढ कोट बाजार पौळि पगार बाग वावडी वगीचा कूआ सरवरांरी बडां पीपळांरी झिनि महररी पावती विराजि नै रही छै. पाखती अरटारी भींगाड़ चोंग रड़ि पड़ि नै रही छै. हारौ गवटाकौ लागि नै रहिआ छै. पाखती नीळ वशि नै रही छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान मिलामति गढ कोट चौफेर कांगुरा लागी थका विराजै छै. जाणे आकास लोक मिलणनू वांत दिया छै. ऊंची निजरि करि जोड़जै तां माथारौ मुगट खड़हड़ै. तिए कोटरी खाही उंडी द्रह नागदही मारीची. जळ छैल पाताळरी जड़ांसू लागि नै रही छै. तिए गढ मांहे वावडी कूआ तळाव जळ वहळ धान त्रिभूत तेल लूण खड़ इधण अमल कपडौ घणो अपार मंचौ क्रिया छै. कोट भुरजांरा कोसीस नै धमळहर धमळागिर पहाड़ ज्यौं वादळांरा कीरण मारीखा ऊजळा मीकोट मौ निजरि आवै छै. नगररा धर कोट वरावरि ऊंचा विराजि नै रहिआ छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान मिलामति नगर मांहे ऊंचा देव सिव जैनरा देहरा मढ विराजि नै रहिआ छै. तांहरा डड - कळस धजा पतान्या आममाननू वातां करै छै. देहरा मांहे कथा कीरतन नाठक पड़ि नै रहिआ छै. धूप - दीप कीजै छै. आरती उतारीजै छै. केसरि - चंदण चरबीजै छै. अगर उखेबीजै छै पंच सवदा वाजि रहिआ छै. भालरियां भणकार हुड नै रहिआ छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान मिलामति देवळांरी पाखती धरम - माळा दान - माळा मंडीजै छै. मांहे जोगेसर पवनरा साभणहार त्रिकुटीरा चढावणहार धूस्र पानरा करणहार उरधवाहू ठांढेसरी दिगंबर सेतंबर निरंजनी आकास - मुनी ।

दूहां

ब्राह्मण सेतंबर वळे जोगी जगम जाणि ।

दान सन्यासी सोफिया खट दरसण वाखाणि ॥

गोडड़ कानफाड़ जोगी जंगम सोफी संन्यासी अविधूत पंचागनिरा भूलणहार अलमसत फकीर जिके संसारनू भागा थका फिरै. जड़भरत अतीत सम - रसरा छाकिआ राम - रस प्यालैरा पीअणहार दया - धरमरा पाळणहार करम - जाळरा भोड़णहार तापस अस्टांग जोगरा साभणहार सांत - रस मांहे गलताण होइ नै रहिआ छै ।

तथा उपरांति करि राजान सलामति तिए सहर मांहे च्यार वरण, च्यार आश्रम, अहारै वरण, खट दरसण, परम - ग्यान - पुरायण धरम धरमरा पाळणहार दया - धरमरा

राखणहार देह - सामनारा करणहार घैठा तप करै छै अनेक सत्रूकार मत धरमरा राखणहार गैराइतारा करणहार धजजधी कोड़ीधज लापेसरी दौलतिवत चौरग लिपमीरा लाडिला लोक बडा बापारी बहवारिया सोदागर बहराम सत् साहूकार घणा सुग् चैनसू वसै छै ।

तठा उपरात करि राजान मिलामति तिण महिर माहे छत्रीस पत्रन जाति रहै छै तिण सहिर माहे बाजार चौहटा मडिया छै सोना रूप जवहर जडाव कपडा पटकूल रेसम पसमरा त्रान भाति भाति बिमाईजै छै ।

तठा उपराति करि नै सराफ बजाज जोहरी दलाल भाति भातिरा वात्र भाति भातिरा पदारथ भाति भातिरी अमोलिक वसनासू मोलावीजै छै हट्याडैरी भीड हुड नै रही छै चोहटै माह रग तपोलरौ कीच मचि नै रहिअौ छै ।

तठा उपराति करि नै भोगिआ भमर लजा छयल हुसनाक जुवान निजरवाज बाजार माहे उभा जोहा न्गण छै चोहटै माहै नगर नायिका बेरया लार लारपी लहण हार सोलै सिणगार ठविया वका फूलारा चौम पैहरिया थका गेय अणियाला काजल ठामिया वका वाका नैणारी भोक नागती पायलैरै ठमकैसू धूधरैरै धमकैसू विधीयारै छमकैसू रमभौळ करती अगुठा मोडती नगरा करती बाजारि चाली जाण छै निजरारा भडाका लागा थका जुवाना छयलारा मन गरेत् त्रज करै छै भाति भातिरी बेस, भाति भातिरी रमाल, भाति भातिरा खेल मडि नै रहिया छै, भाति भातिरा तमामा लागि नै रहिआ छै इण भातिरा मारू महर मडोत्र सित्रपुरी निराजमान हआ छै क्ता इत् पुरी मी निजरि आनै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान मिलामति इण भातरा सिद्ध खेत गिरद उपरै राज पन्थी राजसरा सुख कुअरपत्नी भोगीजै छै तिण राजान राजकुमार मारुनु ४ ठौडरा नाळेर आया छै म्फलग चिप्रौड गढरा धखीरा, लुटपुर पाटणरा, घाट सहररा, पुगल नगररा डोला आइ पुहन्तर उपर अरिया छै अन्तर दोप रहित गोधूलिक साहो सो भाडियो छै ।

तठा उपरात करि नै राजान कुमाररी जान धणै आडवरसू हाथी घोडा बडिल सुग्नासण रथ पायन्तरा वणाव क्रिया धना बघेल जानियारै साथ लिया धणै मोती जडाव जरकसीसू लडालत्र हुआ छै धणै मोचे धणी केसरि अगरचैसू गरकाव क्रिया वका घोडा रजमृतारै धूमरैसू आइ तोरण गान्धौ छै तठै आगै बग्गणी तिण भातिरी रायनादी गोरगीआ सोल सिणगार ठात्रिया वाळ वाळ मोती सारिया तोरण कलम वनावै छे मोतियै वधावै छै प्रागै छै ।

तथा उपरांति करि नैं राजान सिलामति नीला आला वंम केलि खंभ मूना गलिआ
थका कांचनारा कलसारी वेह करि नैं चारी पधराया छै. दथलेवो जोड़ि छेहड़ा बांधिया छै.
सु जाणै मन बांधिया छै. जिके वेद मूरति ब्राह्मण छै सु अरणी अग्नि लगाड़ि होम करै
छै. घणौ गो-घृत नैं कपूररी आहूति दीजै छै. वेद ध्वनि कीजै छै. दूलह नैं दूलहनी
सेहरा बांधिया पूव साहमा बेमाणीआ छै. सेहरा दीजै छै. चार फेरा फेरीजै छै. वीमाह
कीजै छै ।

तथा उपरांति करि नैं राजान सिलामति अनेक राग रंग बघाई बांटीजै छै. राय
अंगण धोलहरे रोहणी घणा मंगलाचार गीत नाद खंभाइची गावै छै. छत्रीस वाजां पंच
सवदा वाजै छै. तांहरा नांम तंती १ वीणा २ किनरी ३ तंवरौ ४ नीमांग ५ एनो पांच
सवदा आगै छत्रीस वाजांरा नाम कहै छै. ढोल ६ दमामा ७ भेरि ८ भंगलि ९ नफेरी १०
मदन भेरि ११ सुरणाई १२ झांफ १३ मंजीरा १४ मादल १५ श्रीमडल १६ डफ १७
ऊड़क १८ रंग तंग १९ मुहचंग २० ताल २१ कंमाल २२ तंवर २३ मुरली २४ रिणतूर २५
सख २६ ढोलक २७ राय गिड़ गड़ी २८ रवाज २९ रावण हयो ३० पंगी ३१ अलगचौ ३२
भालारि ३३ पिनाक ३४ वरघू ३५ आरंगी ३६ करनाल ३७ इण भानिसूं छत्रीस वाजा
वाजि रहिया छै. अनेक मंगलाचार हुइ रहिया छै. अनेक टान सनमान दीजै छै.
अनेक रंग बधामणां कीजै छै. मोतिअैं चौक पूरीजै छै. वीमाह पूरो कियौ छै ।

तथा उपरांति करि नैं राजान सिलामति वीमाहरै समागम प्रथम दूलह दूनहणी
मिलणरौ कोड रंग-रळी बधामण कीजै छै. रंग महलैं धवलहरैं पधरावीजै छै. छेहटैरी
राति गांठि छूटी छै. सु जाणै मनरी गांठि छूटी छै. राजान कुमार घणै हरखसं
आणंदसूं उआहसूं नवल रंग, नवल नेह, नवल नारि, नवल नाह प्रथम समागम
सुख सेभरी वात उहां हीज जांणी पिण वीजौ उण सुख उण वातां कुण जाणै. दूलह नैं
दूलहणीरी जोड़ी देखि देखि नैं लोक वार-वार बखाणै छै. कहै छै गंगाजी मांहै उंई जल
पैसि तपस्या करि ईश्वर गवरिजा पूजिया छै. बळे हेमाळै गळियां कासी करवत लिआं
अंगरी असत्री अंगरौ भरतार पाईजै छै. सु यां हेलमा तपायो छै ।

तथा उपरांति करिनैं राजान सिलामति पनरह दिन तांई जान राखि घणी मनहारि
करि भांतिगारी भगति जुगति महिमानी करि सतरह भ्रख भोजनरा वखाव कीजै छै. दोइ
भांतिया अंन १ वायौ २ अड़क, तीन भांतिया मांस १ जलजीव, २ थलजीव, ३ आकास
उड़ण जीव. पांच भांतिया सालणा १ तरकारी, २ मूलकंद, ३ डाल कूपल, ४ पान-पत्र,
५ फूल-फळी, पंड छालि. भांति भांति गोरस १ दूध, २ दही, ३ मिठाई, ४ लूण, ५ तेल,
६ होंग, ७ वेसवार, ८ चरकाई. इण भांतिया सत्तर अख-भोजन कहीजै अदारमो ठंढो पांणी ।

कणित

दुग्धि अन पल त्रिधा साग पच मास धारण ।
 गो रस जुग त्रिधि गिणत मिष्ट गति ष कधि चारण ॥
 लूण तेल सार हींग सात दस भोजन भत्त ।
 तिरय अनत गति रचै गान कुण गिणै कणित ॥
 सजोग एक अनेक सुचि पट रस पट त्रिधि नेत सुचि ।
 सुह विधि रसोद समुक्ते भता सुपह अरौगे अन्न रुचि ॥ १ ॥

तथा, उपराति करि नै राजान सिलामति भाति भातिरा भोजन जाति जातिरा मास जानि जातिरा पकवान जिलेनी, लाह, खाजा, मोतीचूर, सीरो, पूरी, सावूणी रोरा, पचामृत ।

दूहा

मीठा मोळा रस मिलै, पाटा पारा जाणि ।
 कडुआ दान कसाइला, ए पट रस वापराण ॥

भाति भातिरा पकवान घणै सुरै घीरा मारिअल मुहदँ माहँ मेलिया गलि जायै मुहदामँ मेलिया धाती ठाडी हुवै ।

तथा उपराति करि नै राजान सिलामति भाति भातिरा अवरस, सिलरण, आना, नीवू, सुरण, आवा भाति भातिरा आचार अथाण भाति भातिरी तरकारी गोरस मीठा मोळा खाटा गारा कडुआ कसाइला भाति भातिरा पट रस सवाद लीजै छै ऊपर कपूर वासिया गगोदफरा चतू कीजै छै ।

तथा उपराति राजान सिलामति घणा घोडा हाथी सुखामण रथ पायक जवहर हीरा मोती माणक सोना रूपा दइजै दीजै छै घणा दास दासी दे नै घरा सामा श्रोमण पधरावीजै छै धरतोरौ इदु होये तिण भाति जा छेल कर नै घणै सोनें रूपैरौ मेह होइ नै तूठी छै कचेसरा गुणी जणा मगत जणानु घणा दान दे कोड पसाड, साय पसाड, करि हाथी करह केणणरा महा पसाड करि जसरा जागी घुराइ नै बलियौ आगै नीली मरक लीआ वधाईदार नेडिआ छै नगर माहँ ओछव वधावीजै छै मगल गावीजै छै गळिआ गळिआ फूल विसरीजै छै ।

तथा उपराति राजान सिलामति तोरण आधीजै छै घणा गज डगर पेसारा करि मबोर महलें पधराया छै सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहरत सुभ वा सुभ लगन सुभ वेळा माहि आणि पाट सिंघासण निराजमान मिआ छै. माथा उपर सेत छत्र धिराजै छै सेत चमर डुळै छै ।

तथा उपरांति राजांन सिलामति तिण राजांन कुंअर राजाउत माहू ठाकरै क्यार पटरांणी छै. नाम सिणगार सुंदरी १, सोभाग सुंदरी २, सरूप सुंदरी ३, मदन सुंदरी ४. साख्यात देवांगनां पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कलारी जाणणहार विनैनी करणहार लिखमी पारवती गंगा सरसतीरौ अवतार वारह आभूषण विराजमान हुआ छै. आठे पोहर सोळ सिणगार क्ख्या रहै छै. क्कण भांतरा आभूषण क्कण भांतरा सिणगार ।

काव्य

लज्जा मान कटाक्ष लोचन कला अल्प स्थितो जल्पनी ।
रति भय अभया सु प्रेम रसा गय हंस बुलाइन ॥
धैर्य च सुचक्षमा सुचित्त हरखं गुह्य स्थलं शोभनं ।
सील ग्यान सुनीति नित्य तन सा पट् दृण आभूषणं ॥ १ ॥

राजांन कुमार सौळै सिणगार विराजमान हुआ छै. सु प्रथम मरदरा सौळै सिणगार तिके क्कण भांतरा कहीजै ।

काव्यं

क्षौरं मंजन चारु-चीर तिलकं गत्रं सुगंधान्चर्चनं ।
कर्णे कुंडल मुद्रिका च मुकुटं पादौपि चर्मोचनं ॥
हस्ते खड्ग पटंबरं कटि छुरी विद्या विनोदा मुखं ।
तांबूलं मति सीलवत चतुरं शृंगारकं षोडस ॥ २ ॥

वीजा इस्त्रीरा सोळै सिणगार तिके क्कण भांतरा कहीजै छै ।

काव्यं

आनौ मंजन चारु-चीर तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं ।
नासा मौक्तिक पुष्प-हार कुरलं भंकार कृन्मूपरं ॥
अंगे चंदन लेपनं कुच मणी लुद्रावली घंटिका ।
तांबूलं कर कंकणं चतुरता शृंगारकं षोडशः ॥ ३ ॥

इण भांतरा सोळै सिणगार क्क्यां थकां रहै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजांन सिलामती तांह अंतेउरी आगै ४ बडारणां सहेलिआं रहै छै. १ अनंगमंजरी, २ मदनमंजरी, ३ रतनमंजरी, ४ पट्टमंजरी. तांह बडारणां सहेलिआं आगै ४ पात्रां सिंगारणी खवास्यां रहै छै. १ गुणमाला, २ फूलमाला ३ विजैमाला, ४ दीपमाला. तिकां सिंगारणी खवास्यां आगै ४ विलासनी दासी रहै छै.

केतकी १, चपकली २, रामकली ३, कामकली ४ त्या दासिआ आंगे सोळें सोळें छोकरी खिजमतदार रहै छै इण भातिरा चार राजलोकरा न्यार महला आंगे ४ नाजर रोजा रहै छै मोहनराइ १, बसतराइ २, सामरग ३, रामरग ४. महलारी दोढीरी जावता रावै छै ।

तठा उपराति राजान सिलामति रितिराज बसत वैसाख-मासरा भगलाचार विमाहरा सुग प्रिलास करता सरद रित आई छै आसोज मास आइ सप्तापति हुअै छै इतरा गढ कोट चोहटा नगर धीमाहरा भगलाचार दान प्रथम प्रस्तावरा वात वयाव विचार गढ कोट नगर धीमाह वात वणावरौ प्रथम परिवेद पूरौ हुअौ छै ।

*

तठा उपराति राजान सिलामति पट रितरा बखाण कीजै छै प्रथम सरद रिति वग्याणीजै छै आमोज लागै छै पितर पर पूजीजै छै धरतीरौ मेल कादमजल पगाल निरमलौ कियौ छै सरोवरा जल निरमल हुआ छै कमल पौइणी फूलि रहिआ छै सरगरा देवाने पितारानू मात-लोक प्यारो लागै छै कामधेनु गाया छै सु धरतीरी पाकी औपधीरा रम चरै छै दूधारा सवाद अमृत सरिखा लागै छै सु कढीरा बडिआरा गाटक लीजै छै पचासूतरा सवाद लीजै छै ।

तठा उपराति करि नै नवरात होम ब्याग हुई नै रहिया छै नव दुरगारा नौरता नसराहौ पूजीजै छै नसराहैरा वणाव भाति भातिरा सिणगारीजै छै छत्र डड सिंघासण घोडा हाथी दरबाररा वणाव गहमह हुइ नै रहिआ छै चाही आळ काढीजै छै भैंसा ऊपरे तरवारियारा घाड त्रुटि नै रहिया छै खाजर नीमोदीजै छै जिके दिगपाल रजपूत सामत अजान याह ठाकुर अडाणीइ नर्यारे आइ रसा राहिया छै दरवार हुलीचा विद्याइजै छै विद्यात वणि नै रही छै दरजार वणियौ छै हाथी घोडा फेरीजै छै महोला मुजरा कीचै छै ।

तठा उपराति राजान सिलामति सरद रितरे समेरी पूनिमरौ चत्रमा सोळै फळा लिया सपूरण निरमली रैणरौ वजली चादळीरै निरण करि नै हम्मनु हसणी देवै नहीं नै हसणी हम देवै नहीं छै मिनि सकता नहीं छै तारा बार बार माहो माहै जोलि योलि नै चरद गमावता छै अण चादणीरी सपेनी करि नै महादेव ननी धमल डूढता फिरै छै सो लाभता नहीं छै इद्र प्यापति जोता फिरै छै इण भातिरी सरद रितरी सपती चादणीरी सोभा विराज नै रही छै राम महलरा महोदय माडीजै छै राग रंगरा मगाज ताइफरा लागी नै रहिआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति इवै चतुरणी रायनादी कितीयारौ भुपितो मोतीभारी लड़ी हुवै निणि भातिरी ऊजळी गोरणीआ उतलै गति उजळै वाघने चदनरी थोळि बिया ऊजळा मोतियारा महणा पैहरिया उजळा वागारा वणाव किया उजळा

फूलांरा चोसर घातियां हाथे उजळा फूलांरा गेंद उजालती थकी उजळी सखीयांरै साथै सहेलियांरी टोली सो रास-मंडल रमणरै ओछाह चांदणीरी रातिरी चली जाइ छै. उजळा वणाव कियां उजळी चांदणी मिलि गई छै. सु आगली सखीआंनू जावनी लखै नहीं छै. लखाव नहीं पढ़तौ छै. तिणि सोंधेरै डोरै लगी जाए छै. उजळी ठकुराणी उजळा ठाकुर प्रीतमसूं जाइ जाइ मिलै छै. इण भांति मरद चांदणी रंग विलास मांणीजै छै ।

तथा उपरांति देव जागिआ छै. काती मासरा वरत महोद्वय कीजै छै. घरि घरि दीपमालिकारा वणाव हुइ नै रहिया छै. जूआ खेलि मंडि नै रहिया छै. दीवाली पूजीजै छै. चितरांम कीजै छै. भांति भांतिरा अनंद वट कीजै छै. गाइवा खरेर मांडीजै छै. कुल संक्रातिरा दिन वरावर हूआ छै ।

तथा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हेमंत रितरौ वणाव कीजै छै. हेमंत रित लागी पछिरौ वाउ फिरियौ. उतराधो वाउ वाजियौ. हेमतरा वरफ उपडिआ टाढ़ौ टमकियां प्रालौ पड़ण लागौ. जिके धरतीरा धणी पताल वासी भुयंगनै धणरा धणी दौलतवंत ओ विहै एकै वग हूँता सु धरतीरौ पुड भेद नै विमरै पैठा. उठे रहण लाग ।

तथा उपरांति करि नै राजांन सिलामति उणि हेमंत रित मांहे वालीमूंध सुहव गोरी गयां तनारौ रस छातीरौ रम अधरांरौ सवाद अमृत सरिखौ लागै छै. सु तो सरगांरा सुखांसों पणि अधिक सुख जांणीजै छै ।

दोहा

सरगे सुरा न वकरा, ना वाजंती वीण ।

नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण ॥ १ ॥

तथा उपरांति करि नै जिके वारै वारै वरमरी कांमणी तेरा चउदां वरसां माहें पनरा सौलै माहें मुगधा मध्या प्रौढ़ा वीसां पचीसां वरस माही जिके कुडी जुवांनी कांमरी कंदली कांमरी कली रंगरी वूटी जीवनरी जड़ी इण भांतिरी कांमणी- त्यांरा उरस्थल पाकी नारंगीयां सारीखी अंगहार पाके वरन कोमल कठोर कुच अँसूं भीड़िआं थकां रहै. उवै कांमणी घणै किस नागर कस्तूरी अंवर अंतर सांधेसूं गरकाव हुई थकी उवां राजांरा मलूकजादांरा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै घणै मंगाव पांन तांबोलरा रस लीजै छै. उजळी सपेत विछाइत उपरै उजळै वणाव कियां उजळी रुसनाई लाग रही छै. इण भांतिसूं हेमंत रित मांहे रातरा सुख विलास मांणीजै छै. हमे ससिर रितरा वणाव कीजै छै ।

तठा उपराति राजान सिलामति करै कै हेमाचलरा पहाडरा टुका उपरै ऊजला वरफरा टुक वधण लागा वडाई पाई दिन लघुता पाई, इहा नदियारा जळ जमि ठठ हूआ नदी खीण पड़ी घटी ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति जिण भात लैणायत दीठा दैणायत घटै तिम तिणि भाति दिन प्नि निसि दीठै सूरजरौ तेज घटण लागो नै सूरजरौ तेज घटियौ राति मोटी होण लागी वडाई पाई दिन लघुता पाई तिणि ओझौ हुअ लागो जिमि कोई भलो भूडै वरावर कीजै तरा घटतौ जायै भूडौ भलै वरावर कीजै वधतौ जाय तिण भाति राति वरावर हुई छै सूरजजी ठदिरा मारीआ उतर पथ छोडी नै दक्षिण सामा वहण लागा ।

तठा उपराति राजान सिलामति उण रित माहै सूरजजी पणि मकर सक्रात भेला हुआ छै ठदिरा दनाया आपरै महले आया छै नै आकासनु पण राति छोडै नहौ सूररा पयोधर वधै तिण भाति आवा प्नि दिन वधण लागा त्रिरहणी वामणीआरा मुप्रा कमल वामरी दाहसूं वळीआ छै तिण भाति गहै जळिआ छै कमल पोइणी वनसपती वणराइ नळी नै रही छै अगनी जळ सारीयो ठठी लागै छै जळ आग गह मरीगनौ लागै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति तिण ससिर रितरी माह मासरी रातिरौ 'प्रालौ पडै छै उत्तराधरौ पवन उतामलो टीया प्नाइ नै रहीयो छै तिणि रित माहै छोड दालिआ उडा भोहरा माहै उडा तहपाना माहै खेर कोइलारी मकाला जगाडीजै छै तपन तापणरा मुख लीजै छै उणि मानिरी गरम ठौड माहै उची सोड तलाई सेभ्रट तक्िया घणूं ऊजला गरकाव गरा परानैरुसूं भरिआ एका घणूं उजळी गरकाव त्रिद्धात कीजै छै पीलचोसा अदारणीआरी रुसनाई लागि रही छै तेज पुज आमप आरोगीजै छै प्यार कर नै सौंस दे दे नै प्याला नीजै छै घणूं लौंग पान बीडारा रस लीजै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति घणी वसतूरी क्रिस नागर सारज जनाद चोआ चवेली अन्तर अम्वर भाति भानिरा तेल मुगध साधैसूं गरकाव हुआ थका उवे राजान आलीजा आलीगारा नाह उला अलवेलिआरा पदमणीआरा रमण भाणै छै तिण भाति गलवारइतीआ घातिया थका वालौ जोवन माणीजै छै इण भाति मुगबोल करि रात पाडी गारीजै छै परमाति बुलगारा रा गदरा पाथरीनै छै घणी चवेली तेलरी मइण फीजै छै हमामै गरम पाणीसू नाहीनै छै अगोडी फीजै छै वागारा वणार फीनै छै साधायानैसूं आणी साधा हाजर कीनै छै भाति भातिरा साधा लगाडीनै छै समा मजलम कीजै छै इण भाति निसिर रित वणाव घणायीनै छै सु फटीजै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति हमै आगे वसंत रितरा वणाव वखाणीजै छै. दखिण दिसा मलयाचल पहाड़रौ पवन वाजियौ छै. सीत. मंद सुगंध गति पवन मतवाला मैंगल ज्यां परिमल भौला खावतौ वहै छै. अठार भार वनमपनी मकरंद फूलादिरा रस मांगतौ थकौ वहै छै. अंबर मोरीजै छै. कूपला फूटीजै छै. वणराड मंजरी छै. वासावली फूटि रही छै. केसू फल रहिया छै. रिनिराज प्रगटीयो छै. वसंत आयौ छै. भमर मधुकर भंकार करी रहिया छै. मधुरी वाणीरा सुर करि कोकिला नालि रही छै. वाग वगीचां दरखत गुल कारी भित्ति फल रही छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति जिके छोगाला छयल छवीला जुआन हूसनांइक फूलांरा छोगा नाग्वीआं थकां फूलांरा चोमर पेहरीआ थकां अगर्चं मरगचं केसरिअै कचमैलै वागे कीअै घणै चोअै अंतर फूलेल गला मांहि भीनां थकां वणै अंवीर नै गुलाल मांहै गरकाव हुआ थका मोली भरिआं थकां दिसि दिसि छूटि रही छै. वणै अवीर नै गुलाल मांहै गरकाव हुआ थका अंवीर गुलाल उडि रहिया छै. दिस दिस केसरिआं पिचकारी छूटि रही छै. आकाम ऊपर अंवीर नै गुलालरी अंवरै डंवरी लागि रही छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति सारीखा साथरी टोलियां क्रियां थकां भूल गैतूल पडि नै रहीआ छै. केसरिआ वणाव कीआं थकां आगे वखाणी तिण भांतिरी नाडका पात्रांरा हुल चलीआ जायै छै. डफ चंग मुह चंग वाजि नै रहिया छै. वीणा ताल मृदंग वाज रहिया छै. वांसली वाजि रही छै. दोलकां वाजि रही छै. फाग गाइजै छै. फाग खेलीजै छै. नाचीजै छै. हाम विणोद कीजै छै. हास रस हुइ नै रहीयो छै. फागोटांरा मुख सवाद लीजै छै. वरि वरि वसंत राग हुलरावीजै छै. कामदेवरी दुहाई देतां फिरै छै. पंचम राग गाईजै छै. वसंतरा वणाव हुइ नै रहीआ छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति होलिका प्रव पूजिजै छै. आगे वखांणिया तिण भांतिरा अमल माणीजै छै. हमै ग्रीपम रितरा वणाव कीजै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति इतरा मां ग्रीपम रित आई छै. सो किए भांतरी वखांणीजै छै. नैरत विसारौ ऊनां पवन वाजियौ छै. उन्हालसी प्रगटीअौ छै. जेठ मास-लागौ छै. मूरिज ब्रख संक्रानि आयौ छै. सु जांणीजै छै. मूरिज ब्रखां नै दरखतांरा ओलो ताकै छै. तो वीजां लोकांरी कौण वात. मूरजजी उतराध सामां वहै छै. सु जांणीजै छै हेमाचलरौ सरणो लिअै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति ग्रीपम रित मांहै पवन पावक समान वाजियौ छै. प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पांचमे अगनी तेज तत भेला मिल नै

रहीआ छै प्रिथीरा लोक निहगम पसी छै सुर तरवर हू सारा ओला ताकै छै. तरवररा पान मडिआ छै सु जाणै वख विना नागा डिगवेर सारीखा नजर आवै छै निवाणारा पाणी नीठिआ छै पोइणी बलि नै रही छै ओई जळ माछला तइफडी रहीआ छै गनराज सूग सरोवर दूढता फिरै छै सादूला केमरीमिह ज्वालानल अगनीसू बलतां थका वीमा बनरा हाथिआरी पेटरी छाया सूता पिसराम करै छै भुयग सपे नीसरीआ छै सो लू नै तावडैरी अगनिसू बलता थका द्रीडि द्रीडि नै हाथिआरै सीतल संढाहला माहै पेसि पेसि रहीआ छै इए भातरा सजल जीव तिके निजल हुइ नै रहीआ छै ।

हमें तठा उपराति करि नै राजान सिलामति प्रीपम रित माहै जिके राजाना ठाकुरना सुर जेठ माहै कहीआ तिके सुर सुर जेठ कहता इन्दरी ठकुराई पिए नहीं ऊआ राजारा सुर कहौनै छै जो ए वगीचा माहै हमामार महल छोद पर दालीआ घर तहराना उणाया छै भरोसा, जालिण, छाणिअँ पवनरी हवा पडि नै रही छै औ महल केसर गुलाबसू छाटीजै छै माहै जल गुलाबसू चहवचा भरीआ छै घणा मलयागर चदण, केसर, कपूर, घणा गुलाब नै सुरा बरफरा पाणीस घसीनै छै अगे लेपन लगावीजै छै अगे खोल कीजै छै गीमरौँ वाउ दोलिआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उवा हमामा महला बाहरि बाग-वगीचारा रसना लाग छै. चोकीण मिडाइत घणी छै पायती जळ कूल छुटि नै रही छै बागँ रमतारा चोहनाचा भरिआ छै सजाना भरीआ छै जलत नलारा फुहारा छुटि नै रहीआ छै अगरे गुलकारी, रग रगरी बूटी, फुलानरी सजजी लागि नै रही छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति एए बागाइत माहै प्रीपम रितरा, विलाइती वालेरा रस पाना, उची ठौडरा चगला, राउटी बाला उधरा ठासारा गूथिआ भाति भाति खमपाना वणाया छै घणै सीतल पाणीसू सीचिआ थका वीमण्णा वाइमयासू हीफा लाइ रहीआ छै तठै विलाइतरी गूथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै तिण उपरि बैठा छरीस रोग हरे उपरे दोलिआ गिलमारी विछाति बाणि नै रही छै सेमा उपरै घणा फूल कपूर पायरीजै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति किण भातिरा मरवत छाणीजै छै घणै वेदानै, दाडिम कुलीरा रस लीजै छै मो घणी कालपी मिसरीरा भेलमू घणी पलची नै मिरचारै भेल बोह लागै यनै ऊजळा कपूर घासी गगोन्क पाणीसू ऊजळै गळ्ळै भोळि भोळि भारीजै छै ।

तठा उपरानि करि नै राजान सिलामति इकत्रीसमी ताररा पुराणा पोसत मडवाईरा

नीपनां, आगै वखांणियां तिण भांतिरा, तजारी तंज, घणी कासमीरी केसर, घणी ऊजली मिसरीरै भेळि कपूर वासीअै पांणीरी कन्हारी भारीजै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति तजारैरी वाड़ीरी नीपनी, नीली घण पाकी, पुरांणी, आगै वखांणी तिण भांतिरी भांगि घणी एलची, मिरचां, पांन, जावंत्रीरै मेलसू पाखांणरी कूडीआं सरवंगरा घोटासूं ऊजळा प्राचारी धमांडी घणै ऊजळै मिसरीरै भेळ ऊजळा गरणांसूं भारीजै छै. ऊजळां प्राचारी खवास्यां ऊजळा रूपोटां लीयां हाजरि ग्वड़ी मिसरी, अफीणसूं अरोगाड़ीजै छै. कनाथां पड़दा तांणीजै छै. चोहवचा मांहे जल केलरा रंग तरंग मांणीजै छै. कुंअर पदौ भोगवीजै छै. चौमासो लागौ छै. दूसरी असाढ़ आड संप्रापति हूओ छै. तथा आगै वरसात रितरा वणाव कीजै छै, सो आगै वखांणीजै छै.

दोहा

सरद हेम नै सिसर रिन, रिति वसंत प्रीपम्म ।

वरपां वान वखाणि तूं, ए पट रित ओपम्म ॥

इति श्री पट रितिरै वात वणावरौ दूसरौ प्रस्ताव पूरो हूओ ।

*

हमै तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति एकाणि प्रस्ताव महाराजा श्री राजेसररा परमाणा आवू गढ़रा मंडावरि आया छै. अजमेर थांणैरो हुकम हुयौ छै. महाराजा कुअर श्री राजान राचाउत मारु मंडोअरसूं अजमेर पधारिआ छै. फौज वंधीरा वणाव कीजै छै ।

तथा उपरांति करि नै राजान सिलामति अतरा मांहे पातसाह महमद मुसतफाखानरा चार दूत विचरिआ हुंता त्यां हकीकत राजानरा पातसाह आगै पोहचाई. सत्तर खान बहत्तर उमरावी वांण खड़ा छै. पातसाह श्री राजान कुअर राजाउत वात पूछै छै. राजान कुअर किसानक रजपूत छै. दूत हकीकत कहै छै, जु राजान कुअर उठती वहीरौ जुवान आजांन वाहू राजहंस लीलंग छै. भेदंग छै. तिसा ही वागांरा वणाव, तिसाही मूछांरा मरट, तिसा ही भुजांरा आमला, तिसा ही पोसररा गाढ़, तिसा ही कामवटरा अंग, तिसा ही रजपूतवटरा आचार देख नै महाराजा राजेसर अजमेररै थांणै राखैआ छै. हसम हुकम सौपीआ छै. हजरितसूं मालिम छै. राजान कुअर वत्रीस लक्षणौ छै. तिके कहै छै. सत १, सल २, गुण ३, रूप ४, विद्या ५, तप ६, अलप अहारी ७, वडोचित उदार ८, तेज ९, धनकर १०, दोलतवंत ११, सकलनाइक १२, दयावत १३, विचखण १४, दाता १५, बुधिवत १६, प्रमाणिक १७, जस १८, उदिम १९, लाज २०, धीरज २१, राज सनमान २२, सूर २३, सादसी २४, बलवत २५, भोगी २६, जोगी २७, भुजायण २८, भाग्यवान २९, चतुर ३०, ग्यानी ३१, देवभगत ३२, पर उपगारी ३३ ।

कवित्त

सत्त सील गुण रूप विद्या तप अल्प आहारी ।
 धन उदार जस तेज चतुर नाइक उपगारी ॥
 बुद्धिबत बलबत राज सनमान विचव्खण ।
 भोग जोग गुर भगत भाग परमाण भुजायण ॥
 जस लाभ धीरज साहस धरण दया ग्यान उद्यम करण ।
 रिणि सूर गन राजानरा विधि बत्रीस लक्षण वरण ॥ १ ॥

तथा उपराति करि नै राजान सिलामति फेर पातसाहजी हुकम कीयौ हकीकत इत
 कहे छै कवले जिहानिआ पातसाह सिलामति राजान कुमार पट भापा निवास छै चवतै
 विचारौ जाणहार छै ।

दोहा

सुर आसुर अरु नाग नर, पसु परीकी वाण ।
 जोदाना जाणै सुपह, सो पट भाप सुजाण ॥ १ ॥

काव्य

ब्रह्म ज्ञान रसायण सुर धुन वेद तथा जोतिप ।
 व्याकरण च धनुर्धर जलतर मन्त्रान्तर वैदक ॥
 बौध्दैनटिक वाजवाह नरसे सबोधना चातुरी ।
 विद्या नाम चतुर्भ प्रतिनिि कुर्यति नो मगल ॥ १ ॥

तथा उपराति करि नै राजान सिलामति तीसरै हुकम दूत अरज कीधी जु राजान
 राजेसररौ तपतेज परमेसर परब्रह्म, अजाम, निरजण, निराकार, ससार सिरोमणि,
 ससार माधार, ईश्वरा अवतार हिंदू महाराजाधिराज श्री राजान राजावत मारु औरावत
 मूरजवमी इग भातिरौ छै ।

तथा उपराति करि नै राजान सिलामति इणि भातसू राजानरी बात सुण नै
 अजमेररै याणैरी हकीकत सामल नै आदि घेर उगराहनू असुराण तुरवाणरा ल राजान
 ऊपरै विदा हूआ सो बिण भातरा कहीजै छै रहमाण रहीम अलाह परवर दिगार, पीरा
 विक्राररौ औलाद, चौबीस अपलीआरी करामात, अयलीण आम्तीक कवले जिहानिआ
 टजरनि पानिगाह मुहमद मुसतफारानरा मर्राउ हुसा हुसेनवा अलीखान सारीवा गोरी,
 पनाण, सैद, मुगल, उरबका मुमलमा आकीनदार, प्रीम मीपारार पदणहार, पाच बख्त
 निगारा करणहार, मुह कलमेरा पदणहार, पैसता, आरबी, पारसीरा धोलणहार,

आउखी ढाडी राखणहार, बालि वाधि कोडीरा मारणहार, अवली मूंठीरा तीरंदाज, असली जादा, कोल वोलेरा राखणहार, गाजी बहादर ताजक नीलक तार, जरवाफ, वादले, आसावरी, विलाती, हजारी कपडैरा पहरणहार, देस देसरा, जाति जातिरा, मीरजादा भेला हूआ छै. माही मुरातवा समेत पोहकर अजमेररा थाणां ऊपरै विदा हूआ छै. आवाज फूट नै रही छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति पातिसाहरा दल वादल मोगर थाट उपड़िआ छै. वीस लाख असवार पाखरीआ लोहमीवाड़ किआं बगतर, हाथल, टोप, भिल्लमें, चिलकतां ऊपरै पूरी सिलहा किआं, गरकाव हूआ थका छत्रीस आयुध डाविया रहै छै ।

कवित्त

सर सींगण हुरि हुंत सांग गेडीहल मोगर ।
 गोळी गोफण संख गुरज मूसल घण तोमर ॥
 ग्रासी चक्र खडग गदा चावक नै फरसौ ।
 कुहकवांण वंदूक ढाल कट्टर खपटसौ ॥
 सेलह त्रिसूल सांठो धको वली वंसहड़ि कड़ि लगण ।
 भूकंत चहुलि सूलो चटक दंडायुध छत्रीस रण ॥ १ ॥

इण भांति छत्रीस आयुध डाविआं, नव हाथां जोध खैपांन तुरक, अवला पाघड़ांरा जमरांणैरी जमात सारीखा निजर आवै छै. जाणै कलिपंत कालरौ समद उलटीओ छै. तिण भांतिरी समंद व्यूह सेन्यां कीआं चाली आवै छै. कांही जलजात व्यूह सेन्या कीधी छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति अठीना सका वंधी हिंदू भाजणी परत राजावत राजान मारु गुरडव्यूह, प्रिधव्यूह, चक्रव्यूह, सेना रची छै. विहू फोजांरी बडस चाली जावै. हसमरी धसन पड़ी नै रही छै. सूरिज रथ खांचि नै रहीओ छै. गयणा गरज डंवर छायाँ छै. सूरिज पोले पांन सरिखौ निजर आवै छै. मुरचांरा मुकामला मंडाया छै. अणीमेल हूओ छै. रायजादारा भाला भलकि नै रहीया छै. तवल वंधा मीरजादा वाकां बहादरावां नै तारा तवल वाजि नै रहीआ छै. भेर घाव लिनै रहौ छै. नोवतरा टकोरा लागै छै. नोवति भींगड़ि पड़ी नै रही छै. भेर, नफेर, करनाल भभक नै रह्यौ छै. मुरणायांरी क्रहक पड़ि नै रही छै. बडो राग सिंधुडो वागि नै रहीओ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति किलकिला नालि छूटी सु गोळांरी आगाजसूं धरती धमकि नै रही छै. जवर जंग नाल्यांरा निहा उपड़ि नै रहीआ छै. गज नाल्यां,

सुर नाल्या, ज नूरा नाल्या, रामचर्गी हथ नाल्यारा चणणाट वाजै छै आकास छाथो छै सु जाणै तारा छूटै छै कुहक वाखरी कहक पडि नै रही छै आतस आराथा हवायारौ मारको पडि नै रहियौ छै अधार घोर हुइ नै रहीओ छै इणि भातिरौ औसर मडि नै रहियौ छै रौद्र रस प्रगटीओ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति पचास टाक चिलेरीया अणहारी कजाणरा घोकार वाजि नै रहिआ छै त्रिंगडा भालोडारा वूम पडिआ छै सवायै मेहरौ जोरि सोक वानै तिण भाति परसारी रूग वाजि नै रही छै केवर दुवासू कोरै पखाँ फूट फूट नीसरै छै तीरा गोळीआ रै मारक पडतै जिनावर पास । समारण न पात्रै छै आकास उडत पगो पडै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति असवाराही वाग उपाडी किलकिला ज्यौ उपाडि उपाडि हेमरा नारनीजै छै भूसणा उपरै वरछी चमकि नै रही छै रामण गाजा सेलारा धमोडा पडि नै रहीआ छै सरकूत आर पार हुश्रै छै, बगतरारा तथा फोड़ फोड़ पृथी परा अण्णीआला थणी नीसरै छै सु जाण धीवर पूठै जाल माहे मझा मूह कानीआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति जिके सूर सामत रागताला छै सु हाथीआरा कंभाथला दावूसला पाउ दे दे नै घाउ बाहै छै कडा नीसाण पाडै छै पातिमाहरा गूडर गाहीजै छै गजटला गाहीजै छै, वीरा रस ऊपनौ छै वीरा रस मातौ छै नीर हाक वाजि नै रही छै, नाराजीआरी फाट पडि नै रही छै बगतरा उपरा तरवारीआरा बाह त्रुटि नै रहीआ छै जाणौ बादला माहे बीजडिआरा सिला उपडिआ पाखरा उपरै सारधारा फूलधारा वाजी सु ठणणणण जाणै परमातरी भलतर ठणकी, नरगतर विघस हुआ कना वह भायामी राति बाही तठा उपराति करि नै राजान सिलामति पैतकारी गहकि नै रही छै भयानक रस मातौ छै भयानक रस हुइ नै रहियौ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति राजान राजाउत मारुा सामत रादजादा ण्क पासर, लाय पासर, अण्णीरा भमर जाहरा पग मेर माथै मडीआ छै ण्क के रागतालेर हाथि हजार हजार मीरजाण पड़ीआ छै आगलै कचेमरै कहियो ।

दोहा

सुर अमुरा इण आहुडे, आही एक अयक ।

पिडि तितरा हीदु पडै, तेता सहस तुण ॥

मेधाय पटि घाण हुआ छै चालीस घोस रिण माथरै पना हजार पडिआ छे बरकारी बाडि हुइ नै रही छै विगुजाराही बालद पडै तिण भाति घोडा भडा हाथीआरा गर पड़ीआ छै बसतरा केमू फूलै निण भात प्रण पायाम् प्राया थका

डोलिआं, भोलिआं ऊपड़िआ छै. जिके अवसांण सुध खत्री छै तांहरी अरोगी धिखै छै. जिके सतवंती छै तिके सांमरै साथ वळण चालीआ छै. तिके सनी अंगनि सनान करि नै सरग भोगरा सुख मांणै छै. पूठै करण रस कीजै छै. जगवासी लोग छै त्यांनां करण रस ऊपनौ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति राजान राजावत औरावरै रिणखेत हाथी आयौ छै. रिण जीत नगारा धुवै छै. फतौरा सैवानां वागा छै. जस जैतरा डंका वाजिआ छै. कुसल खेम आणंदरा वधाइदा दौड़िआ छै. घरां साम्हां फौजांरा वहुस चालीआ छै. आवै छै सु किए भांत वखांणीजै छै. पातसाहरा देरा हसंम रखत तखलूआं हूंता सु आंणि थाणै दाखलि कीआ छै. अजमेररा थाणांरी जमीत कीजै छै. घरि घरि मंगलाचार आणंद वधामणां कीजै छै. घणां माल निजराति उवारीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति तिणि प्रस्तावि, राजानरै सिकारनी असवारी हुइ छै. नोवत टकोरा पड़ि नै रहिआ छै. वाहरि डेरा कीआ छै. असपका सड़ी हुई छै. तंवू, समीआंणां, सिराइचा, रावटी, वाडि समेत करणाटी, गूडर तांणीआ छै. दल वादल लागि नै रहिआ छै. रजपूतांरा थाट मोगर मिलै छै. महोला लीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हजार तोपची खंधार, शब्द भेदी आगवर जागरा जाळणहार, आकास उड़ता पंखी पाडै, इण भांतिरा नाल गोळी दारू जामगी साज बाज किआं थकां, मुंहडा आगलि सजि नै ऊभा छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति फौज वंधीरौ वणाउ कीजै छै. फौजां आगै आतस चालै छै. जवरजंग नाळि, किलाकिला नालि, जंवूरनाळ, गजनाल, हथनाल, सुतर नाल, कुहकवांण, राम चंगी कई भांति भांतिरा आरावा रहइए घाती आवै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति हाथी सज कीआं वहु छै. सु किसड़ा वखांणीजै छै. थेट सिंघल दीप अनोप देसरा नीपनां, घेधंगरतांह, भद्र जातीआं, हाथीआंरां कूभाथला भांजिआं सवामण मोती आंमल प्रमाण नीसरै, अदार भार वनसपतीसूं ओघसतां थकां हमला खाई नै रहीआ छै. उरै गजराज रेवा नदीरै कांठै द्रह ऊपरै पांचसै हाथीरै हलकै लीआं मोड़ी खर करि नै रहीआ छै. पांणीरी छोळांरा भकोला खावता थका गज कीला करि नै रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति कपोलांरै मदगंध करि नै भौरांरा भोर पड़ि नै रहीआ छै. भौरांनूं वैठा सासहे नहीं, सूंडीर वरां वलाका खाइ नै रहीआ छै. तठै कालवूत हसतणीरै फरस करि नै छिवितरी खाड मांहु पड़ै छै. पछै लोह सांकलरा प्रास

नालि नैं तिके हाथी पकडीजै छै इणी भातिरा सीघली गजराज वेसास नैं आखीआ छै. ताहनु घणा मलीदा, वेसवार, भोगर दे दे नैं पाटि आणि नैं सम्हाया छै तथा गजराजानू सार जडीआ जजीरा लोह लगरा लगाडि नैं खभू ठाणासू छोड़ीआ छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति बडा जूह गयदा गजराजानू गडा चरखीआ मारि, पोतारि, नीठ बसाणीआ छै रुमाल फेर माडीनैं छै आमला तेलरो बोह दे नैं काला जूह कीआ छै गजराजारा भाल कपोल सूबाहल घणै लाल सिंदूरसू चरचिआ छै जाणै सारयात गुणेशजी प्रसन्न हूआ छै कना इद्र धनुष फानिआ छै तला जोड पटा भरत कपोलारा नाण छुटि नैं रहीआ छै ताह गजराजारा मद छरित वारेह मान उतरै नहो छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति पापती सेत चमर विराजिआ छै जाणै मेरगिरसू गगारी धारा धसी छै ताह गजराजारा ऊजला दातूसल बगडीआसू जडिआ छै जाणै घटा बीच बगलारी जोडी बडी दीसै छै देवलरी घटावलि जेम घटा ठणक नैं रही छै जाणै घणा बूठा पावम डेडरा डहक नैं रहीआ छै गजराजारा डोल रेसमी नाडीसू भीड नैं जटा जूट कीआ छै जरनाफ वणावटरी भूलासू ठाकिआ छै सार पाग्यरसिरी भालरी लोहनी कीठी उपरै सनाह करि नैं गरकाव कीआ छै गजराजा उपरा गजदाला दलकि नैं रही छै जाणै पहाड़ा ऊपरै गजूर कल आवारी मजर दलकि नैं रही छै गजा ऊपरै धजा, नेजा, चीधा फरकि नैं रही छै जाणै हेमाचलरै टूका माथै कसू फूल नैं रहीआ छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति उआ गजराजा आगै गडा चरखी दारू आराथा छुटि नैं रहीआ छै जाणै धूधलै पहाड पापती रीछी लाग रही छै मदि यहता मतवाला ब्यो पग नीठ भरै छै गडारा तोडणहार, दरवाजारा फोडणहार, दळारा मोडणहार, दळारा पगार, फोजारा सिणगार, इण भाति गजराज सिणगार पापतीआ छै पीलनाण कूमायला माथै पगारा आगूठा चलथै छै. गजवागा हेंचे छै घता घता करै छै नाग जो छछोहा जाणै वादलारा लगस पवन चोरसू चालीआ जाअै छै इण भातसू गजराज सुदहा आगै ही डुलै छै बोहा फरता हमलाग्याना यहै छै इण भातिरा हाथिआरा हलका साज घाज सहित साजति वणाव नैं राखीआ छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अजमेर घाणैरो मुकाम किआ छै सुखासण पालखी चोढाल रथ पाइक बणि नैं रहीआ छै कटकारा खर पडि नैं रहीआ छै हाथी लड़ापीजै छै पाइक सिरंम सामे छै फूलहाया फेरीजै छै भाति भातिरा तमासा लाग नैं रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति चौमासारी छावणी हुई छै. आगम रित आवी छै. आसाढ़ धूधलीओ छै. उत्तराधरी घटा काली कांठलि ऊपड़ी छै. आड़ंगरी गुडलि मांहे ऊंडो गाजीओ छै. वगला पावस वैठा छै. पंखीयां मालास मारिया छै. पावस पड़ि नै रहीआ छै. परनाल खाल पहाड़ खड़कीआ छै. चात्रग मोर वोलि नै रहीआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति आगै कवेसर गंगेव नींवाउतरौ वेपारो वखांणीओ छै. तिणरी उकति आंणी छै. तिण मांहे कवेसुर कहै छै. वात वणावरौ पण भेल क्रियौ छै. पण उण कवेसररी उकति बरावर नहीं. हमें बरखा रित मांहे श्रावण नै भाद्रवैरी सांध बरखा रित मंडी दूह वीजां झड़ लायो. डाल डाल अंवर चमकियो छै. सेहरां पाखर पड़ी. भाखरां माल हरीआ. पांणी एकनाल भरिया. चोटीआली डहकि नै रहीआ छै. परभातरै पहररी गाज आवाज हुड़ नै रही छै. राजा नै सिकाररी उमंग मनमां आंणी छै. हुसनाकां तरकसांसूं मैण कपड़री खोली उतारि लीधी छै. कवाणां चाक कीजै छै. हजार औराकीआं आरवीआं उजवकीआं-तुरकीआं ताजीआं पलाण मंडीजै छै. तिके किए भांनरा औराकी, आरवी, तुरकी, उजवकी, ताजी जिके लंकी पाररा उतारिया आंजणियां आंखीआंरा मंडीकाट औराकी वाउ मूठ पकड़ता डाल भाग मांकड़ ज्यों डांण मांडता आडी आंकुलाटां उभलतां असील विलाती जाहरा सरीर आरीज्यां ऊजला भांखै मुखमली पसमरा, कलीसी कांनरा, भूठमी ट्रेठरा, कूकड़ा कंधरा, लोहमे बंधरा, तोछड़ी पंठरा, चोवड़ी धूवरा, चांमरी पूछरा, निमंसी नलीरा, वाटके नल्बरा, धावणी ट्रोड़रा, मूडा म्रिव ज्यौ कदना, नट ज्यों नाचता, कुलचता, अकुलणी नेण ज्यौ ऊछाछलां, आपरी छाआंमूं डरपता, वाज पंखी ज्यों ऊड़ाण भांपतां, जांणै मूरजरा रथ असमानरै फेर लागि नै रहीआ छै. प्रिसण ज्यों मुख वांको कीआ थकां कनाअण मिली, आंजारसूं छिनाल मुख वांको करि रही, कूभाररा चाक ज्यों कूडे फिरि रहीआ छै. डाल सरीखा चौड़ा, उर ज्यांरा आंठुआंरा टलासूं हाथी धको खाइ सकै नहीं. माणसरा कमल ज्यो नासा फूल रही छै. नासारा फरडका वाजि नै रहीआ छै. वेपख मूध जिके सालहोतरमां बखाणिया तिहड़ा इण भांतिरा तेजी, धरारा खूदूणहार, खुरतालांरा अधखुरांसूं धरती ध्रमकि नै रही छै. तांह औराकीआं, आरवीआं, उजवकीआं, तुरकीआं, ताजीआं पूठ पलांण मंडीआ छै. सो किए भांतिरा पलांण जिके समंकरी नीपनी मोरवी पलाणी, दामण चमकती, पिड़ांमारी लंगामी आरसी आलीआंरी छालीआ पाखरां घातिआं, पलांण लगांण, जीण साकात साम्-वाम्-लूव-मूंव करि नै श्रामणरी त्रीजणी ज्यों पांडवे सिणगार पाखर घाति चोकि आंणि हाजर कीआ छै. राजांन राजावत मारू किसो एक जी जिसो एक खत्री धरमरी चौवीस आखड़ी वहै. कुंण कुंण आखड़ी कहै छै. दातार दातार, भूभार भूभार, परभोमि पंचायण, मैदेसहाथी, काछ वाच निकलंक, परनार सहोदर, आवती जावतीरी मूठि पूठि जोथे नहीं.

टपारी वसुत रावै नही भलफलीआ भासि मुडीआ मेर, पुलीआ पखत माररा, पाचरा लोहरी गाठि, विरदारौ भारो, घाट छराड, थाका सतरो विमराम करडदत, कामरो कोट, नेठाह धरधीर, पहतौ काळ, इहीप्रो काहर, तोरणरा आग्या, अगनि फूल, सतीरो नालेर, कालीरौ वेहडो, स्लीआरौ जोड, राकारौ मालवो, कुआरी घदारौ वींद, पाचसै भडां भाइया भात्रीजालिआ, हजार असवारारी ढाळ िआ, भूसीअै लोह लिआ, काळै वरछिआरौ चूग िआ, चडतै सूरौ सिमार चडिओ छै भेर घाउ वलिओ छै होकारौ होकारो होइ नै रहिओ छै लाल बरछी थकी नै रही छै पगेन वरावर चालता घोड़ारा हाठुआ उपरि अथ लोहीअैरा भाग तजारैरी चाडीरी भाति विराज नै रहिआ छै फौज वरावर चालता आनास उरै रोहरा डघर हुइ नै रहिआ छै ।

तथा उपरात करि नै राजान सिलामति मिंकार पाखती जिनावर चालिआ जाअै छै । सेत सूआ, सनज सूआ, सारों, मैना, कोइल, तीतुर, कागा-कउआ, सेत काग, सेत कूतर, उडण गिरहवाज, लग्न जातिरा परी, भाति भातिरी मीखी भापा बोलता, पन्ता कठपिजरै घातिआ वहे छै ।

तथा उपरात करि नै राजान सिलामति राज, कुही, सिकरा, सीचाणा, जुररा, तुमती, हुमनाका सारवानारा हाथा उपरासू सगगाट करता छूटै छै वाइ पररा जोरस नीला ग्राम धरतीसू लपट नै रहिआ छै आसमानरै फेर जितरा जिनावर चिडी, कमेडी, भाट माही आरै छै तितरा भूपटामू मारिआ जाअै छै ।

तथा उपरात करि नै राजान सिलामति मडा मिमारी सिंगळी, मादुल, पटाला, केहरी ननइथा, कठीरीआ, रीश्रीआ, तेलिआ, तींदला, लकीरिआ, बघेरिआ, चीतरा, भाति भातिरा, जाति जातिरा, नाहर साकले जडिआ रफुअै गाडे बैठा, कमता, कण्णता, वृगाड करता वहे छै ।

तथा उपरात करि नै राजान सिलामति कानली कृतरा, लाहोरी कृतरा, पिलाती कृतरा, लोलमी, लालमी जीभरा, वलिमे पूछरा, लापडै कानरा, नाइमी कृतरा, सिघरा हधरा, केहरी कधरा, भ्रफरै रोमरा, केपिना रोमरा, इण भातरा कृतरा, चीतरा, मुयमली, रेसमी मुगारा वणाआ, साकळीआ जडिआ, वेहला पालपिआ उपरे बैठा वहे छै ।

तथा उपरात करि नै राजान सिलामति मिंकारी ठौड पढाडारी पाखती धनारा मगार मिलि नै रहिआ छै, जाणै घण्ण निनारा विछडी मीन मिलै तिण भातिरा रूप मिलि नै रहिआ छै रूपारा भुइ महादेवरी जग ज्यु जुडि नै रहिआ छै रूपारा जूट जुगान मल्ल जुटै तिण भातिरा जुडि नै रहिआ छै रूपारा जूट रामचन्दरी वारी सेन्या ज्यौं रीछारी जमात सा निनरे आरै छै तिण भाति दीसै छै इण भातरा वामगारा

मांहे हरिण, सूअर, सांवर, रोज, खरगोस, गेंडा, खरगोस, गेंडा खग, भांति भांतिरा जानवर वनमंगरा मांहे चरें छै. सिकाररी हौक वाजि नै रही छै ।

तथा उपरांत करि नै राजान मिलामति मांखिरा उकासिआ सूअर भावरांरा मोदा फाड़ फाड़ नै निकलिआ छै. सूअरे राते खन कियो छै. मूरे गुलवाड़ि विधांसिया छै. त्यां मूरांरै मोरै औराकी, आरवी, उजवकी, तुरकी, ताजी लगाड़ीजै छै. सतपुड़ा पहाड़ा मांहे दराजा वंदूकांरा खललाट पड़सादा पड़ि नै रहिआ छै. प्रीथ पंचांरा सरांरी सोक वाजि नै रहिआ छै. सेलांरा धमोड़ा पड़ै छै. सेलांरा फळ मूरांरै मोरै भांजि भांजि रहिआ छै. मूरांरै मोरै भूखा वाज ज्यो अरुवार नै घोड़ो आफलि रहिआ छै. सूअरांरौ सिकार मांणीजै छै. एकल दाहीजै छै. रहड़ मंगाइजै छै. रहड़ू घाति घाति नै चलता कीजै छै. इति फौज बंधी मसलत भारथ जुध सिकाररौ तीमरौ प्रस्ताव पूरौ हुवा ।

दोहा

फौजबंधी मिसलत जुध, भारथ हंदो भाव ।

दांनस वात वणावरौ, ए त्रीजो प्रस्ताव ॥

*

तथा उपरांत करि नै राजान सिलामति रातो धाके ते दारु पिआं तासीआ त्रिखावंत हूआ. बेपारहरैरी हांस तरग माणणनू हजार असवारां तलवारे माथेनू वागवाळी छै. सो किये भांति तलाव जांणै दूसरौ मानसरोवर रातासी एके रडिरै माथै पांडरौ नीर पवनरौ मारिआ करौडै फीण आछटतो ठेपां खाइ नै रहिआ छै. कही आंसमां पेठां पगांरा नख भ्रंखै, दूधरै भौळै विलाव ब्रांसै पालिरै फेर केलिरै गिरदवाइ मांहे सारसांरा टोला भीगोर करि नै रहिआ छै. मांहे सूआ कोइल मोर वपैया वोलि नै रहिआ छै. आडा डहकि नै रहिआ छै. वतकां वकोर करि नै रहिआं छै. डेढरा डहक नै रहिआ छै. हंस कीला करि नै रहिआ छै. कमल पर फूल नै रहिआ छै. पोइणी थरकि नै रहिआ छै. भंवर गुंजारव करि नै रहिआ छै. पालिरै फेर गरदवाइ उपरि बड़ नै पीपल साख मेल हुइ नै रहिआ छै. ऊपरि बड़ा नै पीपरांरी घटा बंधजिनं रही छै. नै तलाव नै ते छायारी हांस तरस माणणनू हजार असवारांसू राज नै आइ पागड़ा छाडिया छै. होलिमें जिहाजां पाथरीजै छै. पंचरंग बादल होइ तिये भांति राग रंगरी विद्याइत चांदणी कीजै छै. भांति भांतिरा दुलीचा गिलभा ढाळीजै छै. फूलवाड़ीरौ वणाव वणि नै रहिआ छै ।

तथा उपरांत करि नै राजान सिलामति मुखमली जरवाफती, मखतूल, रेसमरी कलावतू जरकस लपेटिआ लूवा समेत गादी तकिया विराजमान कीजै छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति बरछियारौ चकारौ उत्तरिऔ छै सो किए भातिरी बरछी जिके पाच पाच, सात सात ताकडिआरा मणगाजा सेल उवा बरिआ मारा हायारा, सेलारै टेकिया सुरिआमें सेलारासू उत्तारि नैं उआ हीज वडा नैं पीपलारीआ माखासू नागलिआ छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति कजाणारौ चकारौ उत्तरै छै, स्त्रे किए भातिरी कजाणा थेट विलाती, सींगरी सिगणी, तूजी हलका, अठारै टाक चिलैरी घाअणहार, मुलताण उतपति, कुन्वाण रहति, वारै धारै परस दरिआवा माहे जेहाजा हेठी चली आवी, चिलैरी ताणी, हुंकार करतो, उडै पठाणरी वेटी उ्यू नूहीर करती, इण भातिरी कजाणारौ चकारौ उत्तरै छै सु उआहीज वडा नैं पीपलारीआ साखासू नागलीजै छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे ढाला अलीनध छूटै छैं सु किए भातिरी ढाला मुध गेंडौ घणारी मारी वधैं, सुहरतौलौ रग लागै तीर, तरवार, कटारी, बरछीरौ दावो नही, मूअररी दातरङ्गी लागै तौ परडकनै उत्तरै गोली लागै तौ उधल नैं पाछी पडै सोनहीरी फूला नरुसी फूला मुग्मलरी गापी घातिया, सावरा इधवासा, बुलगापी डाआ सहित ऊआस राजानारा हाथारी उआहीन वडा नैं पीपलारीआ साखामू नागलिआ ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे तरकसारा कुहटाऊ बीडिया छै सो किए भातिरा तरकस कदील, जिके मुग्मली ठाठी, प्रतिकाली सकलात, मैण कपडरी गोलीसू काडी, कलावूत नीसरी साठी, गिरमरी नीपनी, कायडे गजवलरा भल, कावैवर मीध पर पखारै दातरै वडारै घणै पचरग पाद माहे भिभकिआ थका घणै मुग्मल नैं घणै दातमा गरकाय कीआ थका, उआ राजाघारी कडिआरा उआहीज वडा पीपलारी साखामू नागलीजै छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति अतरा माहे तरवारियारा करमसार छूटै छै तरवारियारा माज खुलै छै सु किए भातरो तरवार थेट सिरौहीरी, सातरी, दाणदार, मिश्रान घातिया मिश्रानुने वाडे मेरिआ मिश्रानम् काडि नैं घासमे नाग्यी हुअै तो पाखीरै भाळै चिनावर ठूंक मारै छछोही बाल नागणी चिलकै जाणै कालीरी जीम हालै, तिए भातिरी आघेर, जेसलमेर, मागानेर, महवारी त्रीजणी हुयै तिए भातिरी घणै मुग्मल नैं घणी मोनै रूपे माहे गरकान फरी धनी, इण भातरी तरवार, घणै कण्डे गोनीअ मारमा लपटी धनी तहनाळ, मुहनाळ, पड़ी, कुरसी समेत नरुसी मंडि उआ राजानारै हाथरी उआ हीज वडा नैं पीपलारी माखासू नागलीजै छै ।

तठा उपराति करि नैं राजान सिलामति फटारी किए भातिरी कुनारघी, कुनारगामी,

जमदाद सोनहरी नकसी जड़ाव सांतरी, घणैँ मुवमल नैँ घणैँ कनीफेँ मांहे गरकाव कीधी थकी, उत्रां राजानारी कड़ियांरी इण भांतिरी कटारी वीड़ी वदवैँ समेत ए जदी पगाम्ं लपेट नैँ उत्रांहीज ढालांरी आंचांमां राखीजैँ छैँ ।

तठा उपरांति करि नैँ राजानं मिलामति अतरा मांहे वागांरा चिहुरवंध छूटैँ छैँ. सो क्रिए भांतिरा वागां श्री साफ, भैरव चौतार हजारी, गंगाजल खासा वामता इण भांति वागांरा चिहुरवंध छूटैँ छैँ. कड़ियां लोल लीजैँ छैँ, बीजणैँ वाउ ढोळीजैँ छैँ, घोड़ां वाउठा कीजैँ छैँ. अराकी टहलावीजैँ. चौरंगा सोगठांरी खाट खड़पड़ि नैँ रही छैँ वे पहरां धमहमि नैँ रहियो छैँ. राजेसरां, राइजावां, आलीजां, जुवानां, मलूकां, कृथरांरा साथनं कल्हारीरौ होकौ फिरैँ छैँ. हुकम हुआ छैँ कल्हारी. हो ठाकुरे कल्हारी. सो क्रिए भांतिरी कल्हारी तेलणरी वाड़ीरो कमल, इकत्रीसमी ताररौ तजारौ, कोपरारैँ दलिंगरीरैँ वदि हाथां हृटो, पांणीमां पड़ैँ तौ गलि नैँ जावैँ. घणैँ भीममैनी कत्रर वासीआ पांणीमृ केहरी कल्हारी खासां दोवड़ां छांणीजैँ छैँ. ऊजळा रूपौटा उलटीजैँ छैँ. ऊजळा क्वास पासेवान हांजर लीआं खड़ा छैँ ।

तठा उपरांति करि नैँ राजानं मिलामति इतरा मांहेरा इतनांरा साथनां अमल कराडीजैँ छैँ. काळौ कंदलीवाहीजैँ छैँ. भूरो मेवाती आरोड़ी अमल आगराई मिसरी अहि फोण अनैँ वासंग नागरैँ मुंहडैँरा भाग हुआ तिए भांतिरौ नेस मींघोड़ा भंज किया, आमिरी वद कीआं थकां, पांच पांच, दस दस सेर देवगिरियां थालिआंमां घातिआं थकां फिरीजैँ छैँ. जो क्रिणी ठाकुररी हांस तरम हुआ छैँ, तिएनू अमल आरोगाडीजैँ छैँ ।

तठा उपरांति करि नैँ राजानं मिलामती धंधलौतजारौ, वांधलौतजारौ, पांच पांच सेर, दस दस सेर कोरा कूढांमां घातीआं थकां सुंदरा प्रांचारा जुवान मचकावैँ छैँ. पवनरी मारी सिकड़ीगैँ नहीँ. आं लारैँ अगारि आवैँ. आंगठारैँ अगारि आयां निलाइरौ तिलक लैँ. इण भांतिरौ धंधलौतजारौ, वांधलौतजारौ सो क्रिएनूंजी पाकां पाकां वरीआंमां जोधारां करडदंता, अजराइलां, खीवरां डारणां दूलाढा कीआं लोह घरड़ा लोहाना लोली लेनां काटरैँ ऊगरैँ हे करतां पचासे बोलीए. आटे आटे वढेरणि खेतरेँ विपैँ पड़ि पड़ि ऊपड़िआ. जाहरा पांच पांच हजार वाम पाटा वेंधे खाधा तांह रजपूतानं अमल कराडीजैँ छैँ. अमलांरी नीमा दूणी दीजैँ छैँ. अमलांरौ तंडल रोपीजैँ छैँ. अमलांरा जमाव कीजैँ छैँ ।

तठा उपरांति करि नैँ राजानं मिलामति केसरिये वागे चंदा चंदा जुआंन माहिल वाडिआंरौ साथ ऊपड़िआं वटारा चुवता पटांरा खासीआं वांहारा बोलता कहारां राजानं राजावतरेँ वेपारैँरैँ वासतैँ वाकरा मगाडीजैँ छैँ. ओठी ऊंठे चाडीजैँ छैँ. सो क्रिए भांतिरा ऊंठ, क्रिए भातिरा हांण, क्रिए भांतिरा डांण, क्रिए भांतिरा पलांण नैँ क्रिए

भातिरा बलाण, जिने पचाली वहीरा, चालमी नहीरा, चाटली तलीरा, घाटमी नळीरा, जाढा गोडारा, छोटा पीढारा, घटवाजटरा, ससा सेरिआ बगलारा, चाकमै ईडररा, म्हावरै प्छरा, बलिमे लुअरा, नवहथी मोकरा, नाविमे कधरा, छत्रधारी माथैरा, कोरिमे कानरा, साइमे वानरा, तचिमा होठारा, कस्तूरिआ पटारा, भमण मथा सालीअै सिंह ज्यो सारस करता सोंघोडा सा, कूटा काडिआ, भूखै मयद ज्यो हुकार करता, मन् वहता, हाथी ज्यो जोहा खाता, भाद्रवैरी गाज ज्यो आवाज करता, साठीकरै भमण ज्यु चसलका करता, भागै गाहै ज्यो घटठाट करता, आगले गग नायता रोटहडीअैरा गोअैरा भूठै कूअैरा कलसिमा कपोलारा, कमाल घडे चडीआ, कडे पाथमा थेट आडेअले सारीया गिरवरा पहाडारा, मगरा वनमपती सीमरा, पाखडा प्रतफाली मक्लातमे उट्टू लपेटिआ थका, पीतलरा पागडा, कलोभार भोल घातिआ थका, घणी पीतल नै घणी दात माहे गरकाज हुआ थका, रेममी पटाटा, सागरा डफटा, तगे अग भीडिआ थका, इण भातिरा सो उठा उपर सो पलाणा मडिआ छै घडिआ ओजनरा जावणहार, धरतीरा करवत जाणै जलरा जेहाज दुघाजमाज छेडिआ छै ऊठीअे चडि वाग टाई छै ओठी जाए एवडि पहुँता छै वानरा पकडीजै छै सो फिण भातिरा वानरा जिके कडकनी साधरा, उडकनी नलीरा, भादरे सादरा, मानलण पेटरा, माहि वोर काचररा, धरडणहार, घणै कृभट नै वावलीरी टीसीआरा त्राडणहार, सिरिरीरा मालणहार, फिरणीअैरा वैमणहार, चालवसी घोडा, निसें बोकडा, पारडे रील हरीरा चारीओडा, मो उठा निसे घोडा मसमारी भातिमो लिडाइ नै घनिआ छै ओठीअ चडि नै वाग उपाडिया छै ओठिण आण राजानसूं मुजरा गुदराया छै राजरु आण हाजर हुआ छै, रायतालानू कडिअै छै ठाकरे राजरुआ नै ठरका करो तिने रायताला घणी केमर नै घणै कसनगर अन्तर माघे माह गरकाज हुआ थका आं सीरोहीआ राजरु बीमोडीनै छै नानरा फूलधारा मुहे निरौलोजै छै नाकरा उघेडीनै छै ताह राजरुआ उघेडिआरो कासूणक उलाण पानारो हाट रास्तेरा वानरुरी बरकी, पाजी अेरुरा गोटा, गुजराती कागलरा पाठ, इण भातिरा राजरु नीसरिया छै भीर नाडिआ हुमनाकानू सूळारा हुकम हुआ छै तिके सूला कीजै छै ।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति नाकरा नै सूअरारै सात्रा मूळा जोळा जोळा हुआ छै सो फिण भातिरा मूळा पेटिमारा खालिमार, अतर वेडिआरा उपर चेटरा, कालिजैरा, पेटानिनैरा, इण भातिरा सूअरा वाकरारा मूळा रजरा मारिया णणै सुरहै घीरा मारिआ, आडीआ, पोटलिआ उपरि भरराट करि नै रहिआ छै सातमै पाताल वामग नागरै माथै टपूकडा खाइ नै रहिआ छै खारी सौरभरी वास्तै तेरीम कोडि देवता सरासु हेरुम नै उतरै देवापुरारा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै ।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति राजान राजावतरे बेपारह वास्तै भागि

मंगाड़ीजै छै. तिका किए भांतिरी भांग मुधकाकापुरणि वासिंग नाग माथैरी नीपनी, सिघरी गुफा मांहे नीपनी, थोहररै त्रिडैरी, भाखररै खुडैरी, सूअैरी पांख, परडरी आंख, रोज मारि, मिघ मारि, भमर मारि, लटिआली, वापरी खाधी वेटैनां आवै, काकैरी खाधी भत्रीजैनां आवै, असवाररी खाधी प्यादौ छकै, इण भांतिरी भांग मंगाड़ीजै छै. मकराणैरै पखाणरै कूडे घातीआं, माल कांगणीरा गोटासूं वांटीजै छै. सांवरा प्राचारां जुवांन घोटै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. सो किए भांतिरी मेलवणी लंवग, डोडा, जायफल, जावत्री, नागकेसर, तज, तमाल पत्र, सींगी, मुहरा, धतूरो, भूटटी, एकखानं, इहमदावादी खानं, हाथा छटो रायागंणमें पडै तौ सात सात टुकड़ा होइ जावै इण भांतिरौ वत्रीसौ काढीजै छै. इण भांतिरी मेलवणी जोळी जोळी मंगाड़ीजै छै. कंसूभैरी वास्तै मिसरी कोरा माटा मंगळीजै छै. कंसूवौ खासा पटोळां छांणीजै छै. कसूवौ ऊजळां रूपोटां उळजै छै. कंसूवौ उचीआं विलगिणिआं वारीजै छै. कंसूवौ रातां ओछाड़ां ओछाड़ीजै छै. कंसूवै नै हुसनाक पवन हांकै छै. कसूवैरौ पांणिगो मंडिओ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति गोळी, चूरण, आसण, कवळ, कुटी, नागासिणी, विरंच, मुफर, तांवेसर, कामेसर, मदन कामेसर, जिता मारिआ ओखध फेरीजै छै. जांह ठाकुरारै हांस तरस हुअै छै ताहनू कपूर वासिओ पांणी ऊजळा रूपोटां भालिआं उजळा खवास पासेवानं हाजर लिआं उभा छै. इण भांतरा ओखद उआं राजानरा साथनू आरोगाड़ीजै छै. कितराइक तौ राजान कपूरतररा लोचन किआं गिड़भागै मेघ व्यो विराजमान हुइ नै रहिआ छै ।

तठा उपरांति करि नै राजान सिलामति आटा मैदारी फांटां आणीजै छै. सिवपुरीरा देवजीर चोखा, चांबळ, कपूर सारीखा ऊजळा वीणीजै छै. नागरचालरा नीपनां गोहूँ, वजर कठकालिआं मूछारा. त्रांवारी सिलाक हुअै तिण भांतिरा, वारां वारां वरसांरा डारुडारां कान वीधीजै. इण भांतिरा पांच पांच भण, दस दस मण गेहूं, चावळ आडिआं जाजमां घातिआं रोळीजै छै. काकरा काढीजै छै. धूंए अंवर धूधलिओ छै. तुरीराउते जीही जरै छै. जांगडिआंरी जोड़ी आडिआंर वांज भालिआं थकां हूकलिनै रही छै. वडा इंतारा सिरदारारां खंभाइची मांहे दूहा गार्डिजै छै. जस जांगड़ा गवाड़ीजै छै. दाडिआंरी जोड़ी गजराज पटाभर व्यो भोकड़ी खाइ नै रही छै, इभिरितीरा भोला दे नै रही छै. जाणै मातम सररी मुहागण हमामरै करोवै भापां खाइ नै रही नै च्यार टांक चावळ खाअै तो सरीर अहार - विकार थाए. गीत, संगीत, तालबंध, भ्रदंग, वीणा, सारंगी, तंबूरा साज लागि नै रहिआ छै. इण भांतिरी आखाडै रंभा पात्र निरत कारणी

सोलै सिएगार किआ थका कानरा भ्रमर वाजि नै रहिआ छै श्रीमडल राग कलावत घमड राग जमावि नै रहिआ छै छै राग नै छरीस रागणी आलापीज रहिआ छै ता राजाना मुहबा आगि पडित, मिश्रा, जोतसी, चारण, भाट वैठा छै छमा मडि नै रहिआ छै कवेरुर कविच, गीत, छद, दोहा, गाथा, वात कथो नै रहिआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति राजान राजावत घणा अमला किआ एका आगै वखाणिया तिण भातिरो दारु पिआ छकीअं उछ्मिअं साथसू लागीरो पोत किआ भीलणाना पेठा छै नरिआव माहें घड नावा गधी छै उणि होदरी हवा उग घडनावा ऊपरै सूरती तनाडू आरोगीजै छै गुमानरा कुरला कीजै छै घणी वामावलीरो वाह लागि नै रहिआ छै भीर वाट वाट नै पाणी छालीजै छै हौमारै होंकारौ हुड नै रहिआ छै पाणी माहे वामावलीरो होरो फटि नै रहिआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति भनरमि खेलि नै वारै पधारिआ छै कपडा पहरीजै छै वणाव कीजै छै हिलमो जेहाज पाथरीजै छै रिजडत गानी तकिया फेर निराजमान कीजै छै वेवडी, त्रेणडी, चौबडी पाटा जुडी छै सूआर, पड़िहार आवा डोआ, लावा कुडआ, भालिआ थका कछि नै रहीआ छै चरु रहइण घाति घाति घोंसीजै छै आडीआ बागरा घातिआ चरु रठठारिजै छै ताह चरवारा निहायासू पहाडे पडि सादानें रहिआ छै देवगरी थाळ सोनै रूपैरा, सिरदारारा मुहबा आगै मेलीजै छै घणा मालवा पुरी काठा घहूदा बटीजै छै घणा केसया मास रजवैरा भीना एका उधमीजै छै घणा जोजर रोटा, ऊजला देवजीर जादरा फूल हुये तिण भातिरा चावल परूसीजै छै मसकारै मुहडै घी नामीजै छै अतरा माहे सोहितै नै मासरा चरु ऊतरिया छै सोळा सोहिता धाघुसी पुलान चक्रतालो जलचर मास, थळचर मास, उडणा पखिआरा मास, भाति भातिरा जुग जुदा समार समार नै वणाया छै प्याला माहि परूसीजै छै 'हाजर कीजै छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दाहरी तूगा लागीमू ओछाडिआ घणै ठडै पाणीस छाटि छाटि नै वडारी साखासू नागली थकी जूलै छै पननरी हवासू टिप्पा खाइ नै रही छै कोरी गागर माहे वाति घाति ठारीजै छै बतका भरीजै छै ऊजला एवाम पासेवान करा बीडा भालिया हाजर रडवा ऊभा छै अतरा माहे दारु आय हाजर हुआ छै ।

तठा उपराति करि नै राजान सिलामति दाहरी पाणीगो मटिओ छै सो किए भातिरो दारु पलटैरो पलटै, पलटैरो औरक, औरकरो वैराक, वैराकरो सप्ली, सदलीरो वदली, फल्लरीरो वहर, वहररो जहर, जहररो कटाव, कटावरो नेस, नेसरो जेस, जेसरो माद, मोटरो कमोद, कमोदरो हल घाहि लागै तो नाहि जागै, मुहडैमें मेलिहया छाती लीह पडै चिगनी भाठीरो तेज पज आमप आरोगीजै छै घणा जडाव नै चिणीरा प्याला फिर नै रहिआ छै इण भातिरो दारु पाणिगो मडिओ छै उणि भातिरो मास, उणि भातिरो

सुहितौ, उणि भांतिरा भररतां सूळांरो निकुल कीजै छै. साथ आरोगे छै. गोठि वडै रस आई छै. अरोगि नै चळू कीजै छै. ऊपरा कपूर, पांन, वीडा, सोपारी, केसरि, ताड़ां, लौंग, डोडा, काथा, चूना, संजुगम, मुखवास, मुंहज्जण दीजै छै. सु कितरो एक साथ तौ गिड़ भागा मेघरी नाई भांख मारिअ्यां कवूतर सा लोचनां घूमि नै रहिआ छै. सु कितरा एक तौ राजांन उधक छक छकतां वकतां थड थडता घूमता पडता घोडा आया छै बोडा आइ हाजर हुआ छै ।

तठा उपरांति करिनै राजांन सिलामति अतरा मांहे वधाईदार ट्रोड़िआ छै. आगल महलांरा वणाव हुई नै रहिआ छै. सु कहै छै. प्रमांणी पाखांणरा महल सात खणां आमास चुणिआ थका, माळिआ, गोख, भरोखा, जाळी, वंगला, कचवडी, अममानसं लागि रही छै. औ जाळिआं चिगां दलि नै रही छै कोडी चूनां कलीरो छोह वंध आरीसौ भळकै तिण भांतिरौ लागै छै, आरीसैरा महल वणि नै रहिआ छै. धमलहरै कोरणी वणी छै. कछ पाचमी नै हींगल तवाकां ऊपर सोनैरी कलस ईडां भलकि नै रहिआ छै. सांभ समै रंग रंगरा वादल दीसै छै, तिण भांतिरा महल आधोफेरे लागि नै रहिआ छै. केसरी कुम कुमे महल छटावीजै छै. गुलावरा छिड़काव हुवै छै खस खान गुलाव छटावीजै छै. अगर उखेवीजै छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति जिके रायजादी राज कुंआर छै त्यांरी खावास्यां देहीरी आरासि करै छै. घणां अगर, अरगजा, संधारी पीठी ऊगट मंजणां कीजै छै. जळ गुलावसू चिहुर टपकिआ छै. किण भांतिरा. जांणै मखतूलसू मोतिआंरी लड़ तूटी अंगोत्रा धूपणां कीजै छै. खावास्यां फूल दे दे नै चोटी गूंथै छै. फूलमांनू पाटी घूटी घूटी पाई छै ।

तठा उपरांति करि नै राजांन सिलामति नख सिख सूधो सिणगार वखाणीजै छै. वासिगां सारीखी पहपवेण ऊपरि सीसफूल मोतिआंरो वणाव वणि नै रहिआ छै. पूनिमचन्द सो मुख सोळै कला संपूरण विराजिओ छै तिलक बीच विंदी भिख नै रही छै. कवांण ज्या वांकी भ्राहां भमर विलसी विराज नै रहिआ छै. श्रिव नैणां त्रिखा भलकां ज्यौ जळयालिआं टोए अणिआलोका जळ ठांसियौ छै सू आसी नासिका बीच वेसर वणी, उजळै पांणी नरमदा मोती प्रोया सू लटक नै रहिआ छै. विचै लाल मणी भलक नै रही छै. वसत कोकिला सारीखी मधुरी वाणी बोली. कनां जांणै पड़दै वीण वाजै छै. दाड़िम कुली सा दातां मांही सोनांरी मेखां चमक नै रही छै. लाल प्रवालीसा अधरा रंगि लागि नै रहिआ छै. पाकै अंब भोर चीटला ज्यौ हिडकी ऊपर चिबुक वणि नै रही छै. आरीसा सारीखा कपोलां जाणै सोनारा तवक विराजिआ छै. केसरिआ अलिकावलि काला नाग ज्यौ चिदुला ज्यौ चिलक नै रही छै. चंद्र थपेड़ा ज्यौ काने कुंडल भलि नै रही छै.

गावड जाणें सरादी सराद उतारी छै कमल नालसी वाहा लाल चूडी वणियाँ छै विचें सोवन चूडी विराज रही छै वाजूवध भावी मणतूलसू लटक रहिआ छै लाल कमलसा हसत कमल जावक मेंहदीरें रंग लागा थना चोला फली भी आगुली गोरें प्राचें प्राचीआ वणि रही छै छाप मूदडी नवप्रही जडाव वणियाँ छै सरसल कूभाय सारीलौ गजमोतीरो हार विराजियाँ छै जाणें मेरगिररा टूका बीच गगारी धारा धसी छै नारगी अणहार, सोपारी सा कठोर कुच घाटला तीरा काचू बीच विराजिआ छै अगियाँ उपरै फूलारा चौसर पहिरिआ लाधणिआ सिघरी कटी लक धडे चड रहिआँ छै पान मारीलौ पेट पातलौ अम्रित सी नाभी कुडली माहि पाणी पीता ढलकतौ दोसै छै जाणें काचरी सीसी माहें गुलाब ढलकतौ दीसै छै पेटरी त्रवली जाणें कामरा महलरी पाहुडी वणी छै कर ले मापीजै तिण भातिरै भमर लक उपरि कटि मेरना वणि नै रही छै मुराही गलारै घाटि मभासल पोंडी भीणै गिरीअै उपरि वाजणी पायालरा घूघरा रमभोळ भणकिआ जाणें वज्रहमरा वन्चा वमोर करि रहिआ छै पगरी राती पोंडी गालिमी कूनरारी जोभ सारिसी, लाल कमल चरण जावक महिदीरगसू विराज रहिआ छै पग अगुली राइवेनिरी कळी हीरा सा नल आरीमा ज्यो भगवत रहिआ छै उपरै अखोटपोल पावटा विद्धिआरौ वणाव वणि नै रहिआँ छै।

तठा उपरात नरि नै राजान सिलामत चदापनरी देहरी नरमाई गुलाब फूल, निल फूल मारीली हस गमणीरी गन गति लाड गति छै इण भात नल सिय सूधा सोळै सिणगार क्रिया नारै आभूगण विराजिया छ जाणें इन्द्र-लोकरी अपधरा, रूपरी रभा, आसमानरी ऊतर पड़ी चित्रामरी पूतळी, निधाता हाथसू समारी कामरी केळि, विरहरी बीज, सुपरी मिळान, सोनारी नाच हुअै तिण भातिरी सखेली, नल मास माहें ऊलाळी, आकासि जाअै, चावळरो चौथो ग्याअै, साट्यात पदमणी वाळि वाळि नै गाठ दीजै इण भातिरी तूजी, हलका ज्यो लचकती, रतनाळा लोचना, अणिआळा काजळ सारीजै छै जोहर काचू जडिजै छै भमर लक, भीण लक ऊपरा चालहरा घाघरा वामिजै छै वरणी चीर ओढिजै छै पाटवर नीलवर जरकसीरा वणाव कीजै छै आडिआ फणिआ मुपमली प्सासा निलाविआ थका जाळीरी साठै, मुरासाणी भळपै मातिअै उठ मौदागरै घोडै चालविअै पठाण अरडै आयै चीवडिअै मूठै, गाम-धणीरा सा लोचना क्रिया, वाळि वाळि मोती आठविआ थका, काळरा नेवर पहरिआ, केळिप्रभ चणरां छेडो, रतनारी रासि, अधारैरो आनीत, अरसरी अमरी, सरगरी मगप, विरहरी समूह, रूपरी निधान, थाका हसरी टोळी, निरायैरी होळी, चणै हाट नै चीरमा लपेटी थकी विरातमान होइ नै रही छै जाणें आसोजरी पूनमरौ चद्रमा सोळै कळा सपूरण उन्ति हुआँ छै इण भात ऊजळै पतिव्रतरी पाळणहार, ऊजळी सतिआरी टोळीसू राजहस राइजानी राचकुआरी भरौवै चही भारौ छै वधाईदार दौडिआ छै वधाईतरा आइ तनर दीधी छै।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत घोड़ा दौड़ीजै छै. राजान राजावत मारु घरै पधारिआ छै. चौकि कलल फुटि नै रही छै. मायारा उधराव बहोड़ावीजै छै. कवि राजानां विदा कीजै छै. मायारा स्वाम पासेयान हाजर तेड़ीजै छै. गौर्वे दीवा कीजै छै. महले दीविआं अगदनिआंरी चहकि लागि नै रही छै. द्यथी पगा ढालिआ पाथरीजै छै ।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामत राजान राजावत महले पधारिआ छै. महले आइ विराजमान हुआ छै. आगै म्रिगानैणी, अम्रित वैणी कामणी सिणगार सभिया छै. इणियाळा काजळ ठांसिया छै. वणाव क्रिया छै. राजानरा मन रावै छै ।

दूहा

गुण कामणि छंदो वयण, नमि नमि मंधं नेह ।

पीरौ कहियौ धण करै, धणरौ कामणि श्रेह ॥

अमलारा रंग-तरंग माणीजै छै. तेजपुंज आस्यपरा ध्याला आरोगीजै छै ।

तठा उपरांत करि नै राजान सिलामति हमै राजान कामरा भूविद्या, लांपणिया सीह ज्यौ आपाळि नै रहिया छै. जाणै मदन-मयद पद्दाड़ीजै छै. काड़ी जिमपुरी करि नै रहिया छै. विरही वाग उपड़ी छै. चौरामी आसणरा भेद कीजै छै. अस्टाग मिलण चुंवण १, अधरपान २, नखदान ३, कुच-मर्दन ४, पुड़पुड़ी ५, चुंहटी ६, चसका ६, मसका, हा जी, ना जी इण भांति कामरी कुहक पड़ि नै रही छै ।

तठा उपरांत करि राजान सिलामत रग-महलमे प्रेम-भङ्ग लागि नै रही छै. सुरतांत-समय हुवौ छै. महलारी हवा माणीजै. काचुआंरी कस छूटी. मोतियांरी माळ तूटी. जाणै सुखरी लंका लूटी. इण भांत सुख-सेजे पौढिया. राति विहाणी. प्रभात हुवौ छै. रातोका काम-उजागर नैण घुळि नै रहिया छै. कपोले काम सुहागरी छाप लागी छै. खुलि नै रही छै. इण भांत सुख-विलास करतां छै रित वारै मास माणीजै छै ।

दूहा

खट रित वारै मास फिरि ज्यौ ज्यौ आवत जाइ ।

ल्यौ ल्यौ वात-वणावरा, दान तरंग सुहाइ ॥

....., राज लोक सिणगार ।

च्यारे प्रस्तावे चतुर, वणियौ भलौ विचार ॥

सुर-नर-नाग निघट्टियां, काळै केहरियां ।

जळ पुरियां पाखाण ज्यौ, गल्लां उबरियां ॥

वेटै वाप विसारिया, भाई वीसारै ।

सूरां पूरां गल्हड़ी, मागिण चीतारै ॥



